हमारा सहारनपुर

राजीव उपाध्याय 'यायावर'

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

हमारा सहारनपुर

राजीव उपाध्याय 'यायावर'

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
नई दिल्ली

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली-110075
द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ 200/-

प्रथम संस्करण : 2018

ISBN : 978-81-937829-1-0

© सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
आवरण : शाकुम्भरी देवी मंदिर, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

इस प्रकाशन में प्रस्तुत मत या विचार मात्र लेखक के हैं और वे सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली के विचार या मत को उद्घाटित करें, यह आवश्यक नहीं।

नगरों पर आधारित पुस्तक-शृंखला के बारे में

भारत राष्ट्रीयता के साथ स्थानीय संस्कृतियों से संपन्न देश है। विभिन्न क्षेत्रों, नगरों की विशेषताएं इस देश को महत्त्वपूर्ण बनाती हैं। ये मात्र भौगोलिकता तक सीमित नहीं। इनमें रुचियों के विभिन्न पहलू देखे जा सकते हैं, जैसे वहां की वास्तुकला, धर्म, लोकगीत, वेशभूषा, भाषा, प्रकृति, पर्यावरण आदि। कई बार ये आपस में जुड़ते हैं तो कई बार सीमाओं का अतिक्रमण भी करते हैं। स्थानीयता के बावजूद उनमें ऐसे तत्त्व होते हैं जो भारतीयता के सहज आधार बनते हैं। यदि गांव सांस्कृतिक एकरूपता के प्रतीक हैं तो शहर सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक। ये एक तरह से हमारी ऐतिहासिक/सांस्कृतिक धरोहर हैं।

संस्कृति मंत्रालय व सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र की संयुक्त अवधारणात्मक फलश्रुति हैं – इस शृंखला के तहत विभिन्न लघु नगरों/नगरों पर प्रकाशित होने वाली पुस्तकें। हमने पाया कि इन लघु नगरों/कस्बों/नगरों की श्रेष्ठ सांस्कृतिक विरासत को पुस्तक-वैचारिकी के रूप में सबके सामने तथ्यपरक ढंग से प्रस्तुत किया जाए ताकि वहां का सांस्कृतिक/शैक्षिक व अन्य विविध वैभव उजागार हो सके। इस माध्यम से न केवल उस लघु नगर/नगर के लोग अपनी सांस्कृतिक आभा से परिचित हो सकेंगे वरन् वे लोग भी जो ठीक से उन शहरों की संस्कृतियों से रूबरू नहीं हो पाए हैं उनको जान सकेंगे।

आज के समय में तीव्र सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन शहरी जीवन की विशेषता बनते गए हैं तथा पारंपरिक व शाश्वत महत्त्व पृष्ठभूमि में चले गए हैं। हमारी कोशिश है कि इन दोनों धाराओं को इन पुस्तकों में समाहित करते हुए हम परिपूर्णता का प्रयत्न करें। शहरी जीवन के लाभ ने मानदण्डों, विचार-सरणियों और व्यवहार पैटर्नों के संबंध में परिवर्तन किए हैं किंतु पारंपरिक प्रसंगों, लोकगीतों, स्थानीय जीवन की प्रत्याशाओं के बगैर इनको नए रूप में पहचाना नहीं जा सकता। कई लघु नगर/नगर/वृहत् ग्राम भारत की आज़ादी के आंदोलन की पृष्ठभूमि में रहे हैं तथा कई कलाओं, संस्कृतियों को विन्यस्त करने की दिशा में अग्रणी। कई ने स्थानीयता के अलावा भारतीय जीवन के संस्कार निर्मित किए हैं तो कइयों ने हमारी आज की दृष्टियाँ निर्मित की हैं।

इन विशिष्ट लघु नगरों/नगरों पर आधारित पुस्तक-शृंखला में 'हमारा सहारनपुर' पुस्तक आपको सौंपते हुए मुझे हर्ष है। मुझे आशा व विश्वास है कि यह पुस्तक सिर्फ़ शहर की गाथा न होकर संस्कृति, जिजीविषा, नवाचार, परंपरा, जिज्ञासा, समझ व नए समय को दर्शाती जीवन-दृष्टि की वाहक के रूप में पाठकों के बीच आदर का विषय बनेगी।

गिरीश चंद्र जोशी
निदेशक, सीसीआरटी

vuØe

1.	नमन	8
2.	आत्मकथ्य : यात्रा जारी है	11
3.	सहारनपुर : एक झलक	15
4.	पहाड़, नदियां और मैदान	18
5.	अतीत के गवाक्षों से	22
6.	महाभारतकाल में सहारनपुर का महत्त्व	32
7.	गौरवपूर्ण संस्कृति का संवाहक सहारनपुर	36
8.	लोकभाषा कौरवी की चहचहाहट	44
9.	लोकगीतों में गुनगुनाती सांस्कृतिक परंपराएँ	48
10.	गांवों के नाम ही उनकी पहचान	54
11.	अपना परिचय स्वयं देते मुहल्ले	57
12.	शाकुम्भरी : आस्था का द्वार	61
13.	ऐतिहासिक जलाशय : अपनी–अपनी कहानी	64
14.	गली–गली यायावरी	72
15.	भित्तिचित्र : जहां दीवारें बोलती हैं	87
16.	माटी के रंग–सांझी के संग	93
17.	बाबा लालदास : गंगा माई जिनके चरण पखारन आई	98
18.	प्रणम्य व्यक्तित्व : राधा वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हित हरिवंश	102
19.	अनुकरणीय : नशामुक्त मिरगपुर गांव	107
20.	प्यारे जी महाराज : काली कंठी के जादूगर	109
21.	दीक्षा से शिक्षा तक	112
22.	संघर्ष जो अपने अस्तित्व के लिए किया	117
23.	तो नहीं होती भगत सिंह को फांसी	126
24.	स्वांग से रंगमंच की ओर	129
25.	रूपहले परदे तक का सफर	135

26. ऐतिहासिक शोध एवं अध्ययन का गवाह उद्यान 138
27. इस्लामिक शिक्षा का विख्यात केंद्र दारूल उलूम 143
28. सहारनपुर का साहित्यिक परिदृश्य 145
29. शायराना मिज़ाज का शहर 157
30. सहारनपुर में पत्रकारिता की यात्रा 160
31. संस्थाएं जो कुछ देना चाहती हैं 163
32. यहां बसते हैं काष्ठकला के हुनरमंद 167
33. आज भी जिंदा हैं छबीली के किस्से 170
34. सहारनपुर में खानपान 172
35. कुछ लिखा है, कुछ बाकी है... 174

हमारा सहारनपुर

सहारनपुर की कला, साहित्य, संस्कृति, समाज, संस्कार और इतिहास के तमाम अनछुए पहलुओं और प्रसंगों को गुमनामी के अंधेरे से निकाल कर उन्हें, **^relk ek T;kfrxle;*** की ओर ले जाने वाले विनम्र प्रयास का नाम है–

gekjk lgkjui|j

शहरों, कस्बों, गलियों और कूचों के भावनात्मक नामकरण एवं उनमें गूंजने वाले गीतों, लोकगीतों, कहावतों, मुहावरों, भाषा एवं बोली की स्वाभाविक मधुरता की सरस अभिव्यक्ति है–

gekjk lgkjui|j

सामाजिक सरोकारों, शैक्षिक गतिविधियों, रंगमंचीय संवेदनाओं और संभावनाओं का चश्मदीद गवाह है–

gekjk lgkjui|j

अपनी–अपनी आस्थाओं, मान्यताओं और परंपराओं के साथ आरती, अजान, गुरुवाणी, प्रार्थना और नमोकार मंत्र की दोस्ती का प्रतीक है–

gekjk lgkjui|j

हिंदी और उर्दू साहित्य के तमाम वरिष्ठ एवं कनिष्ठ रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय–पत्र है–

gekjk lgkjui|j

साधन और साध्य, संयम और साहस, कामना और कर्म के बीच हुए महाभारत में **^de.;okfèkdkjLr ek Qy"k dnkpu*** की भावना का अनुसरण करने वाले युवा कवि, प्रबुद्ध लेखक एवं शोधार्थी पत्रकार श्री राजीव उपाध्याय 'यायावर' के संकल्पित शिखर पर लहराती हुई पताका है, उनकी अनुपम शोध कृति–

gekjk lgkjui|j

&lj'k ^liu*
कवि एवं लेखक
पवन विहार, सहारनपुर

नमन

पूज्य बाबूजी आचार्य अतर सिंह शास्त्री जी को

जिनके ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और

विद्वता से भरे

व्यक्तित्व ने

सदैव

सत्याचरण के पथ पर

चलने की

गहरी सीख दी।

एवं

स्नेहमयी मां श्रीमती कमला शास्त्री को

जिनके सरल, सहज और

सामाजिक चरित्र ने

जीवन की

विडंबनाओं के बीच

जीने का

पाठ पढ़ाया।

vkHkkj

–शोभित विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कुंवर शेखर विजेंद्र का, जिन्होंने न केवल मुझे प्रोत्साहित किया बल्कि जिनके सहयोग के चलते मुझे अपने लंबे शोध कार्य को सार्थक दिशा भी दिखाई देने लगी।

–सहारनपुर जनपद के पूर्व जिलाधिकारी आलोक कुमार का, जो सहारनपुर में पांवधोई नदी पर सार्थक स्वच्छता अभियान चलाकर प्रेरणा के स्रोत बने। उन्होंने ही सर्वप्रथम मुझे पुस्तक लेखन के लिए प्रेरित किया। अपनी धरोहर पुस्तक उन्हीं की प्रेरणा का परिणाम है।

–सहारनपुर के पूर्व नगरायुक्त डॉ. नीरज शुक्ला का, जिनके सहयोग, स्नेह और प्रेरणा से सहारनपुर दर्शन पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो सका।

–स्वर्गीय प्रोफेसर योगेश छिब्बर का, जिनका अमूल्य आशीर्वाद मुझे मेरे लेखन–पत्रकारिता जीवन के शुरुआती दौर में मिला। मेरा सौभाग्य जो उनका साथ मिला, मेरा दुर्भाग्य कि उनका साथ बहुत कम समय के लिए मिल सका।

–प्रेरक कवि सुरेश सपन का, जिनके साथ बैठकर पुस्तक का मूल प्रतिपाद्य तैयार कर चिंतन, मनन और संशोधन किया गया। उनका सच्चा मार्गदर्शन ही पुस्तक की पूर्णता के लिए सार्थक वरदान बन सका।

–वरिष्ठ साहित्यकार स्वर्गीय कृष्ण शलभ का, जिन्होंने विशेष तौर पर हिंदी साहित्य प्रसंग सहित अन्य विषयों में अपने विनम्र सहयोग से कृतार्थ किया।

–कवि डॉ. विजेंद्रपाल शर्मा का, जिनका पथ–प्रदर्शन और सार्थक टिप्पणियां पुस्तक सुधार में महत्त्वपूर्ण रही।

–जेवी जैन कॉलेज के पूर्व कला विभागाध्यक्ष डॉ. डी.सी. अग्रवाल एवं डॉ. रामशब्द सिंह का, जिनका सूक्ष्म विश्लेषण मेरे काम आया। उनका स्नेहयुक्त प्रोत्साहन मुझे लगातार मिलता रहा।

–बड़े भाई संजीव उपाध्याय का, जिनकी मंगलकामनाओं से सांस्कृतिक पथ पर चलने का साहस कर सका।

–सीसीआरटी के निदेशक श्री गिरीश चंद्र जोशी, जिन्होंने मेरी लगन और मेरे जनपद के प्रति प्रेम को देखकर सार्थक दिशा दिखाई।

–हितैषी मित्र आदित्य मौर्य का, जिनका सहयोगी व्यक्तित्व हमेशा प्रेरणा बना रहा।

vfHkunu

अभिनंदन उन अनेक पथ–प्रदर्शकों का, जिन्होंने मुझे हमेशा आशा की किरण दिखाई। जिनके सहयोग के पट हमेशा मेरे लिए खुले रहे। जो हमेशा किसी न किसी दृष्टि से मेरे सहभागी बने रहे। मैं प्रख्यात योगाचार्य पद्मश्री भारत भूषण, शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह के वीसी डॉ. डी.वी. राय, नाट्यकर्मी भाई संदीप शर्मा, प्रमुख पर्यावरणविद् डॉ एस.के. उपाध्याय, पर्यावरणविद् डॉ. पी.के. शर्मा, ज्योतिष शास्त्री भाई पंडित रोहित वशिष्ठ, पत्रकार डॉ. वीरेंद्र आजम, पत्रकार देवेंद्र कुमार, पत्रकार जगदीप कुमार,

पत्रकार पवन शर्मा, पत्रकार राजीव भारद्वाज, शुभचिंतक मित्र अजय सिंघल, योग एवं नृत्य साधिका आचार्या प्रतिष्ठा, रंगकर्मी जावेद खान सरोहा, रंगकर्मी सरदार अनवर, रंगकर्मी विजेश जोशी, साहित्यकार विनोद भृंग, मित्र मनोज उपाध्याय, मित्र दिनेश तेजान, लेखक डॉ. सुरेश चंद्र त्यागी, प्रिय भांजी राखी उपाध्याय, प्रिय भांजे अनुज उपाध्याय, अभिषेक उपाध्याय के प्रति उनके सहयोग और स्नेह के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

vkj

आभार नीले रंग में रंगी फेसबुक का, जिसने एक दूसरी दुनिया के द्वार खोले। जहां अपने जैसे अनेक सहयोगी मित्र मिले। देश के अनेक दूरस्थ इतिहास प्रेमी मित्रों से मिलने का मंच यहीं मिला। देश से बाहर कंबोडिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अमेरिका के साथ–साथ दूसरे कई देशों के खोजी मित्रों से जुड़ने का अवसर भी फेसबुक ने ही प्रदान किया। यह संपर्क निश्चित रूप से भविष्य में सांस्कृतिक आंदोलन को व्यापकता प्रदान करेंगे। अपनी सांस्कृतिक यात्रा, कविताओं और फोटोग्राफी के जुनून को साझा करने का इससे उत्तम मंच आज तक नहीं मिला था। यहां से ही यात्रा जारी रखने का बल मिला।

यात्रा जारी है

हम वही पढ़ पाते हैं जो हमें पढ़ाया जाता है। हम वही सीख पाते हैं जो हमें सिखाया जाता है और हम वही समझ पाते हैं जो हमें समझाया जाता है। संस्कृति, इतिहास और भूगोल भी इससे अलग नहीं है। इन विषयों का जितना ज्ञान हमें विद्यालय और परिवार द्वारा कराया जाता है हम उसे बस उतना ही समझ पाते हैं। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे विद्यालय हमें दुनिया भर का ज्ञान करा देते हैं। हमारे भीतर ठूंस–ठूंस कर बोस्टन टी पार्टी, यूरोप की क्रांति, रूस का विभाजन, दुनिया का सबसे लंबा रेलमार्ग और दूसरे अनेक तथ्य भर दिए जाते हैं। लेकिन हमें कभी भी हमारे जनपद और क्षेत्र की संस्कृति, इतिहास और भूगोल से परिचित नहीं कराया जाता।

tMk dh vkj

जनपदीय पहचान से दूर रखना 'माइंड वॉश' करने जैसा ही है, पाठ्यक्रम में यह जनपदीय अपरिचय ही तो है जो हमें हमारी सांस्कृतिक पहचान से दूर रख रहा है। इसका दुष्परिणाम यह है कि गांव से आकर शहर में बसने वाला व्यक्ति अपने ही गांव में जाना नहीं चाहता। यह पीढ़ी अपने बच्चों को शायद

ही कभी गांव के दर्शन कराती हो। ऐसे ही छोटे शहरों से बड़े शहरों में बसने वाले लोगों के साथ है। अपना मूल जनपद छोड़ बड़े शहरों में बसने वाले अधिकांश लोग अपने जनपद की ओर मुड़ कर भी देखना नहीं चाहते।

इसका कारण है कि हमें सांस्कृतिक विविधता का ज्ञान कराते हुए कभी नहीं पढ़ाया जाता कि जनपदीय दृष्टि से हमारी लोककला, लोक खानपान, लोक वेषभूषा, लोकभाषा क्या है ? हमें नहीं पढ़ाया जाता कि हम जिस जनपद में रहते हैं उसका इतिहास किस दृष्टि से गौरवपूर्ण है ? हमें नहीं सिखाया जाता कि हमारे जनपद का भूगोल कैसा है ? कैसी मिट्टी है ? कौन–कौन सी उपज होती हैं ? पर्वत–नदियां–नहरें कहां–कहां हैं ? और उनकी विशेषताएं क्या हैं ? हमारी पहचान क्या है ? हम कौन हैं ? कहां से आए हैं ? हमारे पूर्वज कौन थे ? हमें कुछ नहीं पता। पूरी की पूरी शिक्षा और पूरे पाठ्यक्रम का केवल एक ही उद्देश्य है कि नौकरी किस विषय को पढ़कर मिलेगी।

नौकरी मिलने पर भी देखिए, कितनी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि हम भूगोल के प्रवक्ता बन जाते हैं लेकिन अपने ही जनपद और निकटवर्ती क्षेत्र के भूगोल से अपरिचित रहते हैं। इतिहास में पी.एच.डी. कर लेते हैं लेकिन अपने क्षेत्र के इतिहास के विषय में जानकारी नहीं होती। हम जीवाश्म विज्ञानी बन जाते हैं लेकिन हमारे क्षेत्र में नदियों के किनारे या पहाड़ों में कौन–कौन से जीवाश्म मिलते हैं, हम नहीं जानते और न ही कभी जानने का प्रयास ही करते हैं। यह केवल एक विषय के साथ नहीं है, सभी विषयों के साथ ऐसा ही है कि हमें दुनिया भर का ज्ञान है और हम खुद से अनभिज्ञ हैं। है ना हास्यास्पद ! दुनिया भर का ज्ञान अर्जित कर हम अपनी जड़ें भूल गए हैं। हम जड़ों के सामर्थ्य को भूल गए हैं। हमें लौटना होगा जड़ों की ओर, जड़ों के उन रेशों की ओर जो धरा का सीना चीरकर मिट्टी से संजीवनी निकाल लाते हैं। हमें गर्व करना होगा अपनी लोक सांस्कृतिक परंपराओं पर, हमें गर्व करना होगा अपने इतिहास पर और हमें गर्व करना होगा धरोहरों पर। तलाश करनी होगी अपनी जड़ों की।

vkRexkjo dk Hkko

आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक जनपद का इतिहास और भूगोल वहां के बच्चों को पढ़ाया जाए। जनपदीय इतिहास और भूगोल जैसे विषयों को कक्षा छह से कक्षा आठ तक के बच्चों के बीच शुरू किया जा सकता है। जब जनपद दर जनपद यह कार्य होगा तो इसके व्यापक परिणाम सामने निकल कर आएंगे। न केवल बच्चों के बीच अपने जनपद के इतिहास, धरोहर और संस्कृति को लेकर आत्मगौरव का भाव जाग्रत होगा बल्कि भविष्य में लोक सांस्कृतिक परम्पराओं के सरंक्षण का कार्य करने में बड़ा सहयोग मिलेगा। यदि अस्तित्व खोती जनपदीय

और क्षेत्रीय संस्कृति को बचाना है तो प्रत्येक गांव में ग्राम–गौरव दिवस की शुरुआत करनी होगी। ग्राम–गौरव दिवस का चयन गांववासी स्वयं करें। यह दिवस गांव विशेष में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाए। इससे न केवल गांववासियों में अपने गांव के विकास के प्रति भाव जाग्रत होगा बल्कि युवा भी अपने गांव की उन्नति में सक्रिय योगदान के लिए सामने आ सकेंगे। वहां की सांस्कृतिक पहचान भी प्रकाश में आ सकेगी। जनपद स्तर पर जनपद गौरव दिवस भी शुरू किया जाना चाहिए। इस दिवस पर जनपद भर के स्कूलों में जनपद के इतिहास, धरोहरों और अन्य विषयों की चर्चा और अन्य कार्यक्रमों को आयोजन किया जा सकता है। अपने जनपद के निवासियों के बीच जनपद के इतिहास, संस्कृति, पर्यटन को लेकर जागृति पैदा करनी है और पैदा करना है आत्मगौरव का भाव। जिस दिन इस विचार को प्रमुखता से ग्रहण कर लिया जाएगा उसी दिन से एक नया पथ तैयार होगा। इसका परिणाम यह होगा कि सप्रयास विस्मृत कर दिए गए सभी जनपद अपने इतिहास, संस्कृति पर गर्व करने का साहस रख सकेंगे।

;gk clrk g lgkjuij

सहारनपुर की लोक संस्कृति की बात करें तो यह संस्कृति उस रागिनी में है, जो आज यहां अंतिम दौर में है। हमारी संस्कृति विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत– बन्ने और लाड्डो में है, सांग में है। खाट–सराना–पैतों में है। गंगा–यमुना के बीच हमारी संस्कृति चौपाल, पीपल, बरगद और पिलखन में है। वह टटोलनी होगी कसोरे, चुघड़े, माठ और हांडी के बीच। उसे तलाशना होगा बटोडे, गोस्से, रेवड़ और करसी के बीच। वह मिलेगी शीतला माता, पितर, खेड़ा, पीर, सैय्यद, सांझी माई, गोगा म्हाड़ी, महामाई के आसपास। वह मिलेगी धरती पर बैठकर पत्तल पर घी–बुरे और मंढ़े के दाल–चावलों में। वह तलाशनी होगी लोक कहावतों में। वह छिपी है गिल्ली–डंडे और पील–पलव्वा में। वह मिलेगी उन कच्चे घरों में जहां गोबर लीपना और चीरण देना आज भी एक कला है। वह छिपी मिलेगी मंदिरों–हवेलियों पर हजारों भित्तिचित्रों के रूप में। वह होटलों के चमचमाते सभागारों में नहीं गांव की अनगढ़ गलियों में मिलेगी। सारंगी–ढोलक के स्वर में मिलेगी और मिलेगी टिक्कड़, बगड़, बोब्बो, कुआड़, टूम, कांधा, झुज्झु जैसे शब्दों में। वो बेचारी 'दिव्यांग' तुम तक नहीं पहुंच सकती उसे तलाशना होगा, सप्रयास।

iLrd l

हमारा सहारनपुर पुस्तक में जनपद सहारनपुर की गौरवपूर्ण सांस्कृतिक–ऐतिहासिक पहचान से संक्षिप्त परिचय कराने का प्रयास किया है। पुस्तक

में जनपद का संक्षिप्त इतिहास, भूगोल, लोकगीत, लोककला, लोकभाषा, साहित्यिक अवदान, स्वतंत्रता आंदोलन, ऐतिहासिक जलाशय, सांस्कृतिक पर्यटन, महाभारतकाल, भित्तिचित्र, रंगमंचीय परम्परा आदि अनेक विषयों को समाहित किया गया है। हर सम्भव प्रयास, संदर्भ ग्रंथों और व्यक्तिगत खोजों से जितना भी मिल सका उसे पुस्तक में समेटने का प्रयास किया। जो दिख सका वह पुस्तक में है और जो नहीं दिख सका उसे देखने के लिए भविष्य में तलाश जारी रहेगी। मैं हर सुधी पाठक से यही निवेदन करूंगा कि पुस्तक को एक सीढ़ी के रूप में देखने का प्रयास करें। जिस प्रकार यह प्रयास भूतकाल में किए गए अनेक कार्यों का अगला कदम है ठीक उसी प्रकार भविष्य में किए जाने वाले दूसरे प्रयास इसमें कुछ और बेहतर जोड़कर आगे का मार्ग दिखाएंगे।

pyr&pyr] cpr&cpr

सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान अनेक खट्टे–मीठे अनुभव का सामना किया। जहां जनपदवासियों का भरपूर सहयोग मिला वहीं कई बार कठिन परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ा। बाइक और कैमरे के साथ सुनसान स्थलों पर जाना कई बार खतरे से भरा रहा। एक बार बाढ़ से बचा तो एक बार यमुना नदी के बीच बाईक के साथ फंसने से बाल–बाल बचा। तीन बार जंगली कुत्तों से बच कर निकला तो तीन ही बार मधुमक्खी और जहरीले कीटों के हमले से। वैसे संदिग्ध लोगों को भांपने का गुण भी कई बार काम आया, एक बार बाईक पर बैठ रास्ता दिखाने वाला बंधु ही गलत मार्ग पर ले निकला लेकिन कोई दुर्घटना घटने से पहले ही उससे बचा। एक दिन फोटोग्राफी कर रहा था तो गुस्सैल सांड़ ही पीछे भाग लिया। बाइक छोड़कर ही भागना पड़ा। पहाड़, जंगल और खेत तो न जाने कितनी बार पैदल पार किए। कीचड़, काँटे और धूल तो जैसे साथी बनकर साथ ही रहे। लेकिन इसके बाद भी साहस कभी कम ना हुआ। मिट्टी के बर्तनों को साफ करते समय नाखूनों के बीच भरी मिट्टी ने हमेशा साहस बढ़ाया। हर बार नई ऊर्जा के साथ यात्रा शुरू की और प्रतिदिन कुछ नया लेकर लौटा और कुछ न कुछ खोजने की ललक हर बार बढ़ती ही गई। अभी यात्रा शेष है इसलिए यात्रा जारी है...

& jktho mikè;k; ^;k;koj*
leUo;d] lgkjuiqj fojklr vuqlèkku dsUæ]
'kkfHkr fo'ofo|ky;] xxkg

सहारनपुर : एक झलक

Hkkxkfyd fooj.k& जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल कुल 3689 वर्ग किलोमीटर है। गंगा–यमुना दोआब व शिवालिक की तलहटी में स्थित जनपद सहारनपुर का अधिकांश उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र शिवालिक की पहाड़ियों से घिरा है। पश्चिम में यमुना नदी इसकी सीमा बनाती है जो इसे हरियाणा के यमुनानगर व करनाल जिले से पृथक करती है।

Tku l[;k& 34,64,228। पुरुष– 18,35,740। महिला–16,28,488

fuokpu {k=& लोक सभा क्षेत्र–2, विधान सभा क्षेत्र–7

rglhy& कुल पांच तहसीलें– सहारनपुर, बेहट, देवबंद, नकुड़ व रामपुर मनिहारान।

fodkl [k.M& कुल 11 विकास खण्ड हैं। बलियाखेड़ी, सरसावा, पुंवारका, सढ़ौली कदीम, मुजफ्फराबाद, नागल, देवबंद, रामपुर मनिहारान, नानौता, नकुड़, गंगोह।

uxj fuxe] uxj ikfydk] uxj ipk;r& सहारनपुर नगर निगम है। इसके अलावा 5 नगर पालिकाएं और 8 नगर पंचायत हैं।

vkckn xke& जनपद में 1264 आबाद ग्राम हैं। 887 ग्राम पंचायत और 113 न्याय पंचायत हैं।

e[; Qly& गन्ना, धान, गेहूं, जौ, बाजरा, उर्द, मूंग, चना, आलू, मूंगफली और सरसों यहां की मुख्य फसलें हैं।

Ik'k fpfdRlky;& जनपद में 33 पशु चिकित्सालय हैं। 9 पशु विकास केंद्र और 33 कृत्रिम गर्भाधान केंद्र हैं।

vk|kfxd bdkb& जनपद में कुल 7 शुगर मिल, 1 सिगरेट फैक्ट्री, 1 पेपर मिल, 4 डिस्टिलरी, 2 डेरी उद्योग, 6 प्रिसिपेटिड कैल्शियम कारबोनेट और 2 स्टील उत्पादन इकाई हैं। साथ ही साथ 814 लघु औद्योगिक इकाई भी हैं।

jk"Vh;Ñr cd 'kk[kk,& जनपद में 228 राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाओं के साथ–साथ 63 गैर राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाएं हैं।

जनपद में 208 डाकघर, 14 रेलवे स्टेशन और 321 बस स्टॉप हैं।

fo|ky;& जनपद में 2 विश्वविद्यालय, 18 महाविद्यालय हैं, जिनमें से 6 में स्नातकोत्तर तक की शिक्षा दी जाती है। एक सरकारी मेडिकल कॉलेज स्थापित किया गया है। 297 माध्यमिक विद्यालय, 2 पॉलिटेक्निक, 5 आईटीआई, 576 उच्च प्राथमिक विद्यालय और 1355 प्राथमिक विद्यालय हैं।

fpfdRlky;& जनपद में 57 राजकीय चिकित्सालय, 2 क्षय रोग चिकित्सालय, 2 कुष्ठ चिकित्सालय, 10 संक्रमण रोगों के लिए चिकित्सालय, 6 स्थानीय

निकाय चिकित्सालय, 4 आर्थिक सहायता प्राप्त चिकित्सालय और 43 शिशु केंद्र या उपकेंद्र स्थापित किए गए हैं।

Fkkuk& जनपद में एक महिला थाना सहित कुल 22 थाने हैं।

lLr xYy dh nqdku& 887 ग्रामीण और 289 नगरीय सस्ते गल्ले की दुकानें हैं।

flpkbZ& नहरों और बड़े नालों की जनपद में कुल लंबाई 780 किमी है। जनपद में 525 राजकीय नलकूप और 85490 व्यक्तिगत नलकूप पंप सैट हैं जो सिंचाई के काम आते हैं।

पहाड़, नदियां और मैदान

lgkjuiqj tuin lhek] foLrkj vkj egÙo

सहारनपुर जनपद भुजा रूपी गंगा–यमुना नदियों के बीच स्थित है। गंगा सहारनपुर के पूर्व से और यमुना सहारनपुर की पश्चिमी सीमा से होकर बहने वाली नदी है। जनपद उत्तर तथा पूर्व में शिवालिक की हरी–भरी पहाड़ियों से घिरा है जो कि जनपद को देहरादून जिले से अलग करती है। सहारनपुर जनपद के अंतर्गत भी पर्वतीय भाग आता है। दक्षिण में जिला मुजफ्फरनगर, पूर्व दिशा में जिला हरिद्वार और पश्चिम से जिला करनाल और जिला यमुनानगर इसकी सीमा बनाते हैं। इसकी लंबाई पूर्व से पश्चिम की ओर 60 कि.मी. और उत्तर से दक्षिण की ओर 75 कि.मी. है। पश्चिम में यमुना नदी, पूर्व में जिला हरिद्वार की प्राकृतिक सीमाएं हैं। यमुना से पूर्वी यमुना नहर तथा इससे अनेक राजवाहे निकालकर सिंचाई की व्यवस्था की गई है। जिले से उत्तर की ओर मसूरी, चकरौता, केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि धार्मिक और पर्यटन महत्त्व के स्थलों के लिए मार्ग प्रारंभ होता है। निकटवर्ती जनपद हरिद्वार में पूर्णमासी कुंभ, अर्द्ध कुंभ और अन्य स्नान आदि के दिनों में महत्त्वपूर्ण मेलों का आयोजन होता रहता है। कभी हरिद्वार जनपद सहारनपुर

शिवालिक का सौंदर्य

जनपद का ही एक भाग हुआ करता था।

सहारनपुर देश की राजधानी दिल्ली से 185 कि.मी. उत्तर तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 461 कि.मी. उत्तर पश्चिम में स्थित है। सहारनपुर जनपद दिल्ली के निकट होने के कारण अधिकांश रेलमार्गों से जुड़ा हुआ है। पंजाब–हरियाणा–जम्मू को होकर दिल्ली से आने–जाने वाली रेलगाड़ियां यहीं से होकर गुजरती हैं। सहारनपुर उत्तर रेलवे के दिल्ली–सहारनपुर–देहरादून एवं उत्तर–पूर्वी रेलवे के लखनऊ– मुरादाबाद–मेरठ मुख्य रेलवे मार्गों के किनारे स्थित है। सहारनपुर मंडल मुख्यालय भी है। सहारनपुर मंडल के अंतर्गत सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और शामली जिले आते हैं।

ikÑfrd foHkktu

1&mÙkj dk iorh; Hkkx

सहारनपुर जिले के उत्तर में शिवालिक पर्वतमाला स्थित है। यह पश्चिम से पूर्व तक उत्तरी सीमा की तरह विस्तारित है। इस पर्वतीय क्षेत्र की चौड़ाई 9 से 12 कि.मी. के लगभग है। इसे काटकर देहरादून तथा चकरौता जाने के लिए सड़कें बनाई गई हैं।

2&iorh; ou {k=

शिवालिक पर्वत की तलहटी में खारा, शाकुम्भरी, मोहंड और कांस के घने जंगल हैं। यहां से बांस, शहद, लाख, गोंद, इमारती लकड़ी इत्यादि बहूपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। सहारनपुर के पर्वतीय वन क्षेत्र के बीच अनेक वन गुर्जर परिवार कठोर जीवनयापन कर रहे हैं। यहां टोंगिया गांव भी बसे हुए हैं। इन लोगों को कभी–कभी हाथियों के गुस्से का शिकार होना पड़ता है।

3&?kkM+

जंगली भाग के नीचे यमुना नदी के बेसिन में रेत, बारीक बजरी और मिट्टी की तह जमा है। इस क्षेत्र को घाड़ के नाम से पुकारा जाता है। इसे उप पहाड़ी क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। इस भाग में भाबड़, मूंगफली, मक्का और कपास की खेती की जाती है।

4&[kknj

सहारनपुर जिले में यमुना नदी का बड़ा खादर है। बरसात के मौसम में बाढ़ आ जाने पर कई किलोमीटर दूर–दूर तक पानी भर जाता है। इस क्षेत्र में झाड़, कांस, कीकर के वृक्ष पाए जाते हैं। यमुना के खादर में तरबूज, खरबूजा और ककड़ी अधिक होती है। जलवायु अच्छी न होने के जनसंख्या कम है।

कहीं–कहीं पर गांव बसे हैं।

5&jrkyk

घाड़ क्षेत्र के नीचे हिंडन, यमुना नदियों के बीच का भाग रताला कहा जाता है। इस भाग की भूमि उपजाऊ है और पैदावार अधिक होती है। यह भाग घना बसा है। इसका ढाल मध्यम तथा उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर है। भूमि के नीचे जल का विशाल भण्डार है। सिंचाई मुख्य रूप से नलकूपों द्वारा की जाती है।

6&ckxj

खाद और रताला से दक्षिण–पश्चिम का भाग बांगर कहलाता है। इस भाग की भूमि दूसरे भागों से अधिक ऊंची है। इस भाग की भूमि कुछ पीले रंग की और भुरभुरी है। इस भूमि पर पानी डालने से यह सिकुड़ जाती है। इस भूमि में गेहूं, चावल और गन्ना बहुतायत में पैदा होता है। आजकल यहां पोपलर के वृक्ष लगाने का प्रचलन अधिक बढ़ गया है।

ufn;k

यमुना नदी हिमालय पर्वत के यमुनौत्री नामक स्थान से निकलती है और सहारनपुर की पश्चिमी सीमा से जिला मुजफ्फरनगर को चली जाती है। हथिनी कुंड बैराज से पूर्वी और पश्चिमी यमुना नहरें निकाली गई हैं। पूर्वी यमुना नहर जनपद के अनेक भागों को सिंचित करती है। गंगा नदी से

शिवालिक का सौंदर्य

निकलने वाली गंग नहर भी जनपद के अनेक भागों को सिंचित करती है। जनपद की प्रमुख नदियों में पांवधोई, हिंडन, ढमौला, मसखरा, बूढ़ी यमुना, गांगरो, नागदेव, चहचही, कृष्णा, काठा, काली, सेंधली आदि हैं। ये नदियां बरसाती नदियां हैं, जो कहीं–कहीं अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

fudV dh egÙoiw.kZ LFky

सहारनपुर जनपद के निकट अनेक महत्त्वपूर्ण और दर्शनीय स्थल हैं। हरिद्वार, देहरादून, कुरूक्षेत्र, शुक्रताल, कालसी कोई भी महत्त्वपूर्ण स्थल सहारनपुर से 100 कि.मी. से अधिक दूर नहीं है। मसूरी और चंडीगढ़ निकट के ही स्थल हैं। हरियाणा में आदिबद्री स्थित सरस्वती नदी का प्राचीन उद्‌गम स्थल और अशोक की लाट, जिसे फिरोजशाह तुगलक दिल्ली ले गया था, ये स्थल भी अधिक दूर नहीं हैं। सहारनपुर इन सभी महत्त्वपूर्ण स्थलों की केंद्रीय स्थिति में है। ऐसे में सहारनपुर पहुंचने पर इन स्थलों को सरलता से घूमने जाया जा सकता है।

अतीत के गवाक्षों से

सहारनपुर जनपद का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवमयी रहा है। सहारनपुर को पांडवों को आश्रय देने वाली और उपनिषदों की धरती होने का गौरव प्राप्त है। कभी उशीनर, कभी स्रुघ्न कभी कुरू जांगल के नाम से जाना जाने वाला यह क्षेत्र वर्तमान में सहारनपुर के नाम से जाना जाता है। गंगा और यमुना के मध्य यह भाग उत्तर वैदिक काल में उशीनर कहलाता था। कुरू वंश का राज्य स्थापित हो जाने पर यह कुरू प्रदेश का भाग हो गया जो कुरू जांगल और ब्रह्मर्षि देश कहलाने लगा। छठी शताब्दी ईसा पूर्व महाजनपदों के समय में यह यौधेय जनपद के अंतर्गत आता था। चाणक्य के समय से दो शताब्दी ईसा पूर्व जब कुरू जनपद संघ तंत्र हो गया तो यह भाग कुरू महाजनपद के अंतर्गत यौधेय, उशीनर तथा स्रुघ्न जनपदों में बंटा हुआ था। कुछ समय तक यह मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत रहा। लोक मान्यताओं के अनुसार मुहम्मद तुगलक के शासनकाल के दौरान संत शाह हारुन चिश्ती के नाम पर इस क्षेत्र का नाम सहारनपुर रखा गया। दूसरी मान्यता के अनुसार

नागल क्षेत्र से प्राप्त मंदिर का अवशेष

अकबर के समय में सहारनपुर नगर राजा साहरनवीर सिंह (शाह रणवीर) ने बसाया था।

lgkjuiqj dk iqjkrkfRod egÙo

सहारनपुर जनपद में समय–समय पर विभिन्न संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त होते रहे हैं। यहां पुरास्थलों में हुलास, सकतपुर और सरसावा का टीला प्रमुख है। हुलास और सरसावा से धूसर चित्रित मृदभांड प्राप्त हुए हैं। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा हुलास में उत्खनन कार्य कराया गया। सन् 1978–79 के दौरान हुलास में व्यापक उत्खनन कार्य हुआ और यहां से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर इस स्थल को सिंधु काल से संदर्भित किया गया। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा 2017 में सहारनपुर के गांव सकतपुर में उत्खनन कराया गया। यहां पर प्राप्त अवशेषों की जांच के बाद उन्हें 1945 ईसापूर्व का बताया गया। एएसआई द्वारा इस स्थल को गंगा घाटी की सभ्यता माना जा रहा है। यह उत्खनन गंगा–यमुना के बीच सहारनपुर में 4000 वर्ष पहले मानव बसाव की संभावनाओं पर पक्की मुहर है। सरसावा के विशाल टीले से भी धूसर चित्रित मृदभांड के अवशेष प्राप्त होते रहते हैं। साथ ही साथ जनपद के अनेक कस्बों और गांवों के छोटे–बड़े टीलों से विशाल ईंटों का मिलना प्राचीन काल में यहां मानवीय आवास होने की पुष्टि करते हैं। धीरे–धीरे नष्ट होते जा रहे यह अवशेष समय रहते पुरातात्विक महत्त्व को संजोने और व्यापक अध्ययन किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ofnd dky

धार्मिक ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि वैदिक काल में आर्यों ने सप्त सैंधव प्रदेश से चलकर यमुना पार कर जिस क्षेत्र को अपना उपनिवेश बनाया वह वर्तमान सहारनपुर प्राचीन उशीनर जनपद ही है। ऋग्वेद में गंगा–यमुना के उल्लेख से यह साक्ष्य मिलता है कि आर्य पंजाब को विजित कर इस क्षेत्र में पहुंचे थे। दासों के राजा शंभर ने आर्य राजा दिवोदास के साथ युद्ध किया। शंभर के मरने के बाद उसके राज्य पर दिवोदास का अधिकार हो गया। इसके बाद दिवोदास के पुत्र सुदास ने पौरव राज्य पर अधिकार कर लिया। यहां के राजा संवरण को पंजाब में शरण लेनी पड़ी। कुछ समय के बाद संवरण ने अपने विजित प्रदेशों को फिर से जीत लिया। संवरण के पुत्र कुरू के नाम पर सरस्वती से गंगा तक का प्रदेश कौरव प्रदेश कहलाया जो उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। इसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। कुरु के पश्चात शान्तनु, विचित्रवीर्य, पाण्डु, धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर, परीक्षित, जनमेजय, शतानीक, अश्वमेधज, असीमकृष्ण एवं नेमिचक्र ने कुरू जांगल प्रदेश पर राज्य किया। नेमिचक्र के समय में ही

हस्तिनापुर नगर गंगा के तीव्र प्रवाह में बह गया और कुरु वंशीय राजा देश छोड़कर वत्स देश की नगरी कौशाम्बी में जा बसे।

pk.kD; vkSj pæxqIr dh 'kj.kkLFkyh

महापद्म नन्द के शासन काल में मगध का एकछत्र राज्य उत्तर बिहार से यमुना नदी तक विस्तृत हो गया था। उस समय सहारनपुर जनपद स्रुघ्न जनपद के अंतर्गत था। प्राचीन स्रुघ्न वर्तमान हरियाणा, सहारनपुर से हरिद्वार तक विस्तारित था। यमुना नदी इसके बीच से होकर प्रवाहित होती थी। इस समय स्रुघ्न जनपद का सबसे महत्त्वशाली तीर्थ स्थल शाकुम्भरी देवी था। मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त और चाणक्य महापद्म नन्द से पराजित होने के बाद कौशाम्बी, काम्पिल्य और शुक्र, शिवालिक तथा मायापुरी होते हुए शाकुम्भरी पहुंचे थे। यहीं सेना का संगठन करके हिमवत कूट पहुंच पर्वतक को साथ मिलाकर नन्द को पराजित किया था। नन्द को पराजित करने के साथ ही सहारनपुर मौर्य राज्य का अंग बन गया।

ekS;Z lkezkT;

मौर्य साम्राज्य के दौरान ही विदेशी यात्री मेगास्थनीज भारत आया तो वह गांधार से तक्षशिला, सिंधु, झेलम, सतलुज, रावी और यमुना पार करके सहारनपुर होते हुए हस्तिनापुर पहुंचा था। यूनानियों के आक्रमण का लाभ मौर्य सेनापति पुष्पमित्र ने उठाया। उसने सम्राट वृहद्रथ की हत्या कर 184 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य पर

सरसावा क्षेत्र से प्राप्त धूसर चित्रित मृदभांड

अधिकार कर लिया और स्वयं शासक बन गया। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद शुंग वंश ने राज्य किया। शुंग वंश का सबसे प्रतापशाली सम्राट पुष्यमित्र ही हुआ। शुंग साम्राज्य की शक्ति क्षीण होने पर यवन और शक बराबर भारत पर आक्रमण करते रहे। यौधेय, कुषाण, हूण एवं कुणिन्दों की मुद्राएं सहारनपुर से प्राप्त होती रहीं हैं। वर्तमान सहारनपुर समुद्रगुप्त के शासन काल तक कुणिंद एवं यौधेय गणों में विभाजित था किंतु गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत आता था। शाकुम्भरी देवी और शिवालिक की पहाड़ियों से गुप्तकालीन मूर्तियां और सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। पांचवीं शताब्दी के प्रथम दशक में इन गणराज्यों का अंत हो गया था और चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने सन् 379—413 ई. में गुप्त साम्राज्य में मिला लिया था। स्कंदगुप्त के समय तक समस्त क्षेत्र गुप्त शासन के अधीन रहा। स्कंदगुप्त के समय से ही हूण आक्रमणकारी गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण करने लगे थे, इन आक्रमणों से धीरे—धीरे गुप्त साम्राज्य की नींव हिलने लगी और हूण गंगा के मैदान तक फैल गए। सन् 475 ई. के लगभग हूण सरदार तोमराण हूण साम्राज्य का अधिपति बना और उसने पंजाब, मथुरा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य भारत के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। छठीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में उत्तरी भारत में प्रमुख राजनैतिक शक्ति मौखरी राजवंश थी। ईशानवर्मन मौखरी ने लगभग सन् 554 ई. में समस्त उत्तरी भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। यशोवर्मन के पश्चात् सन् 554—606 ई. तक सहारनपुर और उत्तरी दोआब का भाग कन्नौज के मौखरी राज्य के अंतर्गत था। लगभग इसी समय थानेश्वर में एक नए राजवंश का उदय हुआ जिसको वर्धन वंश के नाम से जाना गया। प्रभाकर वर्धन के राज्य में दक्षिणी पंजाब पूर्वी राजपूताना के भाग सम्मिलित थे।

g"koèku dk 'kklu

मौखरी शासक ग्रहवर्मन की मृत्यु के बाद हर्ष थानेश्वर एवं कन्नौज का शासक बना और इस प्रकार समस्त उत्तरी भारत पर हर्ष का अधिकार हो गया। सम्राट हर्षवर्धन हरिद्वार कुंभ में आया करता था, उस समय हरिद्वार और सहारनपुर एक ही हुआ करते थे। हर्षवर्धन सन् 606—647 ई. के शासन काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग सन् 629—645 ई. में भारत आया था। उसने हर्ष के राज्य स्रुघ्न का उल्लेख सुल—लु—किना के नाम से किया है। ह्वेनसांग गिलगित और कश्मीर होता हुआ गोपीनाथ मठ पहुंचा, यह मठ स्रुघ्न जनपद में स्थित था। सहारनपुर इसी स्रुघ्न के अंतर्गत आता था। ह्वेनसांग के अनुसार स्रुघ्न में पांच बौद्ध मठ थे। उसने इस क्षेत्र में 100 हिंदू मंदिर होने का उल्लेख किया है। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद यशोवर्मन, आयुद्ध वंश, राजवंश, भोज परमार, कल्चुरी राजवंश, गहड़वाल और चाहमान राजवंश के शासन अंतर्गत सहारनपुर रहा।

xtj ifrgkj o'k

सहारनपुर जनपद गुर्जर प्रतिहार वंश के अंतर्गत लंबे समय तक रहा। जिस समय गुर्जर प्रतिहार वंश अपने चरम पर था उस दौरान लंबे समय तक इस वंश ने अरबों को भारत में प्रवेश नहीं करने दिया था। सहारनपुर में नई खोज

गुर्जर प्रतिहार वंश की साईट से प्राप्त चक्की का पाट

के दौरान गुर्जर प्रतिहार वंश की पुरानी बस्ती के अवशेष मिले हैं। जहां से मिट्टी के बर्तन, लोहे के औजार, पत्थर के उपकरण और सिक्के मिले हैं।

iFohjkt dh ijkt;

तराइन का द्वितीय युद्ध पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के बीच सन् 1192 ई. में हुआ। पृथ्वीराज की हार के बाद भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों के पांव जम गए। सहारनपुर उस समय उशीनर कहलाता था। रायपुर और खुजनावर के हिंदू राजपूत इसी समय मुस्लिम राव बन गए थे। सन् 1253 ई. में उत्तरी दोआब के कुछ भागों में पुनः विद्रोह हुए जिन्हें दबाने के लिए नसीरुद्दीन सन् 1254 ई. में यमुना पार करते हुए मायापुर से गंगा पार कर विद्रोह दबाता हुआ बदायूं पहुंचा। सन् 1308 ई. में चंगेज खां के वंशज अलीबेग गुर्गान के नेतृत्व में मुगलों का प्रथम आक्रमण भारत पर हुआ। वह 40,000 घुड़सवार लेकर पंजाब से होता हुआ यमुना पार कर सहारनपुर जनपद को रौंदता हुआ बिजनौर पहुंचा।

rxyd o'k

मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल सन् 1325–1351 ई. में मुगलों का मुख्य सेनापति तरमशरीन खां सरसावा, नकुड़, गंगोह और जलालाबाद को लूटता हुआ दिल्ली पहुंचा। मुगलों के आक्रमणों से बचने के लिए फिरोज तुगलक ने अम्बाला, शाहबाद और सहारनपुर की यात्रा की तथा सैनिक ठिकाने बनवाए। आधुनिक अंबेहटा जो तत्कालीन फिरोजाबाद था, में सैनिक छावनी एवं एक किला भी बनवाया। इसी समय तुगलक टोपरा कलां, यमुनानगर से अशोक स्तंभ और सहारनपुर के पहाड़ी राजाओं से नजराना लेकर दिल्ली वापस चला गया। फिरोज तुगलक लौटने के कुछ समय पश्चात् ही उसके पुत्र महमूद ने उसके विरुद्ध युद्ध कर दिया तथा फिरोज तुगलक की मृत्यु तक वह सहारनपुर के उत्तरी भाग में रहा। पश्चिमी यमुना नहर फिरोज तुगलक के समय की उल्लेखनीय घटना है जिसका निर्माण सन् 1351 ई. में उसी ने करवाया था। सन् 1398 ई. में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया। महमूद को पराजित करने के बाद वह मेरठ होते हुए दिल्ली पहुंचा तथा जहांनशाह के सहयोग से हरिद्वार में हिंदुओं से युद्ध करने के बाद बहरूज में दून घाटी के सरदार को पराजित किया। वह सहारनपुर के मल्हीपुर से सरसावा होते हुए यमुना पार कर पंजाब को निकलते हुए लौट गया। तैमूर भारत से वापस जाते समय अपने एक सरदार खिजर खां को भारतीय प्रदेश का प्रशासक बना गया। सन् 1414 ई. में खिजर खां ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसने सन् 1451 ई. तक शासन किया।

yknh o'k

सन् 1451 ई. में दिल्ली पर बहलोल लोदी का अधिकार हो गया और इसके साथ ही सहारनपुर सहित समस्त उत्तरी दोआब दिल्ली राज्य के अंतर्गत चला गया। सिकंदर लोदी ने सन् 1507 ई. में देवबंद और सन् 1510–11 ई. में अंबेहटा में मस्जिद का निर्माण कराया था। सन् 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित कर इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था। सहारनपुर में कई निर्माण और क्षेत्रों को लोदी वंश से संदर्भित किया जाता है।

exy dky&

सन् 1536 ई. में बाबर ने सरहिंद से अंबाला होते हुए यमुना पार कर सहारनपुर के कस्बे सरसावा में पड़ाव डाला। सरसावा को एक मनमोहक स्थान पाकर बाबर ने इसे अपने एक सिपहसालार तावदी बेग फ़ाकसार को दे दिया। यहां से बाबर की सेना दो भागों में विभाजित हो गई। एक टुकड़ी सहारनपुर के कस्बे गंगोह और तीतरो के रास्ते आगे बढ़ी। दूसरी टुकड़ी

यमुना पार कर करनाल होते हुए पानीपत पहुंची और इब्राहीम लोदी को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

अबुल फजल ने आइने अकबरी में वर्णन किया है कि अकबर ने सहारनपुर को दिल्ली सूबे के अंतर्गत सरकार का दर्जा देकर सहारनपुर नगर को सरकार का मुख्यालय बनाया। सहारनपुर सरकार में चार दस्तूर कैराना, देवबंद, इंद्री और सरधना शामिल थे। इसमें 36 परगने भी आते थे। सहारनपुर की जागीर राजा साहरनवीर को दी गई। उस समय इस क्षेत्र का प्रयोग सैनिक छावनी के रूप में किया जाता था। राजा साहरनवीर ने पांवधोई नदी के किनारे से नखासा बाजार, रानी बाजार, शाह बहलोल, लक्खी गेट आदि मोहल्लों के बीच एक नगर बसाया। इस नगर के चार द्वार थे। सराय दरवाजा, माली दरवाजा, बूढ़िया दरवाज़ा और लक्खी दरवाजा। अकबर के शासनकाल के दौरान सहारनपुर में सिक्कों की टकसाल भी लगाई गई, आज भी देश भर से सहारनपुर में ढले सिक्के प्राप्त होते हैं। इन सिक्कों पर सहारनपुर लिखा हुआ है। अकबर ने सन् 1556 में गंगोह में एक जामा मस्जिद का निर्माण करवाया।

cjkg l`;n vkj lgkjuiqj

बादशाह फरुख्सियर ने बराह सैय्यदों को सहारनपुर की जागीर दी। सन् 1719 में फरुख्सियर के बाद जब मोहम्मदशाह बादशाह बना तो सहारनपुर की जागीर जफर खां को सौंप दी। इस बीच सहारनपुर की जागीर को लेकर कई गुटों में खींचतान चलती रही। सन् 1748 में मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद वजीर सफदरजंग और सेनापति गाजीउद्दीन में मतभेद हो गया। इसका लाभ उठाते हुए सफदरजंग ने सहारनपुर पर अधिकार करने के लिए इंद्रगिरी गोस्वामी के नेतृत्व में सेना भेजी किंतु सहारनपुर पहुंचने से पहले ही उसे रूहेलों की मदद से गाजीउद्दीन ने पराजित कर दिया। सरदार नजफ खां जो बाद में नजीबुद्दौला के नाम से प्रसिद्ध हुआ, को सहारनपुर, बिजनौर, बुढ़ाना और सैय्यदों की पूरी जागीर मिल गई। सहारनपुर जिला जेल पहले रोहिला किला हुआ करती थी। यह भी उल्लेख मिलता है कि रोहिला किले का निर्माण इंद्रगिरी गोस्वामी (गोसाईं) द्वारा कराया गया। उसी ने कुछ समय यहां शासन किया। यह समय काल नजीबुद्दौला के आने से पूर्व 1748–54 का प्रतीत होता है। ऐसा हो सकता है कि सफदरजंग ने इंद्रगिरी को सहारनपुर में शासन करते हुए पराजित किया हो। नजीबुद्दौला सन् 1754 में सहारनपुर आकर रहने लगा। इसने सबसे पहले प्रशासन ठीक किया और सेना को संगठित किया। गंगा किनारे उसने अपनी राजधानी और किला

बनवाया जो बाद में उसी के नाम से नजीबाबाद कहलाने लगा। गाजीउद्दीन के अतिरिक्त जाट और मराठे नजीबुद्दौला से खुश नहीं थे। सन् 1757 में शहजादा अली गौहर जब दिल्ली से अपनी जान बचाकर भागा तो नजीबुद्दौला ने उसे पनाह दी और पचास हजार रुपये प्रतिमाह खर्च के लिए दिए। नजीबुद्दौला मराठों और दिल्ली की ताकत को अच्छी तरह समझता था अतः उसने अली गौहर को अवध के नवाब शुजाउद्दौला के पास भेज दिया। नजीबुद्दौला सहारनपुर का पहला शासक था जिसने दस वर्ष तक दिल्ली में मुगल बादशाह शाह आलम के पुत्र संरक्षक के रूप में शासन की बागडोर संभाली। वह अपने समय का सबसे अच्छा सेनानायक था। उसके बाद उसके पुत्र जबीतां खां ने सहारनपुर की बागडोर संभाली। जबीतां इतना कुशल नहीं था, उसकी जागीर छोटी होती गई।

xyke dkfnj vkj ejkBk

सन् 1785 ई. में जबीता खां की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा गुलाम कादिर भवानी महाल अर्थात् सहारनपुर का नवाब बना। गद्दी पर बैठते ही अपने दादा नजीबुद्दौला द्वारा स्थापित राज्य पर अधिकार करना आरंभ कर दिया। सन् 1787 ई. को उसने बादशाह शाह आलम को विवश कर दिया कि वह उसे बख्शी–उल–मुमालिक का पद और अमीर–उल–उमरा की उपाधि प्रदान करे। गुलाम कादिर ने बादशाह को आश्वासन दिया कि वह खालसा शरीफा महाल जीतकर बादशाह को देगा। बादशाह ने गुलाम कादिर की बात स्वीकार कर ली। गुलाम कादिर ने बादशाह को दिए हुए अपने वचन को पूरा करने के लिए खालसा शरीफा के सत्ताईस महाल को, जो कोल वर्तमान अलीगढ़ में पड़ते थे जीतने के आदेश दिए। गुलाम कादिर ने हाथरस के राजा तथा अन्य राजाओं से बहुत सारा धन एकत्रित किया। लूटे हुए धन के एक चौथाई भाग की मांग बादशाह ने की लेकिन गुलाम कादिर ने देने से मना कर दिया। बादशाह इस बात पर गुलाम कादिर से नाराज हो गया और 22 मार्च, सन् 1788 ई. को उसने सिंधिया को पत्र लिखा। पत्र में इस्माइल बेग और गुलाम कादिर को आगरा और अलीगढ में विद्रोह के अपराध में दंडित करने के लिए लिखा। इस बीच ही सन् 1789 ई. में गुलाम कादिर की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु के बाद सहारनपुर मराठों के आधिपत्य में चला गया।

ejkBk 'kklu

गुलाम कादिर के भवानी महाल सहारनपुर के सभी क्षेत्रों पर मराठों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। सहारनपुर मराठा राज्य का उत्तरी जिला बन गया। सहारनपुर का पहला मराठा गवर्नर गनी बहादुर बंदा नियुक्त हुआ।

श्री भूतेश्वर महादेव मंदिर

उस समय सहारनपुर पर सिखों के आक्रमण बहुत तेजी से होने लगे। अतः जनपद में शांति बनाए रखना मराठों की प्रमुख प्राथमिकता थी। सन् 1791 ई. में भैरोपंत तांतिया को सहारनपुर का नया मराठा गवर्नर नियुक्त कर दिया गया, उसने सिखों के खिलाफ आक्रामक रूख अपनाया। सिखों से उसने दिए हुए सभी प्रदेश छीन लिए। सन् 1794 ई. में महादेवजी सिंधिया की मृत्यु हो गई और इस अवसर का लाभ उठाकर सिखों ने यमुना पार कर सहारनपुर पर फिर से आक्रमण करना शुरू कर दिया। सिख आक्रमण इतने भयानक थे कि मराठों को सहारनपुर छोड़कर जलालाबाद में शरण लेनी पड़ी। मराठे उस समय तक किले में बने रहे जब तक जार्ज थॉमस सेनानायक की सेनाएं उनकी सहायता के लिए वहां पहुंच नहीं गई। इसकी नियुक्ति सहारनपुर के नए गवर्नर सन् 1795 में लकवा दादा ने की थी। जार्ज थॉमस आयरिश था, उसे 2000 पैदल, 2000 घुड़सवार तथा 16 तोपें दी गई थीं। जिनसे वह सोनीपत, पानीपत और करनाल के जिला की रक्षा कर सके तथा सहारनपुर में होने वाले सिख आक्रमण को रोक सके। बापू सिंधिया सन् 1796 ई. में सहारनपुर का नया मराठा गवर्नर बना, सामने कठिन परिस्थिति थी क्योंकि लखनौती के तुर्कमानों ने बहादुर अली खां के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया था। इसी समय सिखों ने करनाल पर आक्रमण कर दिया। बापू सिंधिया तथा जार्ज थॉमस ने मिलकर लखनौती का विद्रोह दबाया और करनाल में सिखों को पराजित किया। सन् 1797 ई. में दौलतराय सिंधिया ने उत्तरी भारत में

मराठा राज्य की देखभाल करने के लिए थॉमस पेरो को नियुक्त किया। थॉमस और बापू सिंधिया ने आपसी मतभेद होने पर बापू सिंधिया ने थॉमस को बर्खास्त कर दिया। सन् 1789 ई. से 1803 ई. तक मराठा शासन के अंतर्गत सहारनपुर में बराबर उथल–पुथल ही मची रही। 30 दिसंबर, सन् 1803 ई. तक सहारनपुर पर मराठों का अधिकार बना रहा। उसके बाद सहारनपुर सहित समस्त दोआब, सुरजीअंजन गांव की संधि 30 दिसंबर, सन् 1803 ई. द्वारा अंग्रेज़ों के अधिकार में चला गया।

vxtk ij fl[k vkØe.k

मराठों की पराजय के बाद अंग्रेजों की ओर से कर्नल बर्न ने एक छोटे सैनिक दल को साथ लेकर सहारनपुर पर अधिकार कर लिया। मराठों के समर्थक सिख सरदारों, लाडवा के गुरुदत्त सिंह, बूढ़िया के शेरसिंह, जगाधरी के राय सिंह, थानेश्वर के महताब सिंह, कलसिया के जोधसिंह और शाहिदी के करम सिंह ने 1800 घुड़सवारों के साथ यमुना पार कर अंग्रेज़ों के क्षेत्र सहारनपुर पर आक्रमण कर दिया। कर्नल बर्न ने यमुना पार से होने वाले आक्रमण को रोकने के लिए लेफ्टिनेंट ब्रिच को भेजा। ब्रिच के साथ कर्नल स्कीनर तोपखाना लेकर आ मिला और उन्होंने सहारनपुर में सिखों की सम्मिलित सेनाओं को पराजित कर दिया तथा सिख सरदारों ने आत्मसमर्पण कर दिया। 9 मार्च, सन् 1805 ई. को सिखों ने यमुना पार कर पुनः आक्रमण शुरू कर दिए लेकिन अप्रैल में ही यमुना पार कर कर्नल बर्न ने करनाल पर अधिकार कर लिया।

महाभारत काल में सहारनपुर का महत्त्व

वेद, उपनिषद और *पुराण* के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के दो ऐसे ग्रंथ रहे हैं जिन्होंने भारतीय जन–मानस को सर्वाधिक प्रभावित किया। उन दोनों में से एक है *रामायण* और दूसरा है *महाभारत*। *महाभारत* ग्रंथ ऐतिहासिक घटना पर आधारित ग्रंथ है। सहारनपुर वासियों के लिए यह गौरवपूर्ण तथ्य है कि महाभारत के बहुत से प्रसंगों का साक्षी सहारनपुर भी रहा है। साक्षी ही नहीं रहा बल्कि हस्तिनापुर और कुरूक्षेत्र के मध्य में स्थित इस कुरू जांगल प्रदेश ने धर्म और अधर्म के बीच युद्ध में महती भूमिका भी निभाई।

महाभारत काल से जुड़े यहां के संदर्भों को समझने के लिए आवश्यक है कि यहां के भूगोल को समझा जाए। सहारनपुर निःसंदेह अपने भाग्य पर इठला सकता है क्योंकि इसके पश्चिम में जहां यमुना बहती है, वहीं पूर्व से पतित पावनी गंगा। उत्तर में हिमालय की शिवालिक श्रेणियां ऐसी लगती हैं जैसे शोभायमान राजकुमार के माथे पर कोई सुंदर मुकुट सुशोभित हो। सहारनपुर की पश्चिम सीमा से कुरुक्षेत्र की दूरी 60 किलोमीटर से भी कम है। उत्तरी सीमा पर शिवालिक पहाड़ियां अनन्त सुषमा भंडार और ऋषि–मुनियों की तपस्थलियों का बड़ा केंद्र रहा है। मध्यकाल में लगातार आक्रमणों के कारण यहां से ऋषि–मुनियों को यह स्थान छोड़कर दूरस्थ घने जंगलों की शरण

देवीकुण्ड एवं माँ बाला सुन्दरी मंदिर, देवबंद

बरसी महादेव शिवलिंग

लेनी पड़ी। सहारनपुर के दक्षिण–पश्चिम में करनाल जिला है जिसे कर्ण द्वारा बसाया गया नगर बताया जाता है। पूर्व में हरिद्वार और दक्षिण में दूरस्थ नगर पानीपत, सोनीपत हैं। उधर से होता हुआ यह क्षेत्र पूर्व तक इंद्रप्रस्थ और हस्तिनापुर अर्थात् दिल्ली और मेरठ तक पहुंचता है। ऐसे में देखा जाए तो सहारनपुर चारों ओर से ऐसे क्षेत्रों से घिरा है जिन्हें महाभारतकालीन उल्लेखनीय क्षेत्रों के रूप में जाना जाता है। लेकिन अभी तक सहारनपुर को महाभारतकालीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में मान्यता नहीं मिल सकी है। सहारनपुर के तालाबों की यात्राओं के बीच बहुत सी किंवदंतियां और प्रसंग ऐसे मिले जिनसे *महाभारत* से इस क्षेत्र के जुड़ाव को समझा जा सकता है। आइए, इन्हीं अनुमानों के टुकड़ों को जोड़कर महाभारत काल और सहारनपुर के बीच संदर्भों को समझने और देखने का प्रयत्न करते हैं।

सहारनपुर कुरूक्षेत्र और हस्तिानपुर के बीच का क्षेत्र है। अगर कौरवों–पांडवों में कुरूक्षेत्र के मैदान पर युद्ध हुआ है तो उन्हें कई बार सहारनपुर क्षेत्र से होकर गुजरना पड़ा होगा। इस क्षेत्र का सदियों पुराना नाम कुरू जांगल रहा। पांडवों ने भी अपना पर्याप्त अज्ञातवास कुरू जांगल क्षेत्र में बिताया, ऐसे में वे यहां अवश्य ही विचरण करते रहे होंगे। सहारनपुर में गांव सौराना, खुजनावर, नागल, नकुड़, तीतरो, बरसी, जड़ौदा पांडा, जखवाला, रणखंडी आदि क्षेत्रों में आज भी पांडवों के सम्बन्ध में कई कहानियां मिल जाती हैं। सौराना गांव का पांडव वाला तालाब, रणखंडी का पांच पांडव सरोवर, खुजनावर का धनराज सरोवर,

जखवाला का जखवाला जलाशय, बरसी का पांडवकालीन महादेव मंदिर, तीतरो का कर्णताल, जड़ौदा पांडा गांव का पांडव वाला तालाब, सरसावा का वनखंडी महादेव, देवबंद का देवीकुंड आदि स्थल जनपद में पांडवों से ऐतिहासिक जुड़ाव की पुष्टि करते हैं। नकुड़ कस्बा पांडवों में से एक नकुल द्वारा बसाया बताया जाता है, नकुड़ में स्थापित नकुलेश्वर महादेव मंदिर के प्रति क्षेत्र के लोगों की अगाध श्रद्धा तथ्य को अधिक पुष्ट करती दिखाई देती है। इसके अलावा कई अन्य गांवों में भी पांडवों को लेकर कुछ प्रसंग प्रचलित हैं।

आखिर उस समय ऐसा क्या रहा है कि पांडवों को सहारनपुर, मेरठ, मुजफ्फरनगर और कुरूक्षेत्र के बहुत से गांवों और जलाशयों के साथ संदर्भित किया जाता है। अध्ययन के आधार पर जो निष्कर्ष सामने आ रहा है वह यह है कि पांडव विभिन्न स्थानों पर भ्रमण कर अपने दो मंतव्य सिद्ध कर रहे थे।

नकुलेश्वर महादेव मंदिर, नकुड़

एक यह है कि उन्हें शर्त के अनुसार अज्ञातवास और वनवास भी पूरा करना था। दूसरा यह है कि वे कौरवों से युद्ध करने से पहले जनसंपर्क कर क्षेत्र के लोगों का मानसिक अनुकूलन भी कर रहे थे ताकि उन्हें वनवास दिए जाने पर लोगों की सहानुभूति का साथ मिल सके। पांडवों के लिए अपना पक्ष जनता के समक्ष स्पष्ट करने के लिए यह सरल मार्ग था ताकि कौरवों से युद्ध के समय जन समर्थन उन्हें मिल सके। इसी विचार को लेकर पांडव स्थान–स्थान विचरते रहे। ऐसे में अगर बहुत से संदर्भ पांडवों से जुड़ते हैं तो वे यूं ही नहीं बन गए। उनके पीछे कहीं न कहीं इतिहास है।

यहां यह भी महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि इन सभी स्थलों में खुदाई के दौरान मिली प्राचीन ईंटों का आकार बराबर है। सभी स्थलों पर चौकोर चौड़ी ईंटें प्राप्त हुई हैं, ऐसे में यह हो जाता है कि ये सभी स्थल समकालीन हैं। गांव सौराना में दो वलयकूप, नकुड़ के नया बांस गांव के वलयकूप की ईंटें समान हैं और इनकी ईंटें हस्तिनापुर की ईंटों से परिमाप में मिलती हैं। पुरातत्त्ववेत्ता बी.बी. लाल ने सन् 1951–1952 में हस्तिनापुर में खुदाई कराई थी। खुदाई के दौरान चौड़ी ईंटों की दीवारें मिली थी। इन ईंटों का आकलन ईसा से चौथी से छठीं शताब्दी पूर्व के रूप में किया गया था। इनका परिमाप सौराना, खुजनावर, नया बांस, लोदीपुर, तीतरो, नकुड़, बरसी, अलीपुरा, सरसावा, देवबंद, किशनपुरा आदि क्षेत्रों से प्राप्त ईंटों से मिलता है। ईंटों का परिमाप प्राचीन ईंटों के साथ मापने पर इनकी प्राचीनता 2000 से 3500 वर्ष तक पहुंचती है।

गौरवपूर्ण संस्कृति का संवाहक सहारनपुर

किसी भी देश, प्रदेश या नगर की वास्तविक पहचान उसके सांस्कृतिक तत्वों से होती है। क्षेत्र विशेष की भाषा, खानपान, जातीय विशेषताएं, वेशभूषा और परम्पराओं आदि से वहां के सांस्कृतिक महत्त्व का परिचय मिलता है। गंगा और यमुना जैसी पावन नदियों के बीच पांडवों को आश्रम देने वाली, मां शाकुम्भरी देवी का आशीर्वाद प्राप्त और हित हरिवंश की मातृभूमि होने का गौरव इसी क्षेत्र को प्राप्त है। लेकिन उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य का दूरस्थ जनपद होने का नुकसान सबसे अधिक सहारनपुर के सांस्कृतिक पक्ष को झेलना पड़ा है। इस कारण न तो सहारनपुर के ज्ञात सांस्कृतिक संदर्भों को बढ़ावा दिया गया और न ही अज्ञात सांस्कृतिक महत्त्व की तलाश की गई। जबकि सहारनपुर की सांस्कृतिक परम्पराएं दूसरे प्रचारित जनपदों की अपेक्षा कहीं अधिक समृद्ध थी।

सहारनपुर की इस पावन भूमि को *मनुस्मृति* में मानव चरित्र निर्माण की आदर्श भूमि कहा गया। उस समय इस क्षेत्र को ब्रह्मर्षि देश के नाम से जाना जाता था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की पवित्र भूमि जिसमें सहारनपुर का क्षेत्र भी सम्मिलित है, में ही उपनिषदों की रचना की गई, जहां गुरुओं के समक्ष बैठकर शिष्यगण अपनी जिज्ञासाओं की क्षुधा को शांत किया करते थे। सहारनपुर

गोगा महाराज की म्हाड़ी, मानकमऊ

से पहले इस क्षेत्र को उशीनर, स्रुघ्न, कुरू जांगल, ब्रह्मर्षि देश, मध्यदेश आदि के नाम से जाना जाता था। संस्कृत भाषा के ज्ञाता और व्याकरण शास्त्री पाणिनी का समय ईसा पूर्व सातवीं से चौथी शताब्दी तक माना गया है। पाणिनी ने अपने ग्रंथ में स्रुग्न और स्रौघ्न शब्दों का प्रयोग नगर और नागरिकता के उदाहरण में किया है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान सहारनपुर जनपद जो प्राचीन काल में स्रुघ्न जनपद के नाम से जाना जाता था वह नगरीय सभ्यता का महत्त्वपूर्ण केंद्र था।

यह क्षेत्र लंबे समय तक कुरू प्रदेश का महत्त्वपूर्ण भाग था। *हर्षचरित* के तीसरे उच्छवास में कुरु प्रदेश का वर्णन करते समय उसे क्षीर सागर का *पयपान* करने वाले मेघों से पटाये गए पुंड्र जाति के ऊखों अर्थात् गन्नों से भरा देश कह कर पुण्यवानों की धरती पर स्वर्ग का अवतार माना है। यहां गन्ने की सर्वाधिक उपज इसकी पुष्टि करती है। पौंडा गन्ना सहारनपुर के साथ–साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश की विशिष्ट पहचान हुआ करता था। आज भी यह कुछ लोगों के द्वारा सहारनपुर में शौकिया तौर पर उगाया जाता है। सहारनपुर समय–समय पर विविध नामों से जाना जाता रहा है। ऐसे में सहारनपुर का सांस्कृतिक इतिहास गूगल पर तलाशने से नहीं मिल सकता। सहारनपुर के सांस्कृतिक इतिहास और यहां की गौरवशाली परम्पराओं की खोज होनी अभी शेष है। जिस दिन गहन शोध दुनिया के सामने आएगा उस दिन सहारनपुर को देखने की दृष्टि बदल जाएगी। भला ऐसा कैसे हो सकता है कि गंगा और यमुना के बीच जिस धरती पर देवता भी रहने को आतुर रहते थे, उसका कोई सांस्कृतिक इतिहास न हो ? जब दक्षिण भारत में हर गांव गली में प्राचीन और धनाढ्य मंदिरों की भरमार है तो प्रत्येक दृष्टि से उन्नत इस क्षेत्र के साथ भी ऐसा क्यों नहीं है ?

सहारनपुर के निकटवर्ती जिले यमुनानगर में वैदिक नदी सरस्वती का मार्ग तलाशा गया और वहां खुदाई का कार्य प्रारंभ किया गया। यह स्थान सहारनपुर से अधिक दूर नहीं है। कभी सहारनपुर, हरिद्वार और यमुनानगर एक ही राज्य का भाग हुआ करते थे। कभी इस एक ही राज्य से गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों पवित्र नदियां बहा करती थी। वैदिक संस्कृति का विस्तार सरस्वती नदी के किनारे ही था। ऐसे में गंगा, यमुना और सरस्वती के बीच स्थित सहारनपुर क्षेत्र के महत्त्व का अनुमान लगाया जा सकता है। हुलास टीले की खुदाई में जो अवशेष प्राप्त हुए, उनके आधार पर पुरा विज्ञानियों ने इस स्थान को उत्तर सिंधुकालीन सभ्यता का महत्त्वपूर्ण स्थल घोषित किया है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण तथ्य है। हिंडन (हरनंदी) नदी के किनारे सन् 2016 में हुए उत्खनन के बाद यहां गंगा घाटी सभ्यता का होना माना गया है। आज

से लगभग 4000 वर्ष पहले सकतपुर में मानवीय बसाव था। समय रहते कुछ दूसरे स्थलों का संरक्षण कर उनका उत्खनन किए जाने की बेहद आवश्यकता है। सहारनपुर जनपद के कस्बे सरसावा में एक विशाल टीला है, जिसका उत्खनन होना बहुत आवश्यक है दुर्भाग्य से आज यह टीला चारों ओर से काटा जा रहा है और इसके संरक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। सरसावा के अलावा तीतरो, गंगोह, नकुड़, बेहट, देवबंद, ननौता आदि कस्बों का विकास टीलों पर ही हुआ है। इन टीलों से यदा–कदा प्राचीन ईंटें और मिट्टी के बर्तन निकलते रहते हैं। कस्बों के अलावा जनपद के कई गांवों का बसाव भी टीलों पर है, गांवों के खेतों से बड़े आकार की प्राचीन ईंटें निकलती रही हैं जो कि यहां विकसित प्राचीन विशाल सभ्यता की ओर इंगित करती है। यदि प्रदेश की सीमाओं से बाहर निकल कर सहारनपुर, यमुनानगर, हरिद्वार, मुजफ्फरनगर आदि जिलों को जोड़कर व्यापक अध्ययन किया जाए तो इस क्षेत्र में परम्परागत ऐतिहासिक सिद्धांतों को नए तथ्यों, विवरणों के साथ बदला और उनका विस्तार किया सकता है। पुराणों में पंचतीर्थी के नाम से सुविख्यात हरनंदी जिसे वर्तमान में हिंडन के नाम से जाना जाता है, यह भी सहारनपुर में शिवालिक की पहाड़ियों से निकली है। यहां से चलकर यह नदी मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली, नोएडा तक जाकर यमुना में मिल जाती है। हिंडन नदी के किनारे कई प्राचीन सभ्यताओं का विकास हुआ है, जिनके अवशेष प्राप्त होते रहे हैं।

यह क्षेत्र हस्तिनापुर राज्य के अंतर्गत आता था। हस्तिनापुर और कुरूक्षेत्र के मध्य में होने के कारण आवागमन का मार्ग भी यही क्षेत्र था। पश्चिम में कुरूक्षेत्र दक्षिण में पानीपत, सोनीपत, उत्तर में शिवालिक, दक्षिण–पूर्व में इंद्रप्रस्थ और हस्तिनापुर से घिरे सहारनपुर जनपद को महाभारत काल में कुरू जांगल के नाम से जाना जाता था। पांडवों को वनवास के दौरान आश्रय देने का श्रेय इसी क्षेत्र को जाता है। सहारनपुर में नकुल द्वारा बसाया गया नकुड़ कस्बा व नकुलेश्वर महादेव, सरसावा में वनखंडी महादेव, सौराना का पांडव वाला तालाब, भीम द्वारा गदा से घुमाया गया बरसी महादेव मंदिर, देवबंद में यक्षवाला तालाब और माता बाला सुंदरी मंदिर, तीतरो में कर्णताल, खुजनावर में धनराज सरोवर, रणक्षेत्र से बना रणखंडी गांव आदि स्थलों का होना यहां पांडवों के आगमन और उनसे जुड़े संदर्भों की पुष्टि करते हैं। सोलह महाजनपदों में से कुरू महाजनपद महत्त्वपूर्ण महाजनपद था। कुरू महाजनपद वर्तमान के अंबाला, यमुनानगर, दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, शामली, बिजनौर आदि जोड़कर बनाया गया था।

यह घने वनों से आच्छादित स्थान हुआ करता था और ऋषि–मुनि यहीं अपने

आश्रम बना कर तप किया करते थे। शिवालिक की पहाड़ियों में अनेक तपस्थलियों, गुफाओं और समाधियों का होना यह सिद्ध करता है। वर्णन मिलता है कि आदि गुरु शंकराचार्य बद्रीनाथ जाते हुए शाकुम्भरी आए थे और उन्होंने तीन प्रतिमाएं भी स्थापित की थीं। पांडवों के बाद चंद्रगुप्त और चाणक्य को भी आश्रय देने का श्रेय इसी क्षेत्र को प्राप्त है। नंद से हारने के बाद चंद्रगुप्त और चाणक्य ने लंबा समय शाकुम्भरी देवी की पहाड़ियों में बिताया था। शाकुम्भरी देवी की पहाड़ियों में मां शाकुम्भरी देवी के प्राचीन मंदिर के अलावा आठवीं और दसवीं शताब्दी के मंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं। सम्राट हर्ष के समय भारत आया चीनी यात्री ह्वेनसांग सहारनपुर से होकर गुजरा था, उसने अपने वर्णन में सहारनपुर के बेहट कस्बे के विषय में लिखा है। ह्वेनसांग जब भारत की यात्रा पर आया तो वह इस क्षेत्र के तत्कालीन राज्य स्रुग्ना से होकर ही आगे बढ़ा। वह यमुना किनारे इस राज्य की राजधानी सुघ से होकर वृहदहट पहुंचा, जिसे वर्तमान में बेहट के नाम से जाना जाता है। बेहट से वह मायापुर गया, जिसे आज हरिद्वार के नाम से जाना जाता है। इतिहासकार एलेक्जेंडर कनिंघम की सन् 1862–68 में आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की रिपोर्ट में विस्तार से इसका उल्लेख किया है। ह्वेनसांग ने गंगा और यमुना के बीच के भाग को फसलों की दृष्टि से बेहद उन्नत और भरपूर फसल वाला बताया। उसके अनुसार इस क्षेत्र में समृद्ध लोगों का निवास है। यहां के निवासी उदार, ज्ञान के खोजी रहे हैं। यही नहीं बल्कि विदेशी यात्री अलबरूनी और मेगास्थनीज भी सहारनपुर से होकर ही आगे बढ़ा था। सहारनपुर गौरवान्वित है कि भक्ति काव्य परम्परा में राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हितहरिवंश का जन्म सहारनपुर के देवबंद कस्बे में हुआ था। वे सन् 1502 में जन्मे थे। भक्ति काव्य परम्परा में उनकी

मुस्लिम संत शाह हारून चिश्ती की मजार

संस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा का कोई सानी नहीं है। संत प्यारे जी महाराज, मुगल शहजादे दाराशिकोह के गुरु बाबा लालदास की नगरी होने का गौरव भी सहारनपुर को प्राप्त है। बाबा लालदास ने वर्षों यहां तप किया, उन्हीं के तप से यहां सहारनपुर की गंगा पांवधोई के नाम से प्रसिद्ध नदी का अवतरण हुआ था। यह नदी शकलापुरी नामक स्थान से धरती के नीचे अनेक छोटे–छोटे जलस्रोतों के जल के एकत्रित होने पर बनी है। लेकिन धीरे–धीरे यह पानी कम होता जा रहा है। बाबा लालदास पहुंचे हुए संत थे, ऐसे संत कि मुगल शहजादा दाराशिकोह भी उनका शिष्य हो गया था। शहजादा दाराशिकोह

श्री बागेश्वर महादेव मंदिर

की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं को बाबा लालदास ने शांत किया था। बाबा लालदास के बाड़े के नाम शाही कागजात के अनुसार एक सौ बीघा जमीन दी गई। साथ ही साथ अन्य खर्चों के लिए जलालपुर, दतावली, बड़ाखेड़ा, मनोहरपुर, कातिली, बटतली आदि की आठ सौ बीघा जमीन वक़्फ की गई। डॉ. कालिका रंजन कानूनगो ने दाराशिकोह और तपस्वी बाबा लालदास के दार्शनिक संवाद को अपनी पुस्तक में विस्तार से दिया है। सहारनपुर को उन बाबा फकीरादास की तपस्थली होने का भी गौरव प्राप्त है जिनके कहने मात्र से गांव मिरगपुर के निवासियों ने सदियों से मद्यपान और दूसरा कोई नशा नहीं किया है।

इस क्षेत्र की आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धता की कीमत यहां के नागरिकों को मध्यकाल में चुकानी पड़ी। जो भी आक्रमणकारी भारत आया वह इस क्षेत्र

को रौंदता हुआ आगे बढ़ा या फिर वापस होता हुआ यहां से गया। महमूद गजनवी ने तो सरसावा में तीन दिन तक कत्लेआम और लूटपाट की थी। गौरी भी सहारनपुर को रौंदता आगे बढ़ा था। गोरी के आक्रमणों के दौरान ही यहां के अनेक राजपूत परिवार राव हो गए थे। बाबर ने भी इब्राहीम लोदी को हराने के लिए अपना पड़ाव सरसावा में ही डाला था। सरसावा में बाबर का पड़ाव 13 जून, सन् 1526 में लगा था। तैमूरलंग भी हरिद्वार को लूटकर जब निकला तो यहां से कत्लेआम करता गुजरा। सहारनपुर के कस्बे सरसावा से इतनी आवाजाही होने के कारण प्रसिद्ध इतिहासकार कनिंघम ने सरसावा को गेटवे ऑफ यमुना कहा। इतने आक्रमणों और झंझावातों का नुकसान यहां के सांस्कृतिक महत्त्व के प्रतीकों और परम्पराओं को हुआ। गंगा और यमुना के बीच प्राचीन मंदिर, ऐतिहासिक इमारतें और यहां की समृद्धता सभी आक्रमणकारियों की भेंट चढ़ गए। सड़क किनारे बसने वाले गांव अपनी सुरक्षा के लिए सड़कों से दूर बस गए। सहारनपुर के अधिकांश पुराने गांव मुख्य मार्गों से दूर ही मिलेंगे। मूर्ति पूजा करने वाले यहां के निवासी थान अर्थात् स्थान पूजन करने लगे। अपने प्राण बचाने के लिए यहां के नागरिकों ने पीर–सैय्यदों का सहारा लिया और बदलती परिस्थितियों के बीच अपनी प्राचीन परम्पराओं को नया रूप दे दिया।

इस क्षेत्र में गुग्गा वीर का बहुत महत्त्व है। मानकमऊ स्थित गुग्गा वीर की म्हाड़ी पर प्रतिवर्ष बहुत विशाल मेले का आयोजन होता है। मेले में लाखों लोग गुग्गा वीर के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करने के लिए म्हाड़ी पर छड़ी चढ़ाते हैं और मत्था टेकते हैं। गुग्गा वीर की मां बाच्छल का जन्म सरसावा का माना जाता है। जाहरवीर गुग्गा ने महमूद की सेना से जंग की थी और अदम्य शौर्य दिखाया था। बादशाह अकबर के शासनकाल में सहारनपुर को सरकार का दर्जा दिया गया और यहां सिक्के ढलाई के लिए कारखाना भी स्थापित किया गया। सूती कपड़े का काम और लकड़ी पर नक्काशी यहां पहले से ही प्रसिद्ध रहा है। *आईने अकबरी* में सहारनपुर हवेली में बुने चौतार का उल्लेख हुआ है जो प्रति थान 2 से 9 मोहर तक मिलता था। सन् 1903 ई. में सहारनपुर में छियालिस हजार व्यक्ति जुलाहे का कार्य करते थे।

यहां की शिवालिक की पहाड़ियों के सौंदर्य को देखते हुए ताजमहल सरीखी खूबसूरत इमारत बनाने वाले बादशाह शाहजहां ने यहां एक शिकारगाह भी बनवाई। आज भी बादशाही बाग स्थित इसके विशाल खंडहर इसके पुराने गौरव को ताजा कर देते हैं। बादशाही बाग से लेकर शाकुम्भरी देवी खोल और मोहंड तक प्राकृतिक सम्पदा खूब फैली है। कहीं झरने, पानी के पोखर,

अनेक छोटी नदियां के बीच वन गुर्जरों की जीवनशैली रोमांचित और आकर्षित करती है। फिरोज शाह तुगलक के शासन काल में यहां गैंडा भी पाया जाता था। शिवालिक से प्राप्त जीवाश्म इतने महत्त्वपूर्ण थे कि कंपनी गार्डन के निदेशक डॉ. फोकनर ने अपनी रिपोर्ट जीव विज्ञानी चार्ल्स डार्विन को भेजी थी। स्वामी विवेकानंद ने सहारनपुर की तीन यात्राएं की। स्वामी दयानंद ने सहारनपुर में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की। शिवालिक की तलहटी औषधियों से भरी हुई है। सहारनपुर की कई उपज देश भर में खूब प्रसिद्ध हुई। यहां का सरौली आम, बालमखीरा, लौकाट, माल्टा, बासमती चावल, देवबंद के बेर दूर–दूर तक प्रसिद्ध थे। सहारनपुर सहित निकटवर्ती जिलों की लोकभाषा कौरवी के ही परिष्कृत रूप खड़ी बोली हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है।

यहां पुराने मंदिरों और भवनों पर भित्तिचित्र की परम्परा भी अनूठी परम्परा है। सहारनपुर नगर के साथ लगभग सभी कस्बों के 100 से 250 वर्ष पुराने मंदिरों और इमारतों में हजारों भित्तिचित्र बने हुए हैं। संरक्षण के अभाव में ये भित्तिचित्र दिन–प्रतिदिन नष्ट होते जा रहे हैं। ये तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक संरचना का खांचा बखूबी खींचते हैं। सहारनपुर की लोककला सांझी भी अपने आप में अनूठी है। शारदीय नवरात्रों में विधि–विधान के साथ सांझी माई, चांद–सितारों, तोते–टिकड़ियों को गोबर की सहायता से दीवार

कोटा गाँव में स्थित हवेली पर बने भित्तिचित्र

पर सजाया जाता है। सांझी में यहां की पुरानी लोक परम्पराओं का परिचय मिलता है। सांझी माई का नौ दिन पूजन करने के बाद मूर्तियों को नदी या तालाब में विसर्जित कर दिया जाता है। मिट्टी से सांझी बनाने की परम्परा भी बढ़ावा न मिलने के कारण कम होती जा रही है।

सहारनपुर के काष्ठ शिल्प को देश–दुनिया में कौन नहीं जानता। सहारनपुर के काष्ठ कारीगरों के हाथ अनगढ़ लकड़ी पर चलते हैं तो बेजान लकड़ी भी जीवंत हो उठती है। लकड़ी का वास्तविक मूल्य सैंकड़ों गुना बढ़ जाता है। यहां लकड़ी पर ऐसा–ऐसा सूक्ष्म कार्य किया जाता है कि देखने वाला मंत्रमुग्ध हो जाए। सहारनपुर से लकड़ी का सामान दुनिया के अनेक देशों में निर्यात किया जाता है।

वर्तमान में सहारनपुर के एक छोर पर मां शाकुम्भरी देवी का दरबार विराजमान है तो दूसरे छोर पर इस्लामिक शिक्षा का विश्व प्रसिद्ध केंद्र दारूल–उल–उलूम स्थित है। जनपद के कई हिंदू–जैन मंदिर और मस्जिद दर्शनीय हैं। देवबंद की रशीदिया मस्जिद के अलावा पश्चिमी स्थापत्य की कई चर्च भी अनूठी और सुंदर हैं। महिला शिक्षा के लिए महर्षि दयानंद द्वारा आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना कराई गई। ब्रिटिश पीरियड में सहारनपुर जनपद में विशाल नुमाइश लगा करती। सहारनपुर में लगने वाली यह नुमाइश सन् 1940–44 में इतनी प्रसिद्ध थी कि अलीगढ़ और मेरठ तो उससे कई गुणा पीछे थे। बाद में इस नुमाइश स्थल को पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों को दे दिया गया। आज भी यह स्थान नुमाइश कैंप के नाम से जाना जाता है।

हमें न केवल अपने सांस्कृतिक महत्त्व पर गौरव करना होगा बल्कि दूसरे लोगों को भी इसके विषय में सीना ठोककर बताना होगा। सांस्कृतिक महत्त्व के जो तथ्य, अवशेष या परम्पराएं नष्ट हो रही हैं, उनका संरक्षण भी करने के लिए प्रयास करना होगा। साथ ही साथ समय की गर्त में दबी उन परतों को भी निकालने में सहयोग देना होगा जो हमारे गौरवपूर्ण इतिहास का साक्ष्य हैं। हमारे प्रयास भावी पीढ़ी को गर्व की अनुभूति दें इससे बड़ा आनंद भला क्या हो सकता है।

लोकभाषा कौरवी की चहचहाहट

लोकभाषा की अपनी सुंदरता होती है। आवरण रहित विशुद्ध प्राकृतिक आचरण से समाज को जोड़ने का काम करती है लोकभाषा। सहारनपुर और निकटवर्ती जिलों की लोकभाषा कौरवी का चरित्र भी इससे इतर नहीं है। सदियों से इस क्षेत्र को जोड़ने का काम कर रही है कौरवी। कौरवी की ही शक्ति है कि संविधान को भी उसे मानकों के अनुरुप ढालकर देश की राजभाषा के रूप में अंगीकृत करना पड़ा। राष्ट्रभाषा हिंदी के जिस खड़ी बोली स्वरूप को संविधान द्वारा स्वीकार किया गया है, वह इसी कौरवी का परिष्कृत रूप है। लेकिन वहीं लोकभाषा के रूप में इसे जो सम्मान मिलना चाहिए था वह आज तक नहीं मिल पाया जबकि दूसरी लोक भाषाएं अपनी अलग पहचान बना चुकी हैं।

mnHko ,o ukedj.k& कुरू प्रदेश का नामकरण हस्तिनापुर के प्रतापी और तेजस्वी राजा कुरू के नाम से हुआ। कुरू वंश भी उन्हीं से चला। उनसे होने वाली संतानें आगे चलकर कौरव कहलाए। वास्तव में कुरू वंश में जन्म होने के कारण कौरवों के साथ–साथ पांडव भी कौरव ही थे। सम्पूर्ण कुरू प्रदेश में प्रचलित और सर्वमान्य लोकभाषा को इसीलिए कौरवी कहा जाता है। कौरवी का उद्भव शौरसैनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है। महाभारत काल और बाद में महाजनपदों के रूप में सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, शामली, मेरठ, बिजनौर, दिल्ली, देहरादून, हरिद्वार, सोनीपत, पानीपत, करनाल, यमुनानगर, बड़ौत, बागपत, रामपुर आदि के क्षेत्र को कुरू महाजनपद के नाम से जाना जाता था। इस सम्पूर्ण क्षेत्र की लोकभाषा में साम्य होने के कारण इसे कौरवी के नाम से अभिहीत किया गया। यद्यपि कुछ शब्दों की सीमा एक क्षेत्र विशेष तक ही है लेकिन फिर भी अधिकांश क्षेत्र की भाषा एक ही जैसी है।

dkjoh d dN 'kCnk dh lnjrk

ckCck& बोब्बो लोकभाषा कौरवी का बहुत सुंदर शब्द है। जो इस शब्द की पवित्रता, प्रयोग और गरिमा के विषय में जानते हैं, वे इस शब्द को सुनते ही इसे अनुभूत किए बिना नहीं रह सकते। यूं तो आमतौर पर बोब्बो का अर्थ बहन है लेकिन इस शब्द की व्यापकता और प्रभाव बहन शब्द से कहीं अधिक है। गांव में प्रयुक्त बोब्बो और शहर में प्रयुक्त भैय्या शब्द के बीच भी बहुत बड़ा अंतर है। भैय्या एक ऐसा चलाऊ शब्द बना दिया गया कि हर ऐरे–गैरे को

भैय्या का सम्बोधन दिया जा सकता है, इसमें भावना का होना आवश्यक नहीं है। लेकिन बोब्बो शब्द के साथ ऐसा नहीं है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यदि किसी ने किसी लड़की को बोब्बो कह दिया तो संबोधन के साथ पवित्र भाव आ खड़ा होता है। इस शब्द की व्यापकता और प्रभाव देखिए कि यहां अक्सर दादा अपनी पोती और पिता अपनी पुत्री को भी बोब्बो शब्द से संबोधित करते हैं। अंजान व्यक्ति भी किसी दूसरे के घर जाने पर बच्चियों और लड़कियों को बोब्बो का संबोधन देते हैं। बोब्बो शब्द का किसी दूसरी भाषा में न तो अर्थ तय किया जा सकता है न ही इसका कोई विकल्प मिलता है। है न कितना अद्भुत और मनमोहक शब्द बोब्बो!

cxM& इस क्षेत्र में एक शब्द प्रयुक्त होता है बगड़। बगड़ के बड़े मायने हैं। शहर और कुछ कस्बों को छोड़ दीजिए लेकिन गांव देहात में आज भी बगड़ के बिना घर अधूरा माना जाता है। घर का वह खुला भाग जहां धूप और हवा खुलकर आती है। पहले तो आटा पीसने, दालें इत्यादि खोटने और चटनी बनाने का काम बगड़ में ही किया जाता था। गांव–देहात में बगड़ भी जीवित है और बगड़ के साथ जुड़ी परम्पराएं भी। गांव में पूरा परिवार बगड़ में बैठकर ही बतियाता है। बगड़ में ही होली और दीवाली मनाने का प्रचलन है। बगड़ में ही गोवर्धन पूजा के लिए गोबर से सजाने का प्रचलन है। आज शहरों की 60 गजीय संस्कृति के बीच बगड़ गायब है साथ ही वहां समाप्त हो रही हैं वे सभी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं जिनका सीधा सम्बन्ध बगड़ से हुआ करता था।

vU; 'kCn vkj mudk vFk

कौरवी में अनेकानेक ऐसे शब्द हैं जिनकी अपनी सुंदरता है। कौरवी के कुछ प्रचलित शब्द और उनके अर्थ आपके सामने है। यह शब्दावली जहां इसको जानने–समझने वालों को आनंद प्रदान करेगी वहीं उन लोगों को कौरवी के सौंदर्य से परिचित कराएगी जो कौरवी को नहीं जानते हैं।

>|T>|& झूलना

y|Yg|& रेंगने वाला कीड़ा

ck|xk& तेज तर्रार व्यक्ति

gM|jk& मोहल्ले–गली में घूमने की प्रवृत्ति रखने वाली लड़की

u''kk& पति

gkíh& ट्यूबवैल का वह स्थान जहां उसका पानी गिरता है

pDd|&आटे की मिठाई

yf<;kj& युवाओं/किशोरों का मनमौजी समूह

ikgo.kk& मेहमान

lkg.kh& सुंदर युवती

lkg.kk& सुंदर युवक

Hkklik& खिचड़ी

ee& पानी

cktk& प्वाईंट

;kMk& दोस्त

;kMu& लड़की दोस्त

[kjlk& बसंत का महीना

pekLlk& वर्षा का महीना

gjok& लगाव

chjckUuh& औरत

>rj& बाल

BkYyh& काम न करने वाला व्यक्ति

gk.k n& होने दो

r&से

i&पर

xy&साथ

vkol& आ रहे हैं

tkol& जा रहे हैं

p& चाय

ul gh& यूं ही

ul uh& यूं नहीं

njk& दूर हो जाओ

njj& दूर हो जाओ

edk& अन्यथा

vd el ul dg jk& मैं यह कह रहा हूं

c& अबे

y& लो

n& दे दो

vl& क्या पूछने का तरीका

ul& ऐसे

jk& रहा

vUuh& नहीं तो

bl?k&इधर

ml?k&उधर

fdl?k&किधर

ftl?k&जिधर

bDdj&ऐसे

mDdj&वैसे

Egkjk&हमारा

Fkkjk&तुम्हारा

rUul&तुमने

eUul&मैंने

fpUuh&चीनी

vkYyl&आलू

vkÍk&आटा

HkkD[kk&भूखा

xokgM&निकटवर्ती गांव

il;rk&दशहरा

NikM&चौपाल

èkyht&दहलीज

uQjle&मुक्त

pkMk&कीचड़

njkuh&देवरानी

c'kklr&आबादी

okj gkuk&देर हो जाना

rji&तरफ

[kph Hkjuk& गले लगना

Xkkyk Qduk& झूठ बोलना

nMkd@jiV@rkMk&थप्पड़

jM& लड़ाई

dVk&गिलहरी

xkr& शरीर

NkYyd&छिलका

[kIkV.kh&खुजली

[knMh&रजाई

Ve& आभूषण

rkoy&जल्दी

vkch&आम

dgk&दुश्मनी

pkD[kk&उत्तम

yko@èkkj&निकट

[kkck&[kke– बिना बात

vth& यह संबोधन वाचक शब्द है

vk& यह संबोधन वाचक शब्द है

pcd& पेट का भीतरी दर्द

yxkb& स्त्री

bc& अब

ftc& जब

nMxh& दौड़

fp?kjuk& चिड़चिड़ापन

xkìu tkXxk& गाड़ने योग्य

dfèk& कभी

[kVdk& संदेह

<c& ओर

Vkdk fQV gkuk& प्रेम संबंध जुड़ना

Tkh& मन

pkD[kk& अच्छा

?kuk& अधिक

,u& बिल्कुल

dkyh& आलिंगन

ij& उधर

Qd ij& उपेक्षित करो

lfr;k& स्वस्तिक

समय के साथ–साथ ये शब्द धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। विशेषकर वे शब्द और कहावतें लुप्त हो रहे हैं जिनसे जुड़ी सामग्री का प्रयोग अब आधुनिक युग में नहीं हो रहा है। कौरवी के शब्दों पर व्यापक अध्ययन कर इन्हें संजोने की आवश्यकता है। साथ ही आवश्यकता है इस लोकभाषा को मंच, साहित्य और टीवी की भाषा बनाए जाने की ताकि इस भाषा को संजीवनी मिल सके और जीवित रह सके – अस्तित्व खोती एक सांस्कृतिक लोकभाषा।

लोकगीतों में गुनगुनाती सांस्कृतिक परम्पराएं

लोकगीत हमेशा से तत्कालीन समाज, समाज के लोगों के व्यवहार और रीति–रिवाजों को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। लोकगीत उन गीतों को कहा जाता है जो गीत किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं बल्कि सम्पूर्ण लोक द्वारा अपनाए जाते हैं। लोकधुनों से सजा, लोककंठों से गाया और लोकतत्त्वों को समाहित करने वाले गीत का नाम ही लोकगीत है। लोकगीत में आवरण और आडंबरविहीन समाज का वास्तविक परिदृश्य रचा–बसा होता है। लोकगीत तत्कालीन समाज, परिवेश और घटना विशेष का वैसा चित्र बनाते हैं जैसा वह होता है। निःसंदेह ढोलक की थाप पर बजने वाले इन सुरीले लोकगीतों में सम्पूर्ण लोक व्यवहार की झलक मिल जाती है। भारत में हर प्रदेश और क्षेत्रीय भाषाओं के अलग–अलग लोकगीत हैं। सहारनपुर में विवाह के विभिन्न अवसरों, धार्मिक पर्वों और अन्य सामाजिक अवसरों पर लोकगीत गाए जाते हैं। यहां के लोकगीतों की भाषा कौरवी है। यहां जहां एक ओर लोकगीतों में गम्भीर संस्कार बसे हैं वहीं दूसरी ओर हास–परिहास भी देखने को मिलता है।

सहारनपुर नगर में भले ही आधुनिकता के कारण लोकगीतों का स्थान पाश्चात्य संगीत ने ले लिया हो लेकिन कस्बाई और ग्रामीण अंचल अभी भी लोकगीतों को संजोए हुए है। सहारनपुर के सरसावा, देवबंद, नकुड़, नागल, सुलतानपुर,

विवाह में भात के अवसर पर लोकगीत गाती महिलाएं

बेहट, ननौता, तीतरो, गंगोह, मुजफ्फराबाद, पुवांरका आदि क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर परम्परा अनुसार लोकगीत गाए जाते हैं। बालक के पैदा होने से बड़ा होने तक विभिन्न संस्कारों पर लोकगीत गाने की परम्परा है। लोकगीतों में लोक परम्पराओं का रंग खूब निखर कर सामने आता है। तीज जैसे पर्व पर आज भी सहारनपुर के गांवों में युवतियां हास–परिहास और उल्लास के साथ लोकगीतों द्वारा अपने हर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। जन्म, छठी, मुंडन, सगाई, लगन, हलद, बान, मंढा, भात, घुड़चढ़ी, सेवल, जयमाला, फेरे, कंगना, विदाई, बधावा आदि अवसरों पर लोकगीत गाए जाने की परम्परा है। यहां के लोकगीतों में सजीवता और जीवंतता है। शादी के अवसर पर बन्ना, बन्नी और लाडो गीतों को अवश्य गाया जाता है। इन गीतों को शुभ अंक में गाया जाना महत्त्वपूर्ण होता है। इस क्षेत्र के धन–धान्य से सम्पन्न होने के कारण यहां फसलों पर आधारित लोकगीत भी बहुत प्रचलित हैं। सांझी, तीज, होली, नवरात्र आदि पर लोकगीत गाए जाने की विशेष परम्परा है।

dkjoh ykdxhrk dh >yd

cUuh@ykMk& बन्नी/लाडो शादी के अवसर पर लड़की के घर गाए जाते हैं। इन लोकगीतों में न केवल मनोरंजन होता है बल्कि लड़की के लिए कुछ सीख भी होती है। गीतों ही गीतों में लड़की को भावी परिस्थितियों में ढलने, चिंता न करने का संदेश होता है। कौरवी लोकगीतों की सुंदरता देखिए–

लाड़ो मत कर सोच मनों में
साजन घर जाना होगा
वहां दादी न बाब्बा होंगे
वहां देश पराया होगा।

इस लोकगीत के माध्यम से लड़की को समझाया गया है कि तुम चिंता मत करो। साहस कर खुद को तैयार करो। वहां का वातावरण नया होगा, तुम्हें उसी के लिए तैयार होना है।

अंगना में ढोलक बाजै खुशियों का तराना है।
लाड़ो तेरी शादी में तेरे बाब्बा को बुलाना है।

इस गीत में शादी समारोह का हर्षोल्लास स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

बगड़ बीच केला है, लाडो केला पकड़ कर रोई।
बाब्बा जी यो तो जुल्म करा म्ह काले बलम के ब्याई।
बेटी यो म्हारा दोष नहीं, म्हारे नाई करे सगाई।।

यहां इस लोकगीत में युवतियां गीत गाते हुए लड़की से चुटकी लेती हैं। उसकी ओर से गीत गाते हुए कहती हैं। साथ ही साथ गीत में उस पुरानी परम्परा का भी चित्रण किया गया है जिसमें नाई द्वारा ही रिश्ते तय कर दिए जाते थे।

बन्नी इतना ना शरमाओ,
मैं आंऊ जरा मुसकाओ।
बन्नी तेरे माथे का टीका,
बन्नी मेरे माथे का सेहरा,
टीके के सेहरा मिलाओ।
मैं आंऊ जरा मुसकाओ।।

शादी जैसे–जैसे निकट आती है वैसे–वैसे अपने मायके को छोड़ने का दुख लड़की के मन को भारी करता रहता है। ऐसे में उसकी सखी–सहेली इस प्रकार के गीतों को गाकर उसके मन को हल्का करती हैं।

बाबुल का घर छोड़ लाड़ली हो गई आज पराई रे।
जिन गलियों में बचपन बीता हो गई आज पराई रे।

बाब्बा रोवै ताई रोवै, रोवै सब परिवार रे,
छोटा–सा मेरा भैय्या रोवै, छोड़ चली मां–जाई रे।

यह विदाई का गीत परम्परागत है। इस लोकगीत की व्यापकता बहुत है। इस गीत के गाते समय वातावरण संवेदनशील हो जाता है, सभी की पलकें भीग जाती हैं और मन बहुत भारी हो जाता है।

cUuk

विवाह के अवसर पर लड़के के घर का वातावरण और अधिक हर्षोल्लास से भरा होता है। यहां एक सप्ताह पहले ही शाम के अवसर पर ढोलक पर लोकगीत बजने लगते हैं।

बन्ना खेले गलियों में उड़ावै पतंग
बन्ने बाब्बा बुलावे चलो लाडले
तुम्हें बन्नी दिखावै करो ना पसंद
तुमने बन्नी का फोटो मंगाया नहीं
लेके मेरे कमरे में सजाया नहीं
बिना देखे बताओ करूं क्यां पसंद
मुझे कहने में आती शरम।।।

इस लोकगीत में लड़के की पतंग उड़ाने में रुचि को दर्शाया गया है कि अभी उसमें बचपना बाकी है। साथ ही वह लड़की का फोटो दिखाए जाने और अपने शर्मीले व्यवहार की बात करता है।

लड़के के शर्मीले व्यवहार पर भाभी, चाची, बहनें गीत गाती हुई कहती हैं

जरा सामने तो आओ बनडे
इसमें शरमाने की क्या बात है।
तेरे बाजे बजे हैं बाजार में
तेरी घोड़ी सजी है दरबार में
जब प्यारे बाब्बा जी तेरे साथ हैं।

बन्ने के सुकुमार व्यक्तित्व पर आधारित यह लोकगीत भी बहुत सुंदर है

पानी से पतला मेरा बना फूलों से हलका मेरा बना
उसके बाब्बा जी ने यही अरज किया
जो कोई तोड़ेगा धनुष वो ही ब्याहेगा सिया।।

लोकगीतों में पढ़ाई के महत्त्व को स्थान मिला है। यह लोकगीत देखिए

मैं ले दूंगी किताब बन्ने, कॉलिज पढ़ने जाना।
बाबा को नमस्ते करना, ताऊ को नमस्ते करना।
वो देंगे आशीर्वाद बन्ने, पास होकर आना।
झुका के नीची गर्दन बन्ने, हाथ जोड़ आना।।

चढ़त पर तैयार दूल्हे के लिए यह लोकगीत महिलाएं अक्सर गाती हैं

दो हंसों की मोटर दरवाजे खड़ी रे,
आज देखो बन्ना ससुराल चला रहे।
बाबा को छोड़ चला, ताऊ को छोड़ चला,
दादी को करके प्रणाम चला रहे।।

भात दिए जाने के अवसर पर यह लोकगीत सहारनपुर सहित सम्पूर्ण पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खूब गाया जाता है

मैरो ऐसा भर्‌यो भात कै रूक्का पड़जा रे भैय्या

इस लोकगीत में साली अपने जीजा से देवबंद के मेले में जाने की इच्छा व्यक्त करती है। यह लोकगीत लम्बे समय से सहारनपुर में खूब लोकप्रिय है।

जिज्जा रे म्ह तो सैर करूंगी, देबन के मेले म्ह।

जन्म संस्कार–

रिसीपाल के होणै म्ह।
मन्नैं तीन्यों नणद बुलाई पिया।
बड़ी नणद मेरी बिंदी मांग्गै,

बिचली चंदन हार पिया,
छोटी नणद म्हारी सायकल मांग्गै,
सांयकल की म्हारै आण पिया।
रिसीपाल के होणे म्ह

चूड़ियां बेचने वाले मनिहार के संदर्भ में यह लोकगीत भी अक्सर विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है।

गलियों री गलियों बीबी मनरा फिरै
री बीबी मनरा को लाओ ना बुलाय,
चूड़ा तो मेरी जान, चूड़ा तो हाथी दांत का।

सांझी पर्व पर लड़कियां इस गीत को बड़े उत्साह के साथ गाती हैं।

सांझी रे मांगे हरा–भरा गोबर।
कहां से लांऊ सांझी हरा–भरा गोबर।

तीज के अवसर पर गाए जाने वाले इस लोकगीत में सास–बहू के बीच व्यंग्य की सुंदरता देखिए

कच्चे निम्बु कच्चे कधी तो पक्के होंगे।
लड़लै सास्सु लड़लै कधी तो न्यारे होंगे।

सहारनपुर में धीरे–धीरे लोकगीतों का प्रचलन कम होता जा रहा है। महिला संगीत की जगह डीजे का बढ़ता प्रभाव और लोकगीतों के प्रति उच्च शिक्षित युवतियों की उदासीनता के कारण लोकगीत सिमट रहे हैं। लेकिन ग्रामीण अंचल में अभी भी लोकगीत प्रभावी है।

गांवों के नाम ही उनकी पहचान

कहते हैं कि नाम में क्या रखा है लेकिन यदि बात इतिहास की हो तो हमें कहना ही होगा कि नाम में बहुत कुछ रखा है। किसी भी क्षेत्र के गांव और कस्बे का नाम उसके इतिहास को टटोलने में बहुत सहायक होता है। इतिहास के साक्ष्य घर, मंदिर, मस्जिद, दुकानें या अन्य कोई स्थापत्य हो सकता है समय के साथ बदल जाए किंतु किसी क्षेत्र विशेष का नाम बहुत लंबे समय से वही रहता है। जनपद सहारनपुर का इतिहास भी यहां के गांवों के नामों में छिपा हुआ है। परत दर परत गांवों को उनके नाम के अनुसार पढ़ने की आवश्यकता है। जनपद में गांवों के नाम जहां हिंदू और मुस्लिम धार्मिक परम्पराओं और व्यक्ति विशेष के नामकरण पर आधारित हैं। युद्ध और योद्धाओं से जुड़ी परम्पराओं के नाम पर भी अनेक गांवों के नाम हैं। प्राचीनता का द्योतक शब्द बुड्ढ़ा खेड़ा तो यहां पर कई गांवों का नाम है, इन गांवों में भी प्राचीनता के अवशेषों को तलाशने की आवश्यकता है। खेड़ा और खेड़ी शब्द के साथ लगे कई गांवों के नाम भी उनकी प्राचीनता की ओर इंगित करते हैं। श्रीकृष्ण और पांडवों से संदर्भित गांवों के नाम इस क्षेत्र में उनकी महत्ता को समझने के लिए पर्याप्त हैं। लोदी, मुगल और अफगानों का इस क्षेत्र में समय–समय से वर्चस्व रहा ऐसे में उनके नाम से जुड़े गांव और मोहल्ले यहां काफी संख्या में हैं। अपनी

इच्छानुसार गांवों के नाम बदलने के कारण यहां आधा दर्जन से अधिक ऐसे गांव भी मिलते हैं, जहां के दो–दो नाम आज भी प्रचलित हैं। समाज ने उन दोनों नाम को ही स्वीकार कर लिया। इस क्षेत्र में आम और बांस का अधिक महत्त्व होने के कारण कई गांवों के नाम के साथ आम, अंब और बांस शब्द जुड़ा हुआ मिलता है। अनेक गांवों का नाम वहां की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण भी पड़ा होगा, ऐसा उनके नाम को जानकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। आइए, देखते हैं कि सहारनपुर जनपद के गांवों के नाम में इतिहास की झलक कैसे मिलती है।

fgUnw ijEijkvksa ls lEcfU/kr uke

ब्राह्मण माजरा, भगवानपुर, धर्मपुर गुर्जर, शीतला खेड़ा, महेशपुर, माधोपुर, देवपुरा, गोकलपुर, रामपुरी, रावणपुरखुर्द, सोना अर्जुनपुर, गोपाली, मेघराजपुर, अमरपुरी गढ़ी, सिंहखेड़ा, गणेशपुर, रानी खेड़ी, शंकलापुरी, कृष्णी, शिवदासपुर, किशनखेड़ी, नारायणपुर, गोविंदगढ़, परशुरामपुर, रायपुर, रामखेड़ी, सतसरा, नागराजपुर, कैलाशपुर, चौरा देव, नित्यानंदपुर, हरिपुर, गोविंदपुर आदि गांव हिंदू परम्पराओं के नाम पर आधारित गांव हैं।

eqfLye ijEijkvksa ls lEcfU/kr uke

नवाजपुरा, सलेमपुर, सिंकदरपुर, शहजादपुर, अकबरपुर, शाहजहांपुर, बादशाहपुर,

कासिमपुर, मोहिदीनपुर, शाहपुर, नासिरपुर, इसहाकपुर, इस्माईलपुर, फतेहउल्लापुर, बेगमपुर, खुदाबख्शपुर, हसनपुर, शब्बीरपुर, मुबारिकपुर, निजामपुरा, वाजिदपुर, असलमपुर, शाहबुद्दीनपुर, काजीपुरा, खेड़ा मुगल, फतेहपुर, अब्दुल्लापुर, हाजीपुर, सुलतानपुर, हैदरपुर, इब्राहीमपुर, मुगल माजरा, लोदीपुर, अलाउद्दीनपुर, मुल्लापुर कदीम, औरंगजेबपुर, शेखपुरा, अलीपुर आदि गांव मुस्लिम परम्पराओं पर आधारित नाम हैं।

Hkkxksfyd fofoèkrkvksa ij vkèkkfjr uke

पहाड़पुर, कुआंखेड़ा, ऊंचा गांव, घाटमपुर, चढ़ाव, दरियापुर, कालूवाला पहाड़ीपुर, सड़क दूधली, दरा कोटतला, मेघ छप्पर, पंचकुआ आदि अधिकांश गांवों के नाम वहां की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण रखे गए।

;|)] ;|){k= vkfn l| t|M| xkok| d| uke

रणखण्ड़ी, रणदेवा, भटपुरा, सौराणा, खड़गपुर, पहलवानपुर, रणसुरा, रणदेवी, रणमलपुर, शेरपुर, बहादुरपुर, बीरपुर, कोटा, फतेहपुर, बीराखेड़ी, गढ़मलपुर, रणसुरा आदि।

[kk|kUu] mit] Ñf"k vkj o{k vkfn ij vkèkkfjr xkok d uke

गुडगजपुर, गुड छप्पर, नया बांस, जौंधेबांस, सौंधेबांस, बांसदेई, मक्काबांस, पुर बांस, मांडेबांस, हरिया बांस, अकबरपुर बांस, अंबौली, आमकी, बड़गांव, बड़कला, करौंदी, बेहड़ा, बागाखेड़ी, बेरखेड़ी, खजूर वाला, कपासा, इमलिया, बेरी तगा आदि गांव हैं।

अपना परिचय स्वयं देते मोहल्ले

सहारनपुर जनपद की प्राचीनता का अनुमान अभी तक नहीं लगाया जा सका है क्योंकि अभी तक यहां की विभिन्न पुरातन स्थलियां उपेक्षित ही हैं और उन पर लगातार कब्जे होते जा रहे हैं। यद्यपि सहारनपुर नगर यहां के कस्बों से अधिक पुराना नहीं है। कस्बों की संस्कृति सहारनपुर नगर की अपेक्षा कहीं अधिक पुरानी है। मध्यकालीन आक्रमणों के दौरान सहारनपुर नगर एक केंद्रीय बस्ती के रूप में बसा था। सहारनपुर नगर के तत्कालीन स्वरूप को समझने के लिए जहां पुराने सहारनपुर के मोहल्लों के नामों पर दृष्टिपात करना आवश्यक है वहीं बदलते और आधुनिकता की चादर ओढ़ते सहारनपुर को समझने के लिए नए मोहल्ले और आधुनिक कॉलोनियों को देखना भी आवश्यक है।

tkrh; lajpuk vkj dk;k dk vkèkkj ij uke

सहारनपुर के अनेक मोहल्लों के नाम जातीय संरचना और नागरिकों द्वारा किए जाने वाले उनके कार्यों के आधार पर रखा गया था। वास्तव में इन नामों में से अधिकांश नाम उसी समय के हैं जिस समय सहारनपुर को नगर के रूप में व्यवस्थित किया गया था। एक जाति और एक प्रकार का कार्य करने वाले लोगों को एक ही स्थान पर बसाया गया और उन्हीं के नामों से मौहल्लों का नामकरण कर दिया गया। यह वर्गीकरण कार्य विशेष और समुदाय विशेष की एक ही स्थान पर उपलब्धता को लेकर किया गया था। यहां इस प्रकार के मिश्रान, मुंशीयान, महाजनान, डकौतान, कहारान, अचारजान, मेमारान, मनिहारान, मुफ्तियान, नीलगरान, हिरनमारान, मालियान, जोगियान, पंसारीयान, कसेरान, अंसारियान, हलवाईयान, छिपियान, खुमरान, चौब फरोशान, हिन्दुस्तानियान, बहलवानान, संगीयान, जाटवान, बाजदारान, मोहसिनयान, आहंगरान, मुत्रीबान, टोली कलालान, बंजारान, बाजदरान, आतिशबाजान, मछीयारान, छीपियान, अहीरान, आली अहंग्रान, खाकरोबान, बाग कलालान, शीराजान, चंवरबरदारान, ख्वाजा जादगान, चौधरीयान, कायस्थान आदि नाम प्रचलित हैं। इन नामों के पीछे इतिहास और यहां से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों को तलाश निकालने की अभी पूरी संभावनाएं शेष हैं।

ljk; oky ekgYyk d uke

सहारनपुर जनपद की मध्यकाल में केंद्रीय स्थिति और यहां के तत्कालीन महत्त्व को समझने के लिए यहां दर्जनों मोहल्लों के नामों के साथ सराय का जुड़ा होना पर्याप्त साक्ष्य है। सराय धर्मशाला को कहते हैं। यमुना पार करने वाले यात्री सहारनपुर में इन सरायों में रुककर अपने गंतव्यों की ओर आगे बढ़ते थे। यहां चक सराय, ख्वाजा अहमद सराय, भंवा सराय, हजीरा सराय, दाऊद सराय, लोहानी सराय, गणपत राय, सराय फैज अली, सराय कलंदर बख्श, टोपिया सराय, मेहंदी सराय, सराय अहमद अली, सराय मरदान अली, सराय फैज अली, सराय शाह जी, सराय हिशामुद्दीन आदि मोहल्ले प्रमुख हैं, जिनके साथ सराय शब्द जुड़ा हुआ है।

xt oky ekgYyk d uke

फारसी शब्द गंज का अर्थ खजाना या फिर बाजार होता था। सहारनपुर में कई बाजार और मोहल्लों के नामों के साथ गंज शब्द जुड़ा हुआ है। जैसे नवाब गंज, मोरगंज, हीरा गंज, मीर गंज, कक्कड़ गंज, शहीद गंज, प्रताप गंज आदि।

o{kk dh fo'k"krk vkèkkfjr uke

नगर में नीमतला, इमलीतला, खजूरतला, बड़तला यादगार और पिलखनतला नाम से मौहल्लों के नाम इस बात का प्रतीक है कि इन क्षेत्रों में इन वृक्षों का विशेष महत्त्व था। ये सभी पुराने शहर के मोहल्ले हैं। अब तो नीम, इमली, पिलखन और बरगद आदि पेड़ लगाने की परम्परा ही समाप्त हो गई है।

ijk] ij vkj ije oky uke

नाजिरपुरा, गोपालपुरा, दरराजपुरा, सुक्खुपुरा, किशनपुरा, हरीनाथपुरा, वलीपुरा, ओजपुरा, बख्शपुरा, पठानपुरा, हसनपुर, मुल्लापुर, सांवलपुर नवादा, मोहम्मदपुर माफी, ताहरपुर, बादशाहपुर, इलाहीपुरा, खान आलमपुरा, मौअज्जमपुरा, माहीपुरा, प्रकाशपुरम्, जेजे पुरम्, अंबेडकरपुरम्, दरगाहपुर।

ijh vkj èkke oky ekgYyk d uke

विष्णुपुरी, इंद्रपुरी, आनंदपुरी, मदनपुरी, रामचंद्रपुरी, शिवपुरी, न्यू शिवपुरी, नंदपुरी, दरा शिवपुरी, दुर्गापुरी, लक्ष्मणपुरी, रामपुरी, यादवपुरी, नारायणपुरी, ब्रह्मपुरी, दामोदरपुरी, जनकपुरी, विष्णुधाम, लक्ष्मीधाम, पार्वती धाम।

uxj oky ekgYyk d uke

नगर शब्द जोड़कर कॉलोनियों के नाम रखने की परम्परा सहारनपुर में खूब चली। इनमें से गोपाल नगर, न्यू गोपाल नगर, संत नगर, शक्ति नगर, रंजीत नगर, ज्वाला नगर, मंगल नगर, माधो नगर, न्यू माधो नगर, माया नगर, मालवीय नगर, तिलक नगर, जवाहर नगर, भीष्म नगर, गांधी नगर, कृष्ण नगर, प्रताप नगर, कृष्णा नगर, जैन नगर, राम जीवन नगर, खैर नगर, आजाद नगर, आनन्द नगर, जाटव नगर, आदर्श नगर, विजय नगर, पटेल नगर, मोहन नगर, शारदा नगर, मोहन नगर, नेहरु नगर, सुभाष नगर, लक्ष्मी नगर, गोविंद नगर, अर्जुन नगर, मक्खन नगर, नवीन नगर, शिवाजी नगर, शंकर नगर, विजय नगर, चंद्र नगर, राजेंद्र नगर, प्रद्युमन नगर, साहिब जी नगर, सुदर्शन नगर, जनक नगर, जाफर नगर, हिम्मत नगर, शास्त्री नगर, हकीकत नगर, विनय नगर प्रमुख हैं।

fogkj oky ekgYyk d uke

गीतांजलि विहार, पवन विहार, गणपति विहार, पुष्पांजलि विहार, राधा विहार, साधु विहार, दिनेश विहार, उपवन विहार, गोपाल विहार, नीलकण्ठ विहार, ब्रज विहार, मोहित विहार, शिवेंद्र विहार, संजय विहार, राम विहार, माधो विहार, राशिद विहार, रूप विहार, चंद्र विहार, सविता विहार, अंकित विहार, वेद विहार, विनोद विहार, कपिल विहार, न्यू कपिल विहार आदि।

dkykuh oky ekgYyk d uke

अंग्रेज़ी शब्द कॉलोनी शब्द जोड़कर भी अनेक मौहल्लों के नाम रखे गए। देखिए– ऑफिसर कॉलोनी, गिल कॉलोनी, वर्धमान कॉलोनी, मौअज्जम कॉलोनी, गीता कॉलोनी, अजीज कॉलोनी, म्यूनिसिपल कॉलोनी, गांधी कॉलोनी, श्यामपुरी कॉलोनी, दिगंबर जैन कॉलोनी, सम्राट विक्रम कॉलोनी, हयात कॉलोनी, शिवधाम कॉलोनी, मंसूर कॉलोनी, हाकमशाह कॉलोनी, गुड्डू कॉलोनी, अहमद कॉलोनी, कमेला कॉलोनी, चमन कॉलोनी, इनाम कॉलोनी, एकता कॉलोनी, चांद कॉलोनी, नदीम कॉलोनी, आजाद कॉलोनी, गत्ता मिल कॉलोनी, इंदिरा कॉलोनी, पीएनटी कॉलोनी, चंदोबाई कॉलोनी, राधा किशन कॉलोनी, विश्वकर्मा कॉलोनी, जगदीश कॉलोनी, एवन कॉलोनी, एमआईजी कॉलोनी, लक्ष्मण सिंह कॉलोनी, फ्रैण्डस कॉलोनी, दयाल कॉलोनी, गिल कॉलोनी, एसपीएम कॉलोनी, हाईडिल कॉलोनी, टीचर्स कॉलोनी, पीडब्लूडी कॉलोनी आदि।

cLrh 'kCn oky ekgYy

नूर बस्ती, नई बस्ती, मलिन बस्ती, वाल्मिकी बस्ती, झाड़ेवाली बस्ती, कोढ़ी बस्ती आदि।

x< 'kCn oky ekgYy

बिहारीगढ़, मूंगागढ़, मातागढ़, लाईया गढ़, हबीबगढ़, रामगढ़, कोलागढ़ आदि।

dN vU; dkykfu;k

यहां नगर की कुछ अन्य कॉलोनियों के नाम दिए हैं। जिनके नाम पढ़कर आप वहां की विशेषता को समझ सकते हैं। सेंटर वेयर हाउस, नुमाईश कैंप, गढ़ी मलूक, सब्जी मंड़ी, जाफर नवाज, मीर कोट, शाहमदार, मटिया महल, आर्य समाज, पंचायती मंदिर, चौंताला, पुराना बजाजा, हारुन चिश्ती, शंकर मंडी, मुबारकशाह, मिसर मुरार, प्रेम वाटिका, खालसा गार्डन, मेहता गार्डन, आवास विकास, किशोर बाग, मंजुलिके गार्डन, नखासा, शाह विलायत, हाईडिल क्वाटर्स, जेल कंपाउंड, बेरी बाग, कंपनी बाग, ज्ञान गार्डन, दया गार्डन, साबरी का बाग, गोटेशाह, हाकमशाह, शाह नूर जी, खलासी लाइन, घरामी मंडी, हीरा ग्वाला मण्डी, दीनानाथ, याहयाहशाह, रेलवे क्वाटर्स, मिशन कंपाउंड, डीएससो कंपाउंड, चर्च कंपाउंड, कुतुबशेर, कोढ़ी टिल्ला, चाह अंग्रेज, चाह छबीली आदि।

ekgYyk d uke e u;kiu

वर्तमान में व्यवसायिक प्रतिस्पर्द्धा और आधुनिकता के कारण कॉलोनियों के नामों में भी नयापन आ गया है। पैरामाउंट, सेक्टर 99, सनसिटी, रिंकी एनक्लेव आदि। इन नामों में बदलते सहारनपुर की झलक मिलती है।

शाकुम्भरीः आस्था का द्वार

माता शाकुम्भरी (शाकंभरी) देवी का प्राचीन मंदिर सहारनपुर में सदियों से आस्था और श्रद्धा का सबसे बड़ा केंद्र रहा है। देवी माता के दर्शन करने के लिए यहां प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु उमड़ते हैं। शिवालिक की गोद में स्थित माता के मंदिर तक पहुंचना एक रोचक यात्रा है। यह स्थल न केवल धार्मिक भावना लेकर पहुंचने वालों को अध्यात्म का सुख प्रदान करने वाला है अपितु प्रकृति प्रेमियों और एकात्म से प्रेम करने वालों के लिए भी विशेष स्थल है।

इस स्थल की महत्ता और ऐतिहासिकता को प्रमाणित करने के लिए इतना पर्याप्त है कि नन्द से हारने के बाद चंद्रगुप्त और चाणक्य ने माता शाकुम्भरी के अंचल में ही शरण ली थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने शाकुम्भरी देवी मंदिर को स्रुघ्न प्रदेश का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल बताया था। भागवत पुराण में सहारनपुर का सांस्कृतिक इतिहास प्राप्त होता है, उसमें शाकुम्भरी देवी स्थल का विशिष्ट स्थान है। वर्तमान में शाकुम्भरी देवी मंदिर तथा निकटवर्ती क्षेत्र जसमौर के राज परिवार के अधिकार में है। सहारनपुर गजेटियर तथा सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा लिखित ऐतिहासिक उपन्यास विष्णुगुप्त के आधार पर इस मंदिर की स्थिति 326 ईसा पूर्व के आस–पास सिद्ध होती है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध शाकुम्भरी देवी मंदिर

शाकुम्भरी देवी के मंदिर जाते भक्तगण

शाकुम्भरी देवी मंदिर में चार प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं–शाकुम्भरी देवी, दायीं ओर भीमा देवी एवं भ्रामरी देवी और बायीं ओर शताक्षी देवी की प्रतिमा विराजमान है। ये सभी मां दुर्गा के ही रूप कहे जाते हैं। दुर्गा सप्तशती के 11 वें अध्याय में उक्त चारों देवियों के स्वरूप का तात्विक वर्णन मिलता है। पुराणों की धारणानुसार देवी ने एक हजार दिव्य वर्षों तक प्रत्येक मास के अंत में एक बार शाकाहार करते हुए घोर तप किया था। उनकी तपस्या की चर्चा सुनकर हजारों श्रद्धालु एवं ऋषि–मुनि उनके दर्शनार्थ वहां पहुंचे तो देवी ने शाकाहार से ही उनका आतिथ्य सत्कार किया था।

egkHkkjr dk ,d 'yksd g&

दिव्यं वर्षसहस्रं हि शाकेन किल सुव्रता
आहारं सकृत्वती मसि मासि नराधिपः
ऋषयोअभ्यागतास्तत्र देव्या भक्त्या तपोधनाः
आतिथ्यं च कृतं तेषा शाकेन किल भारत
ततः शाकंभरीत्येवनाम तस्याः प्रतिष्ठतम ।।

स्कंद पुराण में लिखा है कि प्रत्यक्ष सिद्धिप्रद और पापों का नाश करने वाली देवी ने प्राचीन काल में सौ वर्ष तक चलने वाले युद्ध के दौरान शाक आदि से आश्रित तपस्वी मुनियों की उदर पूर्ति की थी। इसी भगवती का नाम शाकंभरी पड़ा।

egkHkkjr e bl 'kfDrihB dk ekgkRE; dN bl idkj g&

वहां जाकर पुरुष यदि पवित्र ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ तीन दिन तक शाक खाकर रहे तो उसे अन्यत्र बारह वर्ष तक शाक साधना करने के समान फल की प्राप्ति होती है।

शाकुम्भरी के रूप में देवी का शाक–कंदमूल लेकर पदार्पण हुआ। बेहट तहसील में शाकुम्भरी देवी का अत्यंत जागृत पीठ है। यहां देवी की स्वयंभू प्रतिमा है। कठिन मार्ग और जंगल होने के कारण इस स्थल के बीच पड़ने वाले नगर का नाम वृहद्हट हुआ, जिसे वर्तमान में बेहट के नाम से जाना जाता है। चाहमान क्षत्रियों का नाम भी माता शाकुम्भरी देवी के साथ जुड़ा हुआ है। माता शाकुम्भरी देवी का मंदिर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण परिक्षेत्र बेहद प्राचीन है। इस क्षेत्र से समय–समय पर मिलने वाले प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। शिवालिक की गोद में स्थित इस मंदिर के निकट प्राकृतिक सुषमा का अगाध भण्डार है। मां शाकुम्भरी देवी के अलावा कई और मंदिर यहां दर्शनीय हैं। यहां पहुंच कर आप पर्वतों के बीच स्थित मंदिरों को देखने के लिए आप छोटी–छोटी पद यात्राओं का आनन्द ले सकते हैं।

ऐतिहासिक जलाशयः अपनी-अपनी कहानी

प्राचीन भारत में कूप सरोवर खुदाई दकार्गल या दगार्गल कहलाती थी। दकार्गल संबंधी ग्रंथ के रचियता मनु का उल्लेख *वृहत्संहिता* में प्राप्त होता है। जिसके अनुसार रेतीली मिट्टी पानी को काषाय बना देती है, भूरी मिट्टी के संसर्ग से जल क्षार हो जाता है, पीत मृत्तिका का भूगर्भस्थ जल लवणयुक्त होता है और नीली मिट्टी का पानी शुद्ध, मीठा और सुस्वादु होता है। प्राचीन भारत में जलाशय बनाने के लिए स्थान के लिए अनुभवों से निकला यह वर्गीकरण प्रयोग में लाया जाता था।

तुलसीदास जी ने लिखा है मध्य बाग सरु सोह सुहावा, मनि सोपान विचित्र बनावा। *रामचरितमानस* में एक अन्य स्थान पर लिखा है– तडाकु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत। परम रम्य आरामु यहु जो रामहु सुख देत। भारत में जल विज्ञानियों को कई नामों से जाना जाता था। राजस्थान में गजधर कहा जाता था। अपने साथ तीन हाथ लंबी लोहे की छड़ रखने के कारण इनको गजधर कहकर पुकारा जाता था। गजधरों को अपने काम का भरपूर पारिश्रमिक मिलता था साथ ही समाज में इनको खूब सम्मान मिला करता था। सरोवर और कूप निर्माताओं को स्थपति, मटकूट, कोल, नौनिया, ओढ़िया, दुसाध, परिहार आदि भी कहा जाता था। छत्तीसगढ़ में रामनामी को तालाबों को अच्छा जानकार माना जाता था। घटोइया बाबा, लाखा बंजारे, नीरघंटी, नागयष्टि स्तंभ के साथ–साथ अनेक धार्मिक परम्पराएं जलाशयों से जुड़े महत्त्वपूर्ण अंग हुआ करते थे। समय के साथ–साथ ये सभी पीछे छूट गए। धार्मिक परम्पराएं भी औपचारिकता बन कर रह गई हैं। सहारनपुर और निकटवर्ती जनपदों में भी जलाशयों की अपनी अनूठी परम्परा थी। अभी भी कुछ जलाशय हैं जिनका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है लेकिन धीरे–धीरे इन जलाशयों के प्राचीन स्वरूप को निगला जा रहा है। जनपद की सांस्कृतिक यात्रा के दौरान अनेक जलाशय मिले, जिनकी अपनी ही कहानियां है। इस दौरान कई जलाशय ऐसे भी मिले जिनके साथ महाभारतकालीन प्रंसग जुड़े हुए हैं और स्थानीय लोग गर्व के साथ उनका उल्लेख करते हैं। आइये, जानते हैं, सहारनपुर के कुछ जलाशयों की कहानी–

J)k dk dæ lkuk vtuiqj dk tyk'k;

रामपुर मनिहारन कस्बे में स्थित गांव सोना अर्जुनपुर का जलाशय श्रद्धा का

सोना अर्जुनपुर का मनोरम जलाशय

बड़ा केंद्र है। समय–समय लगने वाले पर मेले और यहां के चमत्कारी जलाशय के जल से जुड़ी मान्यताओं के विषय में सुनते ही लोग यहां दौड़े चले आते हैं। यह जलाशय बेहद रमणीक है। मान्यता है कि बाबा सिद्ध महाराज के पवित्र मंदिर के चारों ओर बने इस जलाशय की मिट्टी का लेप करने से गठिया–बाय का रोग दूर हो जाता है। तपस्वी बाबा सिद्ध महाराज दिव्य शक्तियों के स्वामी थे। वे प्राकृतिक चिकित्सा के जानकार भी थे। बाबा ने इस जलाशय की मिट्टी को चंदन बताया, आज भी श्रद्धालु मिट्टी को चंदन के समान मानते हुए इसका आदर करते हैं। गठिया–बाय के रोगी यहीं रहकर मिट्टी का लेप करते हैं। मैंने स्वयं कई रोगियों से बात की जो यहां की मिट्टी का लेप करने से अपने गठिया के दूर होने की जानकारी साझा कर रहे थे। यहां की मिट्टी पर शोध किए जाने की भी आवश्यकता है ताकि मिट्टी में छिपे प्राकृतिक चिकित्सीय गुणों पर अध्ययन कर उसकी जानकारी दुनिया के समक्ष लाई जा सके। जलाशय की स्वच्छता को लेकर ग्रामीणों द्वारा बेहद सतर्कता बरती जाती है। जलाशय के चारों ओर गणेश जी, ठाकुर जी, शंकर भगवान, हनुमान जी आदि देवताओं की अनेक प्रतिमाएं स्थापित हैं।

lkjkuk dk ikMo okyk rkykc

सहारनपुर से सरसावा मार्ग पर 11 कि.मी. दूर एअर फोर्स स्टेशन के मुख्य द्वार के सामने बसा है गांव सौराना। सौराना गांव एक ऐतिहासिक गांव हैं, जो कई बार उजड़ा और कई बार बसा। गांव सौराना से अधिक प्राचीन यहां का पांडव वाला तालाब है। पाण्डव वाला तालाब के विषय में सदियों से एक किंवदन्ती यहां प्रचलित है कि इस तालाब के किनारे कभी पांडवों ने अपना डेरा डाला था। तभी से गांव के इस तालाब का नाम पाण्डव वाला तालाब हो गया। पांडव वाला तालाब के निकट मां काली का प्राचीन मंदिर है। जिसमें काली मां की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है। तालाब की प्राचीनता का

अनुमान इससे लगाया जा सकता है इस तालाब की गहराई से आज भी प्राचीन ईंटें निकलती हैं। इन ईंटों का समय काल करीब 2000 से 2500 वर्ष पुराना आंका गया है। गांव में दो अन्य स्थानों से खुदाई में दो वलय कूपों का निकलना भी इस स्थल की प्राचीनता पर मुहर लगाता है। ये दोनों वलय कूप सिंधुकालीन कूपों से मेल खाते हैं। राजस्थान के भाटों की कहानी में भी सौराना के पांडव वाले तालाब का वर्णन आता है।

_f'k;k dh riLFkyh l;dM

अलौकिक, अद्भुत और प्रकृति का वरदान है–सहंस्रा ठाकुर का प्राचीन सूर्यकुंड। अधिकांश सहारनपुरवासी भी इस पवित्र तपोभूमि और कुंड से अपरिचित ही हैं। हिमालय की गोद से झर–झर बहते हुए और पर्वतों में फैली औषधियों से अठखेलियां करता हुआ जल जब इस कुंड में गिरता है तो उसे देखते हुए थकान कोसों दूर हो जाती है। सहारनपुर से करीब 40 किमी दूर शाकुम्भरी देवी के पूर्व–उत्तर में एक पहाड़ पार कर इस बेहद सुंदर सूर्यकुंड

सूर्यकुंड का मनोरम दृश्य

के दर्शन और उसमें स्नान किया जा सकता है। सहंस्रा नदी खोल से होकर यहां पहुंचने पर मार्ग में वन गुर्जरों के प्राकृतिक आवासों को देखा जा सकता है। सूर्यकुंड प्राचीन सहंस्रा ठाकुर मंदिर के निकट है। अगर थोड़ा साहस दिखाया तो प्रकृति के इस अद्भुत दृश्य का आनन्द लिया जा सकता हैं। यहीं

एक गुफा है जिसे गौतम ऋषि की गुफा कहा जाता है। मानवकृत उत्कृष्ट शिल्प और प्रकृति के सौंदर्य का यह संगम बहुत मनोरम है।

t [kokyk rkykc

प्राचीन कस्बे देवबंद के निकट एक गांव है जखवाला, गांव में तालाब को भी जखवाला तालाब कहा जाता है। गांव और निकटवर्ती क्षेत्रों में मान्यता के अनुसार गांव का नाम तालाब के नाम पर ही पड़ा है। स्थानीय लोग जखवाला शब्द यक्षवाला का अपभ्रंश मानते हैं। मान्यता है कि पाण्डवों के अरण्यवास के दौरान महाभारत में यक्ष प्रसंग की घटना इसी तालाब के किनारे हुई, तभी से इसका नाम यक्षवाला हो गया। तालाब के किनारे लगे प्राचीन वनस्पति अरणी के पौधों को भी इसके प्राचीन होने का एक आधार बताया जाता है। पाण्डवों के संदर्भ से जोड़ा जाने वाला गांव रणखण्डी और जड़ौदा पाण्डा भी यहां से अधिक दूर नहीं हैं। निकटवर्ती गांव भगवानपुर से खुदाई में मिट्टी के प्राचीन बर्तन मिलते रहे हैं। इस क्षेत्र में जखवाला तालाब की ऐतिहासिक और धार्मिक मान्यता बहुत है।

iVuh dh ,frgkfld ckoMh

सहारनपुर से चिलकाना मार्ग पर पटनी गांव स्थित है। प्राचीन काल में कभी पटनी शब्द पट्टन शब्द से बना है। कभी सरसावा को सिरसा–पट्टन के नाम से जाना जाता था। सरसावा में तो आज भी प्राचीन टीला शेष है। पटनी में भी अक्सर खुदाई के दौरान प्राचीन ईंटें, प्रतिमाएं आदि प्राप्त होती रही हैं। पटनी गांव में एक बावड़ी है जिसे इब्राहीम लोदी की बावड़ी के नाम से जाना जाता है। बावड़ी काफी बड़ी है लेकिन बहुत बदतर हालत में है। बावड़ी के भीतर कुआं है, दोनों ओर स्नानागार बने हुए हैं। बावड़ी में गांव का गंदा पानी जाता है, ऐसे में उतरकर देखना संभव नहीं है। बावड़ी के भीतर एक सुरंग बताई जाती है, जिसमें घुड़सवार बैठे–बैठे दूर तक जा सकता था। दुर्भाग्य से कभी गौरव रही यह बावड़ी आज अपने हालात पर रोने को विवश है। यदि शीघ्र ही ऐतिहासिक बावड़ी को लेकर कोई पहल नहीं की गई तो यह भी किंवदंतियों का हिस्सा बन कर रह जाएगी।

xaxkg dk dadjkyh ljkoj

गंगोह का कंकराली सरोवर अपने पूर्व–पश्चिम दोनों किनारों पर सुंदर मंदिर श्रृंखलाओं को लिए हुए है। सरोवर को लेकर यहां दो मत प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार सरोवर का सम्बंध 1300 वर्ष पूर्व हुए राजा कनकपाल से है तो दूसरा मत इसे पंडितों और लालाओं से जुड़ा मानता है। डॉ. पद्म सिंह वर्मा दलित की गुर्जर स्वाभिमान पुस्तक के अनुसार

प्रसिद्ध इतिहासकार जीआरसी विलियम्स ने कंकराली मंदिर का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि संवत 745 में हुए मालवा नरेश कनकपाल सहारनपुर से होते हुए गढ़वाल गए थे। इस दौरान वह गंगोह ठहरे। उसी स्थान पर कंकरपाल मंदिर और सरोवर का निर्माण किया गया था। दूसरे विवरण के अनुसार सन् 1885 के आसपास यहां पूजन–स्नान इत्यादि के लिए सम्पत्ति स्वामी पंडित रिखीराम जनार्दनदास ने यहां पक्के निर्माण कार्य कराए। सरोवर के पूर्वी छोर पर रामबाग के मालिक लालाओं ने भी अपनी ओर से पक्के घाटों का निर्माण करा दिया। पूर्व के दक्षिणी भाग में लाला झंडू दास मोहड़ियों द्वारा स्वयं के प्रयोग के लिए घाट का निर्माण कराया गया। गंगोह में कंकराली सरोवर का बहुत ही ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व है। सरोवर के निकट शिव, हनुमान, दुर्गा, शीतला माता, काली, राधा–कृष्ण, बाला जी आदि के मंदिर बने हुए हैं। चैत्र मास की चतुर्दशी को शीतला माता मंदिर पर मेला भी लगता है। अपने यौवनकाल में यह सरोवर और यहां मंदिर शृंखला निःसंदेह मनमोहक रही होगी।

rhrjk dk d.krky

ताल शब्द का जुड़ा होना ही इस तालाब की पुरातनता की ओर संकेत करता है। अन्य तालाबों की भांति इस तालाब के साथ भी पांडवों को संदर्भित किया जाता है। कहते हैं कर्ण द्वारा बनवाए जाने के कारण इस तालाब का नाम कर्णताल हुआ। वर्तमान में भी मंदिर के एक ओर का पूर्ण निर्माण लखौरी ईंटों से किया गया है। तालाब के निकट जनाना घाट,

तीतरो का कर्णताल

प्राचीन कूप और अन्य निर्माण भी लखौरी ईंटों के हैं। तालाब के निकट बड़े आकार की प्राचीन ईंटें मिलती हैं। निकट ही प्राचीन शिव मंदिर हैं। जिस पर सुंदर भित्तिचित्र बनाए गए हैं। यहां गांव का खेड़ा, अनेक सतियां, संतों की समाधि, माता का थान भी पुराने ही हैं। साथ ही साथ भीष्म नागा बाबा, योगी देवीनाथ, योगी फूलनाथ की समाधि भी तालाब के किनारे ही हैं। यहां नाइयों वाला मंदिर भी है जिसका सन् 1742 लिखा हुआ है।

[kqtukoj dk èkujkt ljkoj

खुजनावर के इतिहास को जाने बिना धनराज सरोवर के महत्त्व को नहीं समझा जा सकता। आज जो खुजनावर गांव बसा है, वह प्राचीन अवशेषों पर बसा है। मुहम्मद गौरी के आक्रमण के दौरान यहां पृथ्वीराज की सेना से जुड़े राजपूत परिवार रहा करते थे। गौरी का आक्रमण हुआ तो यहां चार राजपूत परिवारों में से एक परिवार ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया और वह राव हो गया। बाकी राजपूत यहां से दूसरे गांवों में बस गए। आज गांव में केवल धनराज सरोवर ही हिंदू नाम का एक स्थान बाकी है। यहां सरोवर के निकट प्राचीन सतियां भी हैं, जिन्हें दीपावली व अन्य अवसरों पर दूसरे गांवों में बसे राजपूत परिवार पूजन करने भी आते हैं। कहते हैं कि धनराज सरोवर का नाम पांडवों में सबसे बड़े धर्मराज युधिष्ठिर के नाम पर धर्मराज सरोवर हुआ जिसे बाद में धनराज कहने लगे। पुरानी किंवदंतियों के अनुसार हिडिंब और हिडिंबा वाला प्रसंग इसी सरोवर के किनारे हुआ था। सरोवर के किनारे प्राचीन ईंटें और कुषाणकालीन सिक्कों का प्राप्त होना यहां की प्राचीनता को सिद्ध करता है।

nocn dk ikphu nohdqM

देवबंद का देवीकुंड सहारनपुर जनपद का प्राचीनतम जलाशय है। जलाशय किनारे स्थित मां बाला सुंदरी मंदिर का मान्यता सर्वविदित है। यहां मां बाला सुंदरी ने दुर्ग नामक राक्षस का वध किया था। जलाशय के किनारों पर प्राचीन मंदिर और अनेक सतियां बनी हुई हैं। विदेशी आक्रांताओं से संघर्ष करते हुए जिन वीरों ने अपने प्राण गवाएं थे उनकी वीरांगनाएं यहां सती हुई थी। श्रद्धालुओं के स्नान के लिए देवीकुंड पर अलग–अलग घाट बने हुए हैं। यहां विभिन्न धार्मिक पर्वों पर स्नान करने से पुण्य प्राप्त होता है। जलाशय में खिले कमल और कमलों के पीछे मां बाला सुंदरी का मंदिर बड़ा मनमोहक लगता है। कहते हैं कि महाभारत काल में पांडवों ने भी इस जलाशय के निकट समय बिताया था।

vè;kuk dk lrh ljkoj

अध्याना का सती सरोवर वर्तमान में अपनी प्राकृतिक सुंदरता से आकर्षित करने वाला सरोवर है। स्थानीय लोग बताते हैं कि सती सरोवर के किनारे पांच सौ वर्ष पहले तक 365 सती मंदिर थे। अफगान सूबेदार जमाल खां के पुत्र बहादुरशाह ने सभी सती मंदिरों को तुड़वाकर अध्याना में ही अपना किला बनवा लिया था। राजस्थान के भाट भी इस घटना को अकसर सुनाते हैं।

अध्याना गांव का सती सरोवर

किले के अवशेष आज भी गांव में देखे जा सकते हैं। क्षेत्र में विद्रोह होने के बाद बहादुरशाह मारा गया। कुछ लोग जमाल खां के विषय में इसी घटना को बताते हैं। पूर्व में स्थित नया गांव में भी यह किस्सा प्रचलित है। यहां से अफगान परिवार लखनौती चले गए। लेकिन आज भी इस सरोवर को सती सरोवर के नाम से जाना जाता है। सरोवर में एक–दो सतियां हैं, जिनका पूजन गांव के लोग करते हैं। कार्तिक की अमावस्या पर यहां विशेष पूजा की जाती है। गांव से बाहर गए लोग भी इस दिन पहुंच कर पूजन में भाग लेते हैं। सरोवर किनारे दादी लक्ष्मी की सती सबसे अधिक प्रसिद्ध और पूजनीय मानी जाती है।

vU; tyk'k;

रणदेवा का हरि मंदिर सरोवर भी प्रसिद्ध सरोवर है। कभी यहां निकटवर्ती गांवों के लोगों का पिंडदान भी हुआ करता था। संत प्यारे जी महाराज द्वारा बनवाए गए मंदिर के कारण इस सरोवर की बहुत प्रसिद्ध हुई लेकिन बाद

में इस मंदिर को तोड़ दिया गया। लालाओं के गांव कोटा का तालाब भी कभी अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध था। भले ही आज यह तालाब गांव की गंदगी गिराए जाने वाला स्थान बनकर रह गया हो लेकिन कभी यह बेहद खूबसूरत हुआ करता था। इस तालाब में सुंदर सीढ़ियां थीं। महिलाओं के स्नान के लिए अलग से व्यवस्था थी। जल से जुड़े सभी धार्मिक आयोजन इसी तालाब के किनारे हुआ करते थे। जड़ौदा पांडा गांव में भी एक विशाल तालाब है। यद्यपि तालाब के किनारे मंदिर या कोई पुरातन निशानी शेष नहीं है फिर भी तालाब और गांव को पांडवों के साथ संदर्भित किया जाता है। बरसी के पुरातन बरसी महादेव मंदिर के निकट भी एक तालाब है। यह तालाब भी बहुत पुराना है। बरसी महादेव की स्थापना दुर्योधन द्वारा की बताई जाती है। तालाब और मंदिर के परिसर में प्राचीन अवशेषों का प्राप्त होना यहां की प्राचीनता सिद्ध करता है। रणखंडी गांव में पांच पाण्डव तालाब हैं। पांच पांडव तालाब के साथ भी महाभारत की घटनाएं जुड़ी बताई जाती है। गांव वालों का कहना है कि रणखंडी गांव में पांडवों ने अपना डेरा डाला था।

गली-गली यायावरी

यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हरिद्वार, देहरादून, मसूरी और चंड़ीगढ़ जैसे पर्यटनीय स्थलों से घिरा सहारनपुर पर्यटन का विकल्प नहीं बन सका। इसका कारण है कि यमुना पार कर शिवालिक की पहाड़ियों के बराबर–बराबर यह पहला मैदानी क्षेत्र है, जिसके चलते यह उथल–पुथल और हलचलों से भरा क्षेत्र रहा। अनेक धार्मिक पर्यटन केंद्र विदेशी हमलावरों के आंधी की भेंट चढ़ गए और अनेक स्थल शासन–प्रशासन की उपेक्षा से पिछड़ गए। अंग्रेजों ने भी सैनिक छावनी, रिमाउंट डिपो, चर्च, बंगले तो यहां बनाए लेकिन अपने घूमने और आराम करने के लिए देहरादून एवं मसूरी को विकसित किया।

चीनी यात्री ह्वेनसांग राजा हर्ष के शासन काल के दौरान सरसावा कस्बे से केवल 22 किमी दूर स्रुघ्न पहुंचा। स्रुघ्न से वह सहारनपुर के कस्बे बेहट (तत्कालीन वृह्दहट) पहुंचा और उसके बाद हरिद्वार जिसे उस समय मायापुर के नाम से जाना जाता था। इस मार्ग में उसने 100 देव मंदिरों और पांच बौद्ध विहारों का वर्णन किया है। किंतु बर्बर आक्रमणों की त्रासदी ने सब कुछ निगल लिया। अनेक त्रासदियों से गुजर कर सहारनपुर फिर से खड़ा हो गया। यहां आपको सहारनपुर के कुछ उन स्थलों से परिचित कराने का मन है जो अपनी किसी न किसी विशेषता के कारण आपको यहां आने और उन्हें देखने के लिए बाध्य कर सकते हैं। सहारनपुर के खंडहरों, मंदिरों, मस्जिदों और शिवालिक के सौंदर्य में आज भी वह क्षमता है जो किसी का भी मन मोह ले। सहारनपुर के राजकीय उद्यान, माता शाकुम्भरी देवी, इस्लामिक शिक्षा के केंद्र दारुल उलूम, बाबा लालदास के बाड़े, रणदेवा स्थित संत प्यारे जी महाराज के मंदिर, सोना अर्जुनपुर के बाबा सिद्ध महाराज मंदिर और सरोवर के विषय में तो आप विस्तार से उनके अध्याय में आगे पढ़िएगा उनसे इतर आईए जानते हैं यहां के कुछ और विशेष पर्यटन स्थलों के विषय में...

f'kokfyd dk lkn;

बादशाही बाग से लेकर बड़कला, शाकुम्भरी देवी और मोहंड तक सहारनपुर के पास शिवालिक का ऐसा सौंदर्य है जो निकटवर्ती किसी मैदानी जनपद के पास नहीं है। शिवालिक की इस घाटी को निम्न हिमालय के नाम से भी जाना जाता है। अगाध प्राकृतिक सौंदर्य के बीच, अनेक छोटे झरने, पोखर, छोटी नदियां, खोल, पक्षियों का कलरव अपनी ओर खींचता सा प्रतीत होता

शिवालिक में कल–कल बहती जलधारा

है। इस विशाल क्षेत्र में अमलतास, अर्जुन, आम, आंवला, कचनार, सीरस, खजूर, खैर चीड़, साल, गूलर, सप्तपर्णी, जामुन, ढाक, तुन, नीम, बेल, बबूल, बहेड़ा, महुआ, शहतूत, शीशम, सहजन, सेंमल, हरसिंगार आदि के वृक्षों की भरमार है। विशेष तथ्य यह है कि चीड़ का वृक्ष प्रदेश भर में दुर्लभ हो गया है लेकिन शिवालिक के इस प्रभाग में चीड़ सुरक्षित होकर खूब फल–फूल रहा है। बात यदि वन्य प्राणियों की करें तो शिवालिक हाथी, गुलदार, बंदर, लंगूर, जंगली बिल्ली, गोह, बिज्जू, सियार, जंगली कुत्ता, सांभर, जंगली सुअर, खरगोश, चींटीखोर, कबूतर, फाख्ता, हरियल आदि की निवास स्थल है। मोहंड, बड़कला, शाहजहांपुर और शाकुम्भरी में अंग्रेजों के समय के बने हुए गेस्ट हाउस हैं। सहारनपुर की खारा विद्युत परियोजना, माता शाकुम्भरी देवी मंदिर, वन गुर्जरों के डेरे, कोठरी गांवों की श्रृंखला इस क्षेत्र में दर्शनीय हैं। सहारनपुर के साथ विडंबना यह है कि इतना कुछ होने के बाद भी न तो इस क्षेत्र के सौंदर्य को देख सकने के लिए आज तक कोई विशेष मार्ग बनाया जा सका और न ही किसी और प्रकार की व्यवस्था की गई। संहस्रा ठाकुर में सप्त कुंड, सूर्य कुंड, अनेक तपस्थलियों का होना, बादशाही बाग और शाकुम्भरी देवी मार्ग पर तपोवन हबीबपुर गांव का होना, जीवाश्म विज्ञानी डॉ. फॉकनर का शिवालिक से अनेक जीवाश्मों का एकत्र करना और उसकी रिपोर्ट विश्व प्रसिद्ध जीव विज्ञानी चार्ल्स डॉर्विन को भेजना यहां की महत्ता को समझने के लिए पर्याप्त है। शिवालिक की अनगढ़ यायावरी के लिए यायावर का साहसी होना बहुत आवश्यक है। यहां बाइक

का रोमांच है तो पैदल चलने का भी अपना अलग आनंद है। फोटोग्राफी के लिए यहां भरपूर अवसर है। चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य दिखाई देता है।

lgl Bkdj

सहंस्रा ठाकुर शब्द सहस्त्र ठाकुर शब्द से बना है। शिवालिक की गोद में आठवीं–दसवीं शताब्दी में बना प्राचीन सहंस्रा ठाकुर का मंदिर स्थित है। इस मंदिर तक पहुंचना एक रोचक यात्रा है। सहंस्रा ठाकुर की यात्रा में वह सब कुछ है, जो किसी आदर्श पर्वतीय यात्रा में होना चाहिए। यहां आप पैदल यात्रा का आनंद लेकर मंदिर तक पहुंच सकते हैं एक पर्वत पार कर घाटी के बाद दूसरे पर्वत की चढ़ाई शुरू होते ही यह मंदिर स्थित है। यहां पर्वत पर चढ़ने का रोमांच है, यहां वन गुर्जरों के कठोर जीवन को देखने का अनुभव

प्राचीन सहंस्रा ठाकुर मंदिर

लिया जा सकता है। सहारनपुर से 40 किमी दूर स्थित शाकुम्भरी माता का मंदिर है। माता के मंदिर से पहले नागल माफी गांव बसा हुआ है, यहां से पूर्व में मार्ग सहंस्रा ठाकुर की ओर जाता है। बाइक द्वारा या कार द्वारा इस मार्ग की ओर जाना अधिक उपयुक्त है। झाड़ियों से होकर संकरे मार्ग द्वारा खोल से होते हुए करीब तीन किमी का रास्ता वाहन द्वारा पूरा किया जा सकता है। बरसात के मौसम में यहां नहीं जाना चाहिए। वन गुर्जर सहयोगी स्वभाव के होते हैं, इनसे रास्ता भी पूछा जा सकता है और गंतव्य तक पहुंचने पर इनके डेरे पर वाहन को खड़ा भी किया जा सकता है। सहंस्रा ठाकुर का मंदिर और अन्य निर्माण पत्थरों को काटकर बनाए गए हैं। मंदिर में भगवान विष्णु जी का स्वरूप विराजित है। मंदिर के बाहरी प्रांगण में शंकर भगवान, पृथ्वी को धारण किए हुए वराह अवतार और अन्य देव प्रतिमाएं हैं। मंदिर के

निकट प्राचीन सूर्यकुंड भी है। प्राचीन शिल्प और प्रकृति का यह अद्भुत संगम बरबस ही किसी को भी आकर्षित कर लेता है। यहां जाने के लिए आदर्श समय सितंबर से नवंबर और मार्च से मई है।

noh ckyk lqanjh efnj

देवबंद स्थित देवी बाला सुंदरी का प्राचीन मंदिर सदियों से पश्चिमी उत्तर के श्रद्धालुओं की आस्था का बड़ा केंद्र रहा है। पर्यटन की दृष्टि से यह बेहद रमणीक और मनोरम स्थल है। देवबंद के विषय में दो मान्यताएं प्रचलित हैं। एक मान्यता के अनुसार सदियों पहले यहां सघन वन हुआ करते थे। देवी दुर्गा के यहां निवास करने से इस स्थल का नाम देवी वन हो गया जिसे कालान्तर में देवबंद कहने लगे। दूसरी मान्यता के अनुसार इस स्थान का प्राचीन नाम देववृंद था जो बाद में अपभ्रंश होकर देवबंद हो गया। कहते हैं कि देवी सती का एक अंग भी यहां गिरा था। मंदिर के मुख्यद्वार पर एक प्राचीन शिलालेख लगा हुआ है जिसे पढ़ने में कोई सफलता नहीं मिल सकी है। मंदिर परिसर में श्रीराम, हनुमान, शिव–पार्वती, ध्यानु भक्त, दुष्यंत को जल पिलाती शकुंतला, राम–भरत मिलाप, समाधिरत शिव, मां सरस्वती, राम दरबार, ग्यारह मुखी महादेव, चर्तुभंजी महादेव, बाण चलाते श्रीराम, अन्नपूर्णा जी, जाहरवीर गोगा, ठाकुर जी, बूढ़े बाबा की समाधी, सुल्लड़ मिश्र, काली मां, विश्वकर्मा भगवान, गणपति, भैरव बाबा आदि के दर्शनीय स्वरूप बनाए गए हैं। त्रिपुर बाला सुंदरी मंदिर में प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को विशाल मेले का आयोजन होता है। एक पखवाड़े तक चलने वाला यह मेला देश के विशिष्ट मेलों में अपना अलग स्थान रखता है। इस दौरान यहां अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

flèkdkyhu gyk

हुलास सहारनपुर का ऐसा स्थल है जिस स्थल पर व्यापक उत्खनन भी हुआ है और उत्खनन के बाद इस स्थल पर जन्मे सभ्यता को सिंधुकालीन सभ्यता ही माना गया। ऐतिहासिक स्थलों में रुचि रखने वालों के लिए यह महत्त्वपूर्ण पर्यटनीय स्थल है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के पुरातत्वविद् काशीनाथ दीक्षित के दिशा–निर्देश में यहां टीले पर सन् 1978–79 ई. में व्यापक उत्खनन कार्य कराया गया। यहां अनेक प्रकार के मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए। मिट्टी के मनके, मिट्टी की चूड़ियां, खिलौना गाड़ी, पशु आकृतियां, अस्थि निर्मित नुकीले उपकरण, अण्डाकार और गोलाकार चूल्हे, सिल–बट्टा, सुरमा लगाने वाली सलाई इत्यादि यहां से प्राप्त हुए हैं। यहां जन्मी सभ्यता का आकलन ईसा से 1500 वर्ष पूर्व की सभ्यता के रूप में किया गया है। बिना

संरक्षण और देखरेख इस प्राचीन स्थल पर संकट मंडराने लगा है। इस स्थल की ऐतिहासिक महत्ता को उपेक्षित करते हुए यहां टीले के बड़े भाग पर पट्टे काट दिए गए हैं। स्थल को बचाने के लिए ठोस निर्णय लिए जाने की आवश्यकता है।

lgkjuiqj dk tSu efnj

सहारनपुर में जैन समाज का अपना अलग इतिहास है। जैन समुदाय यहां के समृद्धशाली समाजों में रहा है। जनपद के कई पुराने गांवों से जैन परिवार सहारनपुर नगर के अलावा देश के दूसरे शहरों में स्थानांतरित भी हो गए। फिर भी यहां के जैन मंदिर और मंदिरों में बने भित्तिचित्र जैन समाज की सांस्कृतिक समृद्धि पर मुहर लगाने के लिए पर्याप्त हैं। सहारनपुर नगर में कई जैन मंदिर हैं, जिनमें प्राचीन प्रतिमाओं के अलावा भित्तिचित्रों की सम्पदा भी है। सहारनपुर जैन बाग स्थित मंदिर, मोहल्ला चौधरियान स्थित जैन मंदिर, वीर नगर स्थित जैन मंदिर, जिन चैत्यालय, नंदीश्वर द्वीप, बड़तला यादगार स्थित जैन मंदिर, आभा का जैन, मंदिर सरसावा का जैन मंदिर, सरसावा के जैन मंदिर, नानौता के जैन मंदिर, रामपुर मनिहारान के जैन मंदिरों के अलावा कई महत्त्वपूर्ण जैन मंदिर हैं। नकुड़, देवबंद, बेहट, गंगोह, टिकरौल, मल्हीपुर, जड़ौदा पांडा, अंबेहटा में भी जैन मंदिर हैं। सुल्तानपुर के जैन मंदिर में स्वर्णयुक्त स्याही का प्रयोग किया गया है। मंदिर में महावीर जी के अलावा श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, जंबूद्वीप आदि आकर्षक भित्तिचित्र बने हैं। जैन धर्म में आस्था रखने वालों के लिए पर्यटन की दृष्टि से सहारनपुर महत्त्वपूर्ण केंद्र है।

'kkgtgk dh 'kkgh f'kdkjxkg&

ताजमहल जैसी नायाब इमारत बनाने वाले मुगल बादशाह शाहजहां ने अपने स्थापत्य प्रेम के पंख सहारनपुर तक भी फैलाए थे। बादशाही बाग के अंतर्गत शिवालिक की तलहटी में शाहजहां द्वारा एक सुंदर शिकारगाह बनवाई गई थी। यह शिकारगाह जर्जर खंडहर का रूप ले चुकी थी। लगातार प्रशासन को अवगत कराने के बाद इस स्थल को संरक्षित कर दिया गया है। नेविल के गजेटियर में इस स्थल का उल्लेख किया गया है। मुगलों के बाद अंग्रेज़ों ने भी इस स्थल का उपयोग शिकारगाह और आरामगाह के तौर पर किया। नेविल के गजेटियर के अनुसार शाहजहां के शासन के दौरान अली मरदान खान द्वारा पूर्वी यमुना नहर को शाहजहां द्वारा बसाई गई आधुनिक दिल्ली के महलों तक ले जाया गया था। शिकारगाह हथिनीकुंड बैराज के निकट यमुना के किनारे स्थित है। यमुना के किनारे बनी यह इमारत कभी बेहद दिलकश रही होगी, इसके खंडहर ही इसके

शाहजहां की शाही शिकारगाह

सौंदर्य का गुणगान करते दृष्टिगत होते हैं। शिकारगाह, यहां पुराना जलाशय और अन्य खंडहर करीब 300 मीटर क्षेत्र में फैले हुए मिलते हैं। शिकारगाह का सबसे आकर्षक और मनोरम स्थल इसका मुख्य इमारत से बाहर की ओर झांकता भाग है। यहां उत्तर से दक्षिण की ओर चार झरोखे बने हुए हैं। जिनसे शिवालिक की पहाड़ियों के सौंदर्य का दर्शन किया जा सकता है। शाम को छिपते सूर्यदेव की लालिमा का बहुत मनमोहक अनुभव भी यहां किया जा सकता है। शिकारगाह में बने चार झरोखों से आने वाली ठंडी हवा बरबस सम्मोहित करती है। यह क्षेत्र परगना फैजाबाद के अंतर्गत आता है। यहां मुगल काल में विशेष बाग लगाया गया था, जिसके कारण यहां बस्ती का नाम भी बादशाही बाग हो गया। आज भी शिकारगाह के छोटे से हिस्से में आम के कुछ वृक्ष लगे हुए हैं। यहां होने वाले रेत, पत्थर खनन से इस स्थल को गंभीर क्षति हुई है। यहां तक पहुंचना एक रोचक यात्रा है।

ejkBk vkj f'koky;

मराठा शासक शिव के बड़े उपासक थे। मराठे जहां गए वहां उन्होंने शिवालयों की भी स्थापना की। सहारनपुर में मराठों ने सन् 1789–1803 ई. तक अपने शासक काल के दौरान कई शिवालयों की स्थापना की। सहारनपुर नगर में भूतेश्वर महादेव मंदिर सबसे पुराना शिवालय है। यह नगरवासियों की आस्था का बड़ा केंद्र है। इसका निर्माण मराठों द्वारा ही कराया गया था।

यहां संतों की समाधियां भी हैं, जो मराठा शैली में बनाई गई हैं। समाधियों को छतरियां कहा जाता है। सबसे बड़ी छतरी शिल्प की दृष्टि से आकर्षक है। इसमें चार स्तम्भ हैं और स्तम्भ पर अंलकृत आकृतियां चारों ओर बनाई गई हैं। इनमें से कई समाधियां ऐसी बताई जाती हैं, जिन्हें संतों द्वारा जीवित रहते हुए ही लिया गया है। समय–समय के साथ मंदिर में अनेक निर्माण और जीर्णोद्धार का कार्य कराया जाता रहा। भूतेश्वर महादेव मंदिर के अलावा कम्पनी बाग स्थित बागेश्वर महादेव मंदिर, रानी बाजार स्थित पातालेश्वर महादेव, कोर्ट रोड स्थित पाठेश्वर महादेव और शंकलापुरी स्थित शंकलेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण भी मराठा कालीन माना जाता है। यह भी तथ्य है कि जिन मंदिरों के नाम के साथ ईश्वर शब्द जुड़ा मिलता है, उनमें से अधिकांश का निर्माण मराठों द्वारा कराया गया है। ऐसा केवल सहारनपुर के साथ ही नहीं है बल्कि जहां–जहां मराठों ने शासन किया वहां शिव मंदिरों के साथ ईश्वर का शब्द जुड़ा हुआ है।

;jkfi;u LFkkiR; dyk

सहारनपुर में ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन की शुरुआत 30 दिसम्बर, 1803 में मराठों की पराजय के हुआ। कंपनी ने शासन के तुरंत बाद सहारनपुर नगर को जनपद का मुख्यालय घोषित कर दिया। सहारनपुर में कलक्टर एवं अन्य अधिकारियों के निवासों का निर्माण किया गया। सन् 1854 ई. में अनेक बंगलों का निर्माण किया गया। अंग्रेज अपनी निर्माण शैली लेकर भारत पहुंचे थे। अंग्रेजों ने देश भर की भांति सहारनपुर में भी भवन और चर्च निर्माण में अपनी

ब्रिटिश सिमेट्री में यूरोपियन स्थापत्य

शैली का प्रयोग किया। इंग्लैंड की विशेष धार्मिक नियंत्रक संस्था एंजलिकन चर्च ऑफ इंग्लैंड के निर्देश पर सैन्य अधिकारी जेम्स पॉवेल ने सेंट थॉमस चर्च का निर्माण सन् 1854 ई. में कराया। यह चर्च यूरोपियन वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। इसकी शैली एंग्लोगोथिक है। शंकु आकार की मीनार, ढलुआ छत, लंबी खिड़कियां और रंगीन शीशों पर चित्रकारी इस चर्च की विशेषता है। शीशों पर मध्यकालीन गोथिक चित्र शैली में कलर्ड स्टैंड ग्लास तकनीक से बनाए गए हैं। पहले इस चर्च के भीतरी भाग को सहारा देने के लिए लकड़ियों के लट्ठों का प्रयोग किया गया था जिसका स्थान वर्तमान में लोहे के निर्माण ने लिया है। यहां प्रार्थना करने के लिए बड़ा सभागार और उसी समय की कुर्सियां हैं। सेंट थॉमस चर्च से करीब 150 मीटर दूरी पर अंग्रेज़ों का संरक्षित कब्रगाह है। कब्रगाह में संगमरमर से बनी प्रतिमाएं, धातुओं से बने क्रास बरबस अपनी ओर खींचते हैं। एंग्लो विक्टोरियन शैली में बने देवदूत, प्रार्थना करती हुई परियां, स्वर्ग जाने वाले मार्ग, संगमरमर की पुस्तकों पर लिखे हुए संदेश कला के बेहतरीन नमूने हैं। यह स्थल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित घोषित किया गया है। गिल कॉलोनी स्थित असेंबली ऑफ गॉड चर्च का निर्माण सन् 1916 ई. में कराया गया था। मिशन कंपाउंड स्थित सीएनआई चर्च, मेथोडिस्ट चर्च, सदर थाने के सामने सेवंथ डे चर्च और सोफिया स्कूल परिसर में सेक्रेड हार्ट चर्च भी यूरोपियन स्थापत्य कला के दर्शनीय नमूने हैं।

xX?kk EgkMh

सहारनपुर ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के श्रद्धालुओं की अगाध श्रद्धा का केंद्र है मानकमऊ गांव स्थित गुग्घा (गोगा) वीर की प्राचीन म्हाड़ी। अब मानकमऊ गांव नगर निगम का एक भाग बन चुका है। शुक्ल पक्ष की दशमी में यहां विशाल मेले का आयोजन होता है। तीन दिन म्हाड़ी पर मेला चलने के बाद यहां खड़ी छड़ियां तीसरे दिन की शाम मेला गुघाल स्थल पर पहुंच जाती है। बाकी मेला वहां चलता है और मेले के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता है। म्हाड़ी पर छड़ी चढ़ाने के लिए लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। जाहरवीर कहे जाने वाले गुग्घा की मां बाच्छल रानी का जन्म सरसावा में हुआ था। गुरु गोरखनाथ के आशीष से जन्मे जाहरवीर की गाथा सारंगी पर गाई जाती है, इस गाथा में भी सरसावा का नाम आता है। मानकमऊ की प्राचीन म्हाड़ी के विषय में कहावत है कि गुग्घा वीर ने स्वयं एक भक्त को नेजा अर्थात प्रतीक चिह्न दिया था। उसके द्वारा ही यहां म्हाड़ी का निर्माण कराया गया था। आज भी नेजे को गांव दर गांव दर्शनार्थ घुमाया जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी को अनेक नेजे मानकमऊ स्थित म्हाड़ी पहुंचते हैं। नेजों को लेकर चलने के लिए श्रद्धालुओं में होड़ लगी रहती है,

इस दृश्य को देखने का अपना आनन्द ही अलग है। छड़ी के अलावा मोरपंख का भी बड़ा महत्त्व है। जिन श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण होती है, वे इस पवित्र स्थल पर कढ़ी–चावल का प्रसाद का भंडारा देते हैं। उत्तर भारत के इस प्रमुख मेले गुघाल में नगर निगम द्वारा व्यवस्था की जाती है। जनमंच सभागार और मेला पंडाल में मुशायरा, कवि सम्मेलन, गुघाल नाइट और अन्य कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

fdyk y[kukrh

लखनौती का प्राचीन नाम लक्ष्मणवती बताया जाता है। लखनौती का किला करीब 400 वर्ष तक सैन्य दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण रहा। मुगलों से लेकर अंग्रेज़ों ने इसे अपने–अपने ढंग से प्रयोग किया। यमुना पार से होने वाले आक्रमणों को रोकने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण सैन्य छावनी था। किले के चारों ओर से क्षतिग्रस्त दीवारें यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि इस किले की अभेद्य दीवारों ने कितने वार झेले हैं। लखौरी ईंटों से बना यह किला आज भी बेमिसाल है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी इस किले की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। लखनौती किले के निर्माण को लेकर अभी तक कोई ऐसा लिखित प्रमाण नहीं मिल सका है जिससे इसकी पुष्टि की जा सके। लेकिन जितने साक्ष्य समक्ष आते हैं, उनसे कई तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं।

किला लखनौती

सन् 1526 ई. में बाबर ने पांचवीं बार भारत पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया। वह पुराने रास्ते का प्रयोग करते हुए सरहिंद से अंबाला होता हुआ यमुना पार कर सरसावा पहुंचा। यहां से बाबर की सेना दो भागों में विभाजित हो गई। एक गंगोह और तीतरो के रास्ते से आगे बढ़ी जिसकी मुठभेड़ इब्राहीम लोदी की एक सैनिक टुकड़ी से हुई। गंगोह और तीतरो कभी लखनौती रियासत के अंतर्गत ही आते थे। कालांतर में शेरशाह से हारने के बाद हुमायूं ईरान चला गया था। जब उसे दोबारा भारत पर कब्ज़ा किया तो उसके साथ सरदार के रूप में अमीर मर्दा और दौलत मर्दा दो तुर्क भाई भी आए थे। हुमायूं के बादशाह होने पर दौलत मर्दा वापस ईरान लौट गया। हुमायूं ने अमीर मर्दा को लखनौती किले का दायित्व सौंप दिया। यह जानकारी किले में रह रहे अमीर मर्दा के वंशज मिर्जा अब्बास ने दी। मिर्जा अजहर अब्बास के पास पुरानी वंशावली और मुगलकालीन दस्तावेज भी रखे हैं। लखनौती गांव के पठान इस किले को पठानों द्वारा बनवाया किला बताते हैं। ऐसे में इतना तय हो जाता है कि यह किला हुमायूं और शेरशाह के बीच संघर्ष के दौरान ही अस्तित्व में आया था। कुछ समय अंग्रेज अधिकारी भी इस किले में रहे। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तक यह किला अंग्रेज जमींदार एएनडब्लू पॉल के नाम पर दर्ज रहा। किले के अधिकार को लेकर यह प्रकरण अभी एसडीएम नकुड़ की कोर्ट में है। किले में सात बड़े बुर्ज हैं, जिनका प्रयोग सैनिक वाचिंग टॉवर के तौर पर किया करते थे। लखनौती में किले के अलावा कई पुरानी इमारतें हैं, जिन्हें सरंक्षण की बहुत आवश्यकता है। पुरानी मस्जिदें, पुराने कब्रिस्तान और कई अन्य पुराने धार्मिक स्थल यहां इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

bLykfed LFkkiR;

सहारनपुर में दारुल उलूम, देवबंद के अलावा कई ऐसे इस्लामिक स्थापत्य हैं जिनका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है। इन निर्माणों में सुंदर इस्लामिक स्थापत्य कला का परिचय मिलता है। सहारनपुर नगर में जामा मस्जिद है। सहारनपुर गजेटियर के अनुसार नगर में सब्जी मंडी स्थित जामा मस्जिद हुमायूं के शासन काल के दौरान सन् 1530 में बनाई गई थी। इस मस्जिद का शिल्प दिल्ली स्थित जामा मस्जिद से साम्य खाता है। प्याजनुमा तीन गुंबद, तीनों गुम्बद पर उल्टे कमल की आकृतियां बनी हुई हैं। मस्जिद के निकट अतिक्रमण और भीड़–भाड़ के कारण इसकी भव्यता और सौंदर्य कुछ दब सा गया है। सहारनपुर नगर में ही चिलकाना रोड पर घनी जनसंख्या के बीच स्थित है मस्जिद नीलगरान। इस मस्जिद का निर्माण शाहजहां के शासनकाल के दौरान सन् 1644 ई. में किया गया था। मस्जिद के निर्माण

देवबंद में रशीदिया मस्जिद

में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। यह एकल गुम्बद वाली मस्जिद है। देवबंद की जामा मस्जिद भी बहुत सुंदर बनी हुई है। इस मस्जिद का निर्माण सिंकदर लोदी द्वारा सन् 1507 में कराया गया था। मस्जिद में गोलाकार सात गुम्बद है। मुख्य गुम्बद काफी बड़ा है। अम्बेहटा की जामा मस्जिद का निर्माण भी हुमायूं के शासनकाल में कराया गया था। मस्जिद का निर्माण वर्ष 940 हिजरी अर्थात् सन् 1534 मिलता है। मस्जिद में तीन गुंबद हैं और तीनों गुम्बदों पर धातु कलश लगे हुए हैं। 916 हिजरी अर्थात् सन् 1510 में सिकंदर लोदी के शासन काल में अंबेहटा में शेख शाहबुद्दीन की मस्जिद का निर्माण कराया गया। इसी समय मोहल्ला चौक की तामीर सिकंदर लोदी ने कराई थी। फिरोजशाह तुगलक के सिपहसालार असदउल्ला बेग ने अंबेहटा को सैनिक छावनी के रूप में प्रयोग किया। कभी यहां एक किला भी हुआ करता था। गंगोह कस्बे की लाल मस्जिद का निर्माण फकीर नूर मुहम्मद ने 1081 हिजरी अर्थात् सन् 1670 में कराया गया था। इस वर्ष का पत्थर भी मस्जिद में लगा है यद्यपि गजेटियर में इसका निर्माण सन् 1660 ई. दिया गया है। मस्जिद के मुख्य गुंबद के भीतर की छत पर चित्रकारी की गई है। मस्जिद के मुख्यद्वार के दोनों ओर कुरआन की आयतों का अंकन किया गया है। गंगोह में ही एक मस्जिद को रेरी मस्जिद के नाम से जाना जाता है। यह गंगोह के पुराने टीले पर बनी है। मस्जिद का निर्माण शेख अब्दुल वासिद ने मुगल बादशाह जहांगीर के संरक्षण में 1034 हिजरी अर्थात्

सन् 1625 में कराया था। इस मस्जिद के गुम्बद ज्यामितीय एवं स्थापत्य की दृष्टिकोण से बहुत ही उन्नत दिखाई देते हैं। गंगोह की जामा मस्जिद घनी आबादी क्षेत्र में है। इसका निर्माण 963 हिजरी अर्थात् सन् 1556 में कराया गया। गुम्बद की भीतरी छत के बीच फूल–पत्तियों के अलंकरण दिखाई देते हैं। बादशाही बाग के निकट स्थित है रायपुर गांव। मुगलकाल में सहारनपुर सरकार के दौरान रायपुर तातार का नाम उल्लेखनीय रूप से आता है। पहले यह हिंदू राजपूतों का गांव हुआ करता था, जो बाद में मुस्लिम राज में परिवर्तित हो गए। यहां की जामा मस्जिद भी दिल्ली की जामा मस्जिद से मेल खाती है। मुख्य गुंबद के अंतः अंलकरण सुंदर और आकर्षक हैं। नक्काशी युक्त मेहराब काफी सुंदर है। बाहरी दीवार पर कुरआन की आयतें अंकित हैं। मस्जिद में फूलों के अंलकरण के साथ–साथ प्राकृतिक बेल–लताओं का चित्रण भी मिलता है। नानौता की मस्जिद भी उल्लेखनीय है।

ljlkok dk ikphu Vhyk

सहारनपुर जनपद में सर्वाधिक ऐतिहासिक त्रासदी झेलने वाले क्षेत्र का नाम सरसावा है। पुराना राजमार्ग सरसावा से होकर ही गुजरता था, ऐसे में यहां से होकर गुजरने वाले आक्रमणकारी ने इसे अपना शिकार बनाया। आज भी सदियों पुराना टीला इतिहास की मीठी–कडुवी स्मृतियों को अपनी थाती में समेटे हुए अपने रहस्यों को तलाश किए जाने की प्रतीक्षा कर रहा है। यह टीला सरसावा से कुंडी–रायपुर मार्ग पर स्थित है। यहां इसे कोट के नाम से जाना जाता है। कोट संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ होता है किला। निःसंदेह कभी यहां विशाल किला खड़ा हुआ था। टीले से अक्सर विभिन्न

सरसावा का प्राचीन टीला

संस्कृतियों से जुड़े अवशेष प्राप्त होते रहते हैं। टीले से सिंधुकालीन धूसर चित्रित मृदभांड प्राप्त होते हैं। इतिहासकार कनिंघम के वर्णनों और इलियट और डायसन द्वारा लिखित *हिस्ट्री ऑफ इंडिया* में सरसावा का विशद वर्णन मिलता है। कभी सरसावा को एक नगर के रूप में जाना जाता था। विवरण मिलता है कि महमूद गज़नवी ने सरसावा के राजा चांद राय पर आक्रमण करने का आदेश दिया था। चांद राय हिंद के अच्छे शासकों में माना जाता था, जो सरसावा दुर्ग में निवास करता था। तीन दिन सरसावा में कत्लेआम होता रहा। सोना, चांदी, माणिक सभी लूट में हाथ लगे। इस लूट का आकलन आक्रमणकारियों के साथ आए इतिहासकारों ने तीस लाख दिरहाम किया। सरसावा से लोगों को गुलाम बनाकर गज़नी, इराक, खुरासान में बेचा गया। बाबर ने पानीपत के युद्ध से पहले यहां पड़ाव डाला था और इसकी सुंदरता की प्रशंसा करते हुए इसे अपने सिपहसालार तावदी बेग फाकसार को दे दिया था। इतिहास का साक्षी सरसावा का टीला सरंक्षण के अभाव में दम तोड़ रहा है। इसे आज चारों ओर से काटा जा रहा है। यदि शीघ्र इसके संरक्षण को लेकर कोई प्रयास नहीं किया गया तो इतिहास की यह विरासत अपना अस्तित्व खो सकती है। इसका उत्खनन किया जाना बेहद आवश्यक है। सरसावा के ऐतिहासिक महत्त्व को देखते हुए इतना कहा जा सकता है जिस दिन इस टीले का उत्खनन होगा, उस समय यह सहारनपुर ही नहीं बल्कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल सिद्ध होगा।

'kkg gk#u fp'rh dh njxkg&

चौदहवीं सदी में बड़े सूफी संत हुए हैं शाह हारुन चिश्ती। कहते हैं कि जब मुहम्मद तुगलक ने सन् 1340 ई. में शिवालिक के राजाओं के विद्रोह को दबाने के लिए इस क्षेत्र में आया था, तब वह यहां सूफी संत शाह हारुन चिश्ती से बेहद प्रभावित हुआ था। इसी के चलते उसने आदेश किए थे कि वहां बसने वाला नगर शाह हारुन चिश्ती के नाम पर शाहहारुनपुर कहलाएगा। यद्यपि तत्कालीन इतिहासकारों द्वारा इसकी पुष्टि नहीं होती कि कभी मुहम्मद तुगलक संत हारुन चिश्ती से मिला था और उसने सहारनपुर के नामकरण को लेकर कोई आदेश दिया था तथापि इससे सूफी संत शाह हारुन की महत्ता कम नहीं हो जाती। दीनानाथ बाजार स्थित संत शाह हारुन की कब्र बनी है। आज भी हिंदू–मुस्लिम दोनों समुदाय के बीच सूफी संत शाह हारुन चिश्ती के प्रति अगाध श्रद्धा है।

fQyVfyd lxgky;

अम्बाला रोड स्थित पोस्टल ट्रेनिंग सेंटर में बने फिलेटेलिक संग्रहालय का अपना विशिष्ट महत्त्व है। संग्रहालय में देश–विदेश के अनेक महत्त्वपूर्ण टिकटों का संग्रह है। यहां डाक व्यवस्था में प्रयुक्त अनेक पुराने उपकरण, बैग, घड़ियां, लालटेन, विशेष बाजे, बैज इत्यादि रखे गए हैं। डाकियों द्वारा समय–समय से प्रयोग में लाए जाते रहे बैग, मोहर, बेल्ट और नेम प्लेट का भी यहां पर्याप्त संग्रह है। प्राचीन काल में डाककर्मियों द्वारा घने जंगलों से होकर गुजरने के दौरान किसी भी स्थिति से निपटने के लिए अपने साथ रखी जाने वाली तलवार भी यहां संगृहीत है। तुगलक शासन के दौरान डाक की विशेष प्रथा को औलाक कहते थे। इस समय दो प्रकार की डाक सेवाएं प्रचलन में थी, एक पैदल और एक घोड़े द्वारा। डाककर्मियों के तत्कालीन हरकारे के हाथ में घुंघरु बंधा हुआ भाला होता था। जो सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था और घुंघरूओं का स्वर सुनकर दूसरा हरकारा तैयार हो जाता था। बाद में अंग्रेजों ने भी इस पद्धति को डाक व्यवस्था में अपनाया। इस प्रकार के घुंघरू युक्त भाले भी यहां संगृहीत किए गए हैं। औलाक प्रथा का वर्णन विख्यात यात्री इब्नबतूता ने भारत में बीते अपने संस्मरणों में विस्तार से वर्णित किया है।

vU; egÙo'kkyh LFky

सहारनपुर में सिखों की केंद्रीय संस्था श्री गुरु सिंह सभा है। यह संस्था सन् 1905 ई. में पंजाबी भ्रातृ सभा के रूप में स्थापित की गई थी। सन् 1912 ई. में विधिवत् रूप से नगर में कुतुबशेर थाने से रेलवे स्टेशन मार्ग पर मुख्य गुरुद्वारे का शिलान्यास किया गया। सन् 1914 में गुरुद्वारे की पक्की इमारत का निर्माण प्रारंभ किया गया। कासिमपुर पनियाली गांव स्थित गुरुद्वारे का भी विशेष महत्त्व है, यहां भारी संख्या में पंजाब और हरियाणा से श्रद्धालु पहुंचते हैं। देवबंद और बिहारीगढ़ में भी पुराने गुरुद्वारे हैं। बंदा बहादुर ने कभी नानौता में अपना पराक्रम दिखाया था, बंदा बहादुर की स्मृति में नानौता का गुरुद्वारा बनाया गया था। गंगोह कस्बे के अंतर्गत बाबर के समय हुए फकीर कुतुबे आलम की दरगाह है। सहारनपुर ही नहीं बल्कि हिमाचल, पंजाब और हरियाणा तक के अनुयायी यहां फकीर कुतुबे आलम की दरगाह पर माथा टेकने पहुंचते हैं। यहां सूफी संतों के अनेक तर्बरुकात संगृहीत किए गए हैं। मक्का–ए–मदीना, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेर, बहराईच और बाराबंकी के पीर पैगम्बर सिलसिलाए कादरिया, सबारियां नक्शे–बंदियां और निजामियां के तर्बरुकात यहां सुरक्षित हैं। हजरत कुतुबे आलम द्वारा हस्तलिखित

कुरआन भी यहां संगृहीत है। गंगोह में ही संत बाबा हरिदास का भी मंदिर है। संत हरिदास भी कुतुबे आलम के समकालीन हैं और इन दोनों के बीच गहरी मित्रता के किस्से लोग सुनाते हैं। सहारनपुर के गांव कुआं खेड़ा में शासन और प्रशासन के सहयोग से ऐसे संगम को तैयार किया गया जिसमें गंगा और यमुना की धाराएं एक होकर मिलती हैं। इस स्थान को संगम के नाम से ही पुकारा जाता है। सहारनपुर से देहरादून मार्ग पर नौगजा पीर स्थित है। हिंदुओं और मुसलमानों में इस पीर की बड़ी मान्यता है। यह स्थल रिमांउट डिपो के अंतर्गत आता है। हाईवे से होकर गुजरने वाले श्रद्धालु अपने वाहनों को रोककर नौगजा पीर के आगे शीश नवाकर आगे बढ़ते हैं। नौगजा पीर के साथ ही यहां शिव मंदिर और गुरुद्वारा भी है। पार्क इत्यादि का निर्माण कर इस स्थान को रमणीक स्वरूप दिया गया है। देवबंद कस्बे में गांव है जड़ौदा पांडा। यहां सुंदर वृक्षों के बीच बेहद रमणीय स्थल है बाबा नारायण दास का समाधि मंदिर। मुगलकाल में हुए बाबा नारायण दास जी की बहुत ख्याति थी। यहां लखौरी ईंटों से बना शिव का मंदिर और पुराना कुआं है। आषाढ़ के महीने के अंतिम रविवार यहां हजारों श्रद्धालु उमड़ते हैं। यह मनमोहक परिसर हरे–भरे वृक्षों से घिरा है और यहां स्वच्छता और हरियाली का विशेष ध्यान रखा जाता है।

भित्तिचित्र : जहां दीवारें बोलती हैं

भित्तिचित्र कला दुनिया की सबसे प्राचीन चित्रकला है। आदिम मानव ने पत्थर की गुफाओं में दीवारों पर लकीरें बना कर अपने चित्रकला प्रेम को अभिव्यक्ति दी थी। अभिव्यक्ति की यह विधा समय–समय पर दुनिया के अन्य भागों में विकसित होती रही। आज भी भित्तिचित्रण जारी है। सहारनपुर में भित्तिचित्रण की समृद्ध परम्परा मिलती है। सहारनपुर में मंदिरों और हवेलियों पर एक शताब्दी पहले तक भित्तिचित्र बनाए जाने की परम्परा अपने उत्कर्ष पर थी। वर्तमान में उस समय के हजारों भित्तिचित्र मिलते हैं जिन्हें मंदिरों, हवेलियों की दीवारों और छतों पर बनाया गया है।

सहारनपुर के भित्तिचित्रों में हिंदू, इस्लामिक और यूरोपीय तीनों प्रकार की संस्कृति का समावेश देखने को मिलता है। सहारनपुर के भित्तिचित्रों पर पहाड़ी, राजस्थानी और मुगलशैली का प्रभाव है। विभिन्न शैलियों का प्रभाव होते हुए भी सहारनपुर के भित्तिचित्रों में लोक शैली बखूबी निकल कर आई है। लोक जीवन पर बने भित्तिचित्र यहां के समाज का नैसर्गिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। यहां के भित्तिचित्रों को समझने और जानने के लिए यहां की लोक परम्पराओं, धार्मिक और पौराणिक कथाओं के विषय में ज्ञान होना अति

आवश्यक है। यहां के भित्तिचित्रों के विषय धार्मिक और पौराणिक कथाओं के अलावा सामाजिक परिवेश, प्रकृति बोध, श्रृंगारिकता, राज वैभव, सामंती जीवन, पक्षु–पक्षी, आलेखन, आभूषण, संगीत के उपकरण आदि प्रमुख हैं। धार्मिक अवसरों होई अष्टमी, करवा चौथ, विवाह और अन्य धार्मिक अवसरों पर भित्तिचित्रण की परम्परा है। यह परम्परा गांवों में अधिक प्रचलित हैं।

fHkfÙkfp=.k dh fo'k"krk

मंदिरों और हवेलियों पर पक्के भित्तिचित्र बनाने के लिए दीवारों पर विशेष प्रकार से शोधित चूने का लेपन किया जाता था। सुखाए जाने के बाद विभिन्न प्राकृतिक रंगों में सरेस या गोंद मिलाकर भित्तिचित्र बनाए जाते थे। भित्तिचित्रों का रंग इतना पक्का है कि सौ साल से अधिक पुराने होने पर भी स्वाभाविक रूप से रंग नहीं उतरा। अधिकांश स्थलों पर लोगों ने भित्तिचित्रों को धुएं और इन पर लिपाई कर गंदा कर दिया है। सहारनपुर के भित्तिचित्रों की कालावधि सन् 1750–1930 के बीच ठहरती है लेकिन ऐसा नहीं है इस अवधि से पहले और बाद में यहां पर भित्तिचित्रण का उल्लेख नहीं मिलता। इस अवधि में भित्तिचित्रों के प्रति धनाढ्य वर्ग में गहरी रुचि देखी गई। अमूमन जमींदार लोग अपनी हवेलियों, मंदिरों और अपने पूर्वजों की छतरियों को भित्तिचित्रों से सुशोभित करते थे। इस दौर में ऊंची हवेलियां लोगों की प्रतिष्ठा का सबसे बड़ा मानक हुआ करता था। हवेलियों पर भित्तिचित्र बनवाया जाना भी अनिवार्य हुआ करता था। लोग अपनी धार्मिक मान्यताओं पर आधारित चित्रों का चित्रण कराया करते थे। साथ ही साथ हवेलियों में अपनी वंश परम्परा, पुरुष और महिला सदस्यों का चित्रण भी कराया जाता था। अपने साथ काम करने वाले लोगों का चित्रण जैसे सेवक, सेविकाएं, द्वारपाल इत्यादि का चित्रण भी किया जाता था ऐसा चित्रण स्वामी की उदारता पर निर्भर होता था।

lgkjuiqj esa fHkfÙkfp=ksa dh 0;kidrk

सहारनपुर नगर के साथ–साथ सम्पूर्ण जनपद और ग्रामीण अंचल में हजारों भित्तिचित्र देखने को मिलते हैं। पुराने सहारनपुर की हवेलियों के अलावा, रामपुर मनिहारन, सरसावा, सोना अर्जुनपुर, पुवांरका, चिलकाना, नागल, मुजफ्फराबाद, नकुड़, सुलतानपुर, कोटा, गंगोह, सढ़ौली कदीम, तीतरो, रणदेवा, नवादा, हुलास, खुजनावर, आभा लखनौती, टिकरौल, बैंगनी, देवबंद, बादशाही बाग, बेहट, शाकुम्भरी देवी आदि में अनेक भित्तिचित्र हैं। लोगों की नासमझी और आधुनिक जीवन शैली के प्रति रुझान के चलते धीरे–धीरे भित्तिचित्र नष्ट होते जा रहे हैं और इनका संरक्षण केवल दैवीय कृपा के

कारण ही हो पा रहा है। हिंदू मंदिर, जैन मंदिर, हवेलियों, मस्जिदों, छतरियों, चौपालों, कब्रगाह, कुएं की छतरी, बारहदरी इत्यादि में भित्तिचित्र देखने को मिलते हैं।

lkLÑfrd feyu

सहारनपुर के भित्तिचित्रों में विभिन्न संस्कृतियों का मिलन दिखाई देता है। यह मिलन एक ही स्थान पर बने भित्तिचित्रों के पहनावे और उनके आभूषणों में हिंदू, मुस्लिम और पाश्चात्य प्रभाव होने के कारण देखने को मिलता है। हिंदू वेशभूषा में घाघरा, ओढ़नी, चोली, पगड़ी, धोती, जनेऊ, मुस्लिम वेशभूषा में सुत्थन अर्थात् पजामी, दुपट्टा, लंबी टोपी, कृत्रिम चोटी और पश्चिम की वेशभूषा में स्कार्फ, हैट, बेल्ट, दस्ताने, कोट, गाउन इत्यादि देखने को मिलते हैं।

lkn;l miekuk dh cgyrk

सहारनपुर के भित्तिचित्र सौंदर्य के उपमानों से भरे पड़े हैं। मंदिरों और हवेलियों पर चित्रित भित्तिचित्रों में नारी के सौंदर्य को दर्शाने के लिए उस

समय प्रचलित आभूषणों को सुंदरता के साथ प्रदर्शित किया गया है। बालों में झूमर और नाक में बड़ी नथ तो बहुत देखने को मिलती है। इनके प्रयोग से नारियों के सौंदर्य आधारित चित्र खूब खिलकर आए हैं। हंसली, ढूंगा, पंचागले, लौंग, माला, पाजेब, भुजबंद, बिंदी इत्यादि को भी चित्रकारों ने दर्शाया है।

संगीत पक्ष

मंदिरों के साथ संगीत की पुरानी परम्परा को सहारनपुर के भित्तिचित्रों ने भी कायम रखा। मंदिरों की दीवारें जहां श्रीकृष्ण के बांसुरी वादन से गुंजायमान प्रतीत होती हैं वहीं ढोल, सारंगी, इकतारा, ढोलक, वीणा, करताल, मंझीरे, रणसिंहा, तुरही आदि वाद्य यंत्र ऐसे चित्रित किए गए हैं कि मानो अभी स्वर की लहरियां दौड़ने लगेंगी। हवेलियों में भी इस प्रकार के चित्रों को स्थान दिया गया। अधिकांश हवेलियों में धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर घर की महिलाओं को ढ़ोलक बजाते हुए दिखाया गया है।

प्रकृति से निकटता

सहारनपुर के भित्तिचित्रों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी प्रकृति से निकटता है। भित्तिचित्रों से सुसज्जित कोई भी ऐसा स्थल नहीं है, जिसमें प्रकृति का कोई रंग देखने को न मिला हो। पेड़, पशु–पक्षी, फूल–पत्तियां, चांद–सितारे, सूरज आदि प्रमुखता से दर्शाए गए हैं। आम, बेल और केले के झुंड को प्राथमिकता से बनाया गया है। जीवों में घोड़ा, हाथी, सर्प, मोर, तोते, कुत्ता, बिल्ली, बंदर, गाय, शेषनाग, ऊंट, बैल इत्यादि का बहुत चित्रण किया गया है।

विशेष भित्तिचित्र

सहारनपुर के कोटा गांव में छोटे शिव मंदिर में नौ नारियों को हाथी के रूप में दर्शाया गया है, यह बेहद आकर्षक चित्र है। इसके अलावा यहां कमल पर खडे होकर बांसुरी वादन करते श्रीकृष्ण, राम लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा के लिए भेजते दशरथ, रिद्धि–सिद्धि के साथ विराजमान गणपति जी, गोपियों के वस्त्र चुराकर वृक्ष पर बैठे श्रीकृष्ण और गुहार लगाती गोपियां, रासलीला करते श्रीकृष्ण को बखूबी दिखाया गया है। कोटा के बड़े मंदिर में बाज के साथ गुरु गोविंद जी, श्रीराम के विवाह का मनमोहक दृश्य, होली खेलते राधा–कृष्ण पर पिचकारी से रंग फेंकती गोपियां, दुल्हन की डोली ले जाते कहार और घोड़े पर सवार दूल्हा, पक्षी से बतियाती युवती, आईने में देख कर शृंगार करती युवती, श्रीकृष्ण के विराट रूप को देखते अर्जुन, हिरण को हाथ में लेकर दुलारती युवती, शेर का शिकार करते हुए गोली चलाता

घुड़सवार बखूबी दिखाई देते हैं। चिलकाना में लालाओं के पूर्वजों की छतरी पर एक आकर्षक चित्र दिखाई देता है कि पार्वती ढपली बजा रही है और भगवान शंकर मग्न होकर नृत्य कर रहे हैं। चिलकाना के शिव मंदिर में बाल गणेश जी का सुंदर चित्र है जिन्हें गोद में लेकर पार्वती जी दुलार कर रही हैं। भांग छानते शिव–पार्वती भी यहां दर्शाए गए हैं। यहां कई गोपिकाएं स्वयं झूला बनी हुई हैं और श्रीकृष्ण झूला झूलते हुए बांसुरी बजा रहे हैं। यहां श्रवण कुमार अपने माता–पिता को कांवड़ में बैठा कर उन्हें यात्रा करा रहे हैं। सिंह पर सवार अष्टभुजा धारिणी मां दुर्गा का सौंदर्य भी दर्शनीय है। गंगोह में कंकराली सरोवर के निकट शिव मंदिर में अर्द्धनारीश्वर, गोवर्धन पर्वत उठाए श्रीकृष्ण, राजा को गुहार लगाते प्रजावासी दर्शाए गए हैं। सहारनपुर में बाबा लालदास के बाड़े के द्वार पर एक अनूठा चित्र है। यहां दो वानरों को दिखाया गया है इन दोनों वानरों के चेहरों में शेर का चेहरा भी बनाया गया है। वानरों की मूंछे शेर जैसी हैं। सरसावा में दरगाह जमालिया में भीतरी छत पर चूने के बीच से कुछ आलेखन झांकते दिखाई देते हैं। गंगोह की लाल मस्जिद में यहां भी कुछ आलेखन दिखाई देते हैं। हुलास टीले पर बने शिव मंदिर में श्रीकृष्ण को गोपियों संग रास रचाते हुए दिखाई देते हैं। फंदपुरी गांव के मंदिर में जौहर करती स्त्रियां, श्रीकृष्ण से उपदेश ग्रहण करते पांडव, गंगावतरण, दुष्टों का संहार करती मां दुर्गा को दर्शाया गया है। मल्हीपुर के जैन मंदिर में चांदनपुर का अतिशय क्षेत्र, श्रेयांश राजा–रानी ऋषभ मुनि को आहार देते हुए दिखाई पड़ते हैं।

सहारनपुर के श्री दिगंबर जैन पंचायती मंदिर में आकर्षक आलेखन से सुसज्जित छत सज्जा, साथ ही अनेक कथाओं से जुड़े प्रसंगों को दर्शाया गया है। सरसावा के पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती मंदिर में सोनागिरी सिद्धक्षेत्र, श्री जल मंदिर पावापुरी, श्री सम्मेद शिखर जी सिद्ध क्षेत्र को सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है। सुलतानपुर के जैन मंदिर में अनेक भित्तिचित्र सुशोभित हैं। यहां दीवारें, दरवाजे, स्तम्भ, छत चारों ओर भित्तिचित्र बनाए गए हैं। यहां चटख रंगों का प्रयोग करते हुए सुदर्शन मेरु जी, श्री पावापुरी जी, श्री गिरनार जी, श्री चंपापुर जी, श्री सोना गिर जी, श्री पंच पहाड़ी क्षेत्र को बखूबी प्रदर्शित किया गया है।

शाकुम्भरी देवी स्थित कमलेश्वर महादेव में छत पर बने चित्र धुएं के कारण धुंधला गए हैं। तप में रत तपस्वी, राम–सीता–लक्ष्मण और मंदिर शृंखला को दिखाया गया है। खेड़ा मुगल गांव में स्थित शिव मंदिर में शेष शैय्या, श्रीकृष्ण–राधा, शिव–पार्वती, छत पर श्रीकृष्ण के साथ गोपियों को दर्शाया गया है। लखनौती में एक कब्रिस्तान पर आलेखन अपनी आखिरी अवस्था में हैं। इन्हें कभी बहुत सुंदर ढंग से बनाया गया होगा। पठेड़ की खंडहर हो चुकी नवाबी मस्जिद में भी छत पर आलेखन के चित्र बस समाप्त ही होने को हैं। सहारनपुर की प्रसिद्ध लाला नंदा गाटा की हवेली अब केवल किस्सों में शेष है। भित्तिचित्रों से भरी यह हवेली कभी सहारनपुर की शान हुआ करती थी। नानौता के श्री दिगंबर जैन पंचायती मंदिर में छत पर बहुत सूक्ष्म कार्य किया गया है। किनारियों पर सुंदर आलेखन बने हैं। मंदिर में भित्तिचित्र काफी धुंधले हो गए हैं। नवादा गांव के शिव मंदिर में बाहरी छत पर गोपियों के हाथ पकड़े नृत्य करते श्रीकृष्ण को दिखाया गया है। यहां समुद्र–मंथन, वराह अवतार, विष्णु शेष शय्या, नौ स्त्रियों से बना हाथी, बीन बजाती स्त्री, गणपति को दुलार करती पार्वती का भी सुंदर दृश्य है।

माटी के रंग, सांझी के संग

भारतीय संस्कृति में शारदीय नवरात्र पर्व को अश्विन मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष रामनवमी तक मनाया जाता है। इन दिनों शक्ति की प्रतीक मां दुर्गा का व्रत रखकर उनकी पूजा–आराधना की जाती है। उत्तर भारत में इन दिनों स्वयं मिट्टी से बनाई गई सांझी मां की स्थापना कर देवी स्वरूप पूजा की जाती है। यह इस क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण लोककला है जो धीरे–धीरे आधुनिकीकरण के कारण दम तोड़ती जा रही है। इसका संरक्षण कर इसे बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है।

Lkk>h LFkkiuk vkj eku;rk,

मान्यतानुसार नवरात्र के नौ दिनों में देवी मां पर्वतों के निवास को छोड़कर भक्तों के घरों में निवास कर बुरी आत्माओं को दूर भगाती है। मां का मिट्टी से स्वयं बनाया स्वरूप सांझी कहलाता है। यद्यपि वर्तमान में बाजार से मिलने वाली देवी मां की मूर्तियों ने मिट्टी से बनी सांझी का स्थान ले लिया है। फिर भी सहारनपुर और इसके निकटवर्ती जिलों में सांझी माई का बहुत महत्त्व है। ग्रामीण क्षेत्रों में नवरात्र के एक सप्ताह पहले से मिट्टी लाकर सांझी माई बनाई और रंगी जाती है। सांझी माई

को घर की दीवार पर गोबर से चिपकाया जाता है। सांझी माई का हर घर में स्वागत अतिथि मानकर किया जाता है। घर की महिलाओं द्वारा बच्चियों का सहयोग लेकर मिट्टी से सांझी माई और अन्य खेल–खिलौने बनाए जाते हैं। मिट्टी से ही सांझी माई के आभूषण बनाए जाते हैं। साथ ही साथ सांझी माई के उपयोग की वस्तुएं पंखा, चप्पल, हथियार इत्यादि बनाए जाते हैं। सांझी माई को प्रेम के साथ चुनरी चढ़ाई जाती है और छत्र लगाया जाता है। सांझी का सम्पूर्ण मंदिर टिकड़ियों से सजाया जाता है और उसमें तोते–मोर, सूरज, चांद आदि को स्थान दिया जाता है। नवरात्र भर देवी के स्वरूप का पूजन किया जाता है।

lkekftd ifjo'k dh vfHk0;fDr

जिस घर में सांझी लगाई जाती है, उस घर के सामाजिक परिवेश का ताना–बाना भी सांझी में दृष्टिगत होता है। यदि कोई व्यक्ति चाट बनाता है तो उसके घर सांझी में चाट वाला अवश्य बनाया जाता है। यदि कोई किसान है तो कोई न कोई कृषि उपकरण सांझी में बनाया जाना अनिवार्य ही है। जो आभूषण स्त्रियों को स्वयं पसंद हैं, उन्हें सांझी माई को अवश्य ही पहनाया जाता है। ऐसे में सांझी के साथ सामाजिक परिवेश की अभिव्यक्ति भी दृष्टिगत होती है। मोहल्ले की लड़कियां एकत्र होकर घर–घर सांझी माई और संझा भाई के गीत गाती हैं। गांवों में आज भी यह परम्परा कायम है लेकिन शहर से यह परम्परा समाप्त हो चुकी है। सांझी के साथ सांझी का भाई संझा अमूमन गोबर से बना कर दीवार पर लगाया जाता है।

lef) vkj izÑfr dh fudVrk dh izrhd lk>h

लोककला सांझी जीवन में समृद्धि, उत्थान और उन्नति की प्रतीक है। सांझी के साथ तोते बनाने की परम्परा विशेष है। तोता एक ऐसा पक्षी है जो वहां निवास करता है जहां हरियाली और खुशहाली दोनों का निवास हो। हर घर में सांझी के साथ तोते को बनाकर अपने घर में खुशहाली और हरियाली की कामना की जाती है।

lk>h ekbZ vkj rkykc dk vVV fj'rk

सांझी माई और तालाब का रिश्ता बहुत पुराना है। सांझी माई का नौ दिनों की यात्रा तालाब से शुरू होता है और तालाब पर ही समाप्त हो जाती है। जिस तालाब से गांव की लड़कियां मिट्टी लाकर सांझी माई बनाती हैं, उसी तालाब में सांझी माई को प्रवाहित कर दिया जाता है। प्राचीन काल से मानव जीवन में तालाब के महत्त्व से जुड़ी यह परम्परा तालाबों से जुड़ाव की

आखिरी कड़ी है। सांझी पर बाजारवाद और तालाबों पर अतिक्रमण, कम होते जल स्तर के चलते इस आखिरी कड़ी पर भी संकट मंडराने लगा है। गांव में सांझी विसर्जन ढोल और गीतों के साथ किया जाता है।

lk>h l tM ykdxhr vkj tuHkkouk,

देहात क्षेत्र में सस्वर गाए जाने वाले सांझी के गीत बहुत अनूठे हैं। इन लोकगीतों में न केवल धार्मिक विश्वास से जुड़ी विभिन्न मान्यताएं सामने आती हैं बल्कि सामाजिक ताने–बाने को समझने के लिए भी इनमें बहुत कुछ है। इन लोकगीतों में पुरानी परम्पराओं का लेखा–जोखा समाहित है। सांझी के साथ–साथ लोक परम्परा के प्रतीक ये लोकगीत भी दम तोड़ने लगे हैं। सांझी लोकगीतों का स्थान फिल्मों की धुन पर बनी तुकबंदी लेती जा रही है। लेकिन उपेक्षा के बाद भी अनेक लोकगीत हमारे बीच जीवित हैं। पर इन लोकगीतों को जीवित रखने का श्रेय उन पढ़े–लिखे विद्वानों को नहीं हैं जो गांव छोड़कर शहरों की अटारियों में बस गए हैं बल्कि यह श्रेय उन बूढ़ी माताओं को है जो अपने कंपकंपाते होठों पर इन्हें जीवित रखी हुई हैं। आइए, कुछ लोकगीत और उनमें झांकती लोक परम्पराओं पर दृष्टिपात करते हैं–

1. *सांझी रे मांगे हरा–भरा गोबर।*
   कहां से लांऊ सांझी हरा–भरा गोबर।

मेरौ तो बीरा डंगरों में बैठ्या।
ले सांझी तू हरा–भरा गोबर।

2. *गडर–गडर तेरा गड्डा जा*
गड्डा है सरकार का
कौण सी बोब्बो बैठग्गी
सांझी बोब्बो बैठग्गी

गडर–गडर तेरा गड्डा जा
गड्डा है सरकार का
कौण सा भाई बैठग्गा
संझा भाई बैठग्गा।।

3. *जाग सांझी जाग, तेरे माथे लागे भाग।*
भोग लगाओ मेरी मां का,
बिंदी भी लाए, टीका भी लाए
तुम्हारा कराएं जगराता
सांझी माई आरता– सांझी माई आरता

4. *जाग सांझी जाग, तेरे माथे लागे भाग*
तेरा बनियो सुहाग
तुझे दिल्ली शहर से ब्याहन आए
अटकन–मटकन जूती लाए
ओढ़्ढन को तेरे चूनर लाए
माथे को तेरे बिंदी लाए
हाथों को तेरी कंगन लाए

5. *सांझी म्हारी भींत सजे।*
सांझी म्हारी भींत सजे।
साथ खड़ा सांझी का भाई
सांझी माई म्हारे खुशियां लाई।

U;krs ds lkFk fonk gks tkrh gS lk>h ekbZ

अष्टमी पर कन्याओं को भोजन कराने के पश्चात् सांझी उतार दी जाती है। गांव भर के बच्चे एकत्रित होकर गांव के निकट तालाब या बहते दरिया में सांझी माई को प्रवाहित करने जाते हैं। इस प्रकार सांझी माई को हर्ष के साथ विदा कर दिया जाता है, आगामी वर्ष फिर से घर आने का न्यौता देकर। इस अवसर पर खील–पताशे का प्रसाद वितरित किया जाता है। शुभ के लिए सांझी माई के भाई संझा को घर में ही रख लिया जाता है। सांझी माई की स्थापना के साथ बोए जौ के अंकुरण पर उन्हें बहनों द्वारा तोड़कर भाइयों के कान पर सजाया जाता है। इन्हें नौरतें कहते हैं। नौरतें रखने पर भाई द्वारा अपनी बहन को नेग स्वरूप पैसे दिए जाते हैं।

गंगा माई, जिनके चरण पखारन आई

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।
लाल कियो विश्राम जहां, लाल कियो अशनान,
गंगा मइया आन के, हुई कृपा निधान।

साहित्य और धर्म की समझ रखने वाले सभी लोग इन पंक्तियों से परिचित हैं। ये प्रसिद्ध पंक्तियां सहारनपुर के संत बाबा लालदास की स्तुति का अंश हैं। गंगा और यमुना के बीच स्थित सहारनपुर संतों और तपस्वियों की तपस्या और उपेदश स्थली रहा है। समय–समय से यहां संतों ने अपने ज्ञानोपदेश और कर्मों से इस क्षेत्र को पवित्र किया है। कहते हैं कि बाबा लालदास के पांवों (पैरों) को धोने के लिए नदी स्वयं अवतरित हो गई थी। इसीलिए नगर से होकर बहने वाली इस नदी को पांवधोई नदी के नाम से पुकारा जाता है। मुगल काल में बाबा लालदास ऐसे संत हुए जिनकी ख्याति सहारनपुर ही नहीं बल्कि देश और देश से बाहर फैली। इन्हें बाबा लाल दयाल के नाम से भी

बाबा लालदास बाड़े का मुख्य द्वार

जाना जाता है। मुगल शहजादा दाराशिकोह भी इनका शिष्य था। बाबा लालदास और दाराशिकोह के बीच आध्यात्मिक वार्तालाप बहुत प्रसिद्ध हुआ।

बाबा लालदास योगी तपस्वी थे। इनके जन्म को लेकर दो प्रचलित मत मिलते हैं। एक मत के अनुसार इनका जन्म माघ शुक्ल पक्ष की द्वितीया को लाहौर के निकट कसूर गांव में हुआ था। बाबा लालदास का जीवन काल 1412 संवत् से 1712 संवत् तक माना जाता है। जिससे बाबा लाल के जन्म का सन् 1355 ई. बैठता है। सहारनपुर को इन्होंने अपनी तपस्थली बनाया था। इस मत के अनुसार उन्होंने अपने योगबल से कुल 300 वर्ष की आयु प्राप्त की। दूसरे मत के अनुसार इनका जन्म राजस्थान के अलवर से उत्तर दिशा में धोलीधूब गांव में हुआ। कवि दंग्रासी के मतानुसार इनका जन्म संवत 1597 सावन बदी नाग पंचमी रात्रि 12 बजे हुआ। इस मत के अनुसार इनका जन्म सन् 1540 ई. मेंहोता है। इनके पिता का नाम चांदमल और माता का नाम समदा था। लालदास जी का निर्वाण संवत 1705 में हुआ। इस प्रकार यहां इनका जीवनकाल 188 वर्ष का माना जाता है। अलवर के गांव बंधोली, तहसील रामगढ़ के गांव रसगढ़ और शेरपुर में भी बाबा जी का मंदिर है। कुछ लोग बाबा लालदास और बाबा लालदयाल को अलग–अलग मानते हैं तो कुछ दोनों को एक ही मानते हैं। बाबा लालदास जी के नाम, जन्म, जन्म स्थानों और लंबी आयु के विषय में मिलने वाले अंतर को लेकर अभी व्यापक शोध शेष हैं।

पांवधोई नदी, सहारनपुर

बाबा लालदास जी ने विश्व भर में कुल 22 गद्दियां स्थापित की। उनकी प्रमुख गद्दी ध्यानपुर, अमृतसर, दातापुर, कलानौर, पेशावर, काशी, अयोध्या, उज्जैन, मुलतान, गजनी, चिनियोट, काबुल, जम्मू, पुष्कर्राज, हस्तिनापुर में रही। इनमें से कई गद्दियां आज भी संचालित हो रही हैं। बाबा लालदास के चमत्कारों और सिद्धियों से जुड़ी अनेक कथाएं प्रचलित हैं। सहारनपुर में पांवधोई नदी को लेकर बहुत रोचक कथा उनके साथ जुड़ी हुई है। कहते हैं कि बाबा लालदास अक्सर स्नान करने के लिए पैदल ही हरिद्वार तक जाया करते थे। एक बार उनके शिष्यों ने कहा कि बाबा क्या आप यहीं गंगा का अवतरण नहीं कर सकते ? इस पर बाबा लालदास सहारनपुर स्थित अपनी तपस्थली पर तपस्या करने के लिए बैठ गए उत्तर में गांव शकलापुरी के निकट शंकलेश्वर महादेव से कुछ स्रोत चमत्कारी रूप से धरती से फूटे और जलधारा बहने लगी। यह जलधारा बहते–बहते वहां पहुंच गई जहां बाबा तपस्यारत थे। जलधारा ने बाबा के चरणों को स्पर्श किया, इसी कारण इस जलधारा को पांवधोई नदी का नाम दिया गया। आज भी यह जलधारा सहारनपुर की गंगा पांवधोई नदी के रूप में सहारनपुर में जाना जाता है। पांवधोई नदी के किनारे ही बाबा लालदास की तपस्थली है जिसे बाबा लालदास के बाड़े के नाम से जाना जाता है। प्राचीन समय में यहां पर बैसाखी के अवसर पर मेले का आयोजन होता था। इस परम्परा को दोबारा नगर निगम के सहयोग से प्रारंभ किया गया है। लालदास बाड़े से पहले लालद्वारा बनाया गया है। यहां बाबा का मंदिर बनाया गया है। इस स्थान पर बाबा का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। बाबा लालदास और मुगल शहजादे दाराशिकोह के बीच आध्यात्मिक वार्तालाप सन् 1647–48 ई. में लाहौर में हुआ था। एक मुगलकालीन चित्र में नवम्बर 1653 ई. में बाबा लाल और दाराशिकोह के बीच वार्तालाप को दर्शाया गया है। दाराशिकोह और बाबा लालदास के बीच दार्शनिक प्रश्नोत्तरी मुगल बादशाह शाहजहां के दरबारी और फारसी के सुप्रसिद्ध कवि मुंशी चंद्रभान विरहमन एवं रायजादा दास द्वारा लिपिबद्ध की गई। दाराशिकोह द्वारा लिखित पुस्तक हसनत–उल–आरिफिन में बाबा लालदास का विशद वर्णन किया गया है। दाराशिकोह ने बाबा लालदास के लिए लिखा है, बाबा लाल एक आरूढ़ योगी हैं। इनके समान प्रभावशाली और उच्च कोटि का महात्मा हिन्दुओं में मैंने नहीं देखा। बाबा का कहना है कि हर धर्म में उच्च कोटि के महात्मा हैं, जिनको ईश्वर से साक्षात्कार होता है। लोक समूह के साथ दाराशिकोह भी उनकी प्रतिभा और योगशक्ति से आकृष्ट होकर उनके शिष्य हो गए। 'ज्ञान गंगा' पुस्तक के संदर्भ अनुसार बाबा लालदास जी के ग्रंथ बर्लिन लाइब्रेरी, जर्मनी बोडिलियन लाइब्रेरी, ऑक्सफ़र्ड ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी में सुरक्षित रखे हैं।

ckck ykynk l vkj nkjkf'kdkg d chp okrkyki

nkjkf'kdkg& संसार और दौलत किसे कहते हैं ?

ckck yky& शरीर सम्पूर्ण संसार है और स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत।

nkjkf'kdkg& शोभा के साथ जीवित कौन है और मृत कौन है ?

ckck yky& शोभा के साथ जीवित वे हैं जिनके दिल जीवित हैं और शरीर मरा हुआ है। मृत वे हैं जिनका दिल मृत है और शरीर जीवित।

nkjkf'kdkg& सुनना और कहना कहां उचित है ?

ckck yky& सुनना तो गुरु से उचित है और उस व्यक्ति से भी जो अपने से अधिक आयु वाला हो और कहना उस से उचित है जो सुनना चाहता हो।

nkjkf'kdkg& अगर कोई जिज्ञासु न हो और बेकार बातचीत करे तो क्या करना चाहिए ?

ckck yky& खामोशी– मौनावलम्बन।

nkjkf'kdkg& पुरुष और महापुरुष किसे कहते हैं ?

ckck yky& इंद्रियों ने जिसे जीत लिया है वह पुरुष है और जिसने इंद्रियों को जीत लिया है वह महापुरुष।

nkjkf'kdkg& ध्यान और समाधि क्या है ?

ckck yky& ध्यान पकड़ना है और समाधि छोड़ना। मन जंगली हिरण के समान है जब वह कैद में आता है तो बड़ी बेचैनी का अनुभव करता है। उसके पश्चात् बेचैनी और उछलकूद से थक जाता है तो जंगली स्वभाव को छोड़ देता है और निर्बल बन जाता है।

प्रणम्य व्यक्तित्वः राधावल्लभ सम्प्रदाय के प्रर्वतक हित हरिवंश

सहारनपुर की रत्नगर्भा गंगा–जमुनी धरती से समय–समय पर अनेक अमूल्य रत्न निकले। ऐसे ही एक रत्न का नाम है–महाप्रभु हित हरिवंश गोसाईं। हित हरिवंश महाप्रभु राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक रहे। उन्हें न केवल राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त है बल्कि राधा के स्वरूप में कृष्ण को अनुभूत करने की अनूठी परम्परा भी उन्हीं के द्वारा कायम की गई। आज वृंदावन में हित हरिवंश की अनूठी परम्परा का न केवल निर्वहन हो रहा है बल्कि उनकी यह परम्परा ब्रज क्षेत्र के लिए मिशाल बन गई है। हरिवंश जी ने एक और महत्त्वपूर्ण कार्य किया जो इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से और भी अधिक विशेष है। हित हरिवंश जी जब सहारनपुर से वृंदावन गए तो उन्होंने वहां उन स्थलों की तलाश की जो श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े हुए थे और जनमानस लगभग उन्हें भुला चुका था। उन्होंने तलाश कर सभी स्थलों को फिर से पौराणिक रूप भी दिया। भाषा काव्य के ऐसे मर्मज्ञ थे हरिवंश जी कि मध्ययुगीन भक्तिकालीन कवियों में ब्रजभाषा परिष्कार और भाषा प्रांजलता को लेकर वे शीर्ष पर विराजमान हैं।

महाप्रभु हित हरिवंश

tUe] fir' ijEijk vkj lLdkj

हित हरिवंश जी के पिता गौड़ ब्राह्मण पंडित व्यास मिश्र जी देवबंद के प्रतिष्ठित पंडित और ज्योतिषाचार्य थे। वेद–शास्त्रों के वे ज्ञाता थे। सहारनपुर जनपद का देवबंद कस्बा प्राचीन काल में देववृंद और बाद में देववन के नाम से विख्यात रहा। व्यास मिश्र ही के समय इस कस्बे को देववन के नाम से पुकारा जाता था। उनकी ख्याति दूर–दूर तक व्याप्त थी। पुरानी कहावतों के अनुसार उनके पूर्वज राज्याश्रय में रह कर अपनी विद्वता का लोहा मनवा चुके थे। ऐसे में पंडित जी का घर धन–धान्य से भरा–पूरा था। पंडित व्यास मिश्र जी के घर संतान के रूप में हरिवंश जी का जन्म देर से हुआ था। एक बार पंडित व्यास मिश्र जी अपनी पत्नी श्रीमती तारा देवी के साथ मथुरा मंडल की यात्रा पर थे। जब वे मथुरा–आगरा मार्ग में थे तो पत्नी को प्रसव पीड़ा होने के कारण उन्हें मथुरा से 12 कि.मी. दूर बाद (वाद) गांव में ठहरना पड़ा। यहीं हित हरिवंश जी का जन्म हुआ। हित हरिवंश जी के जन्म को लेकर दो मत प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार उनका जन्म सन् 1502 में हुआ था और दूसरे मत के अनुसार उनका जन्म संवत् 1530 अर्थात् सन् 1473 में हुआ था। अधिकांश विवरणों से उनके जन्म की सही तिथि सन् 1502 ई. ही मानी गई है। यह भी वर्णन मिलता है कि पंडित व्यास मिश्र कुछ दिन आगरा के बादशाह के दरबार में भी रहे और ये हित हरिवंश जी के जन्म के समय आगरा की ही यात्रा पर थे। छह माह यहीं बिताने के बाद में देवबंद लौट आए। यहीं पर पंडित व्यास मिश्र जी ने अपने पुत्र को शिक्षा–दीक्षा दी। इन्हें संस्कृतनिष्ठ भाषा का संस्कार अपने पिता से मिला था। बचपन से ही उनकी प्रतिभा व पाण्डित्य का प्रभाव समाज पर दिखने लगा था। बचपन में वे एक कुएं में कूद गए थे, जब कुएं से बाहर निकले तो उनके हाथ में ठाकुर जी की सुंदर मूर्ति थी। श्याम वर्ण द्विजभुज मुरलीधारी श्री विग्रह का नाम उन्होंने ठाकुर रंगीलाल रखा। आज भी यह मूर्ति देवबंद के राधा नवरंगीलाल मंदिर में विराजमान है। 16 वर्ष की आयु में इनका विवाह कर दिया गया। इनकी पत्नी का नाम रुक्मिणी देवी था। इनसे इन्हें तीन पुत्र और एक पुत्री प्राप्त हुई।

o`nkou xeu vkj o`nkouokfl;ka dk Lug

सहारनपुर के देवबंद में ही उन्होंने अपना बचपन और किशोर अवस्था बिताई। जब हित हरिवंश जी ने अपने जीवन के 32 वें बसंत में प्रवेश किया तो उनका मन वृंदावन जाने का हुआ। हित हरिवंश जी श्री राधाकृष्ण का स्मरण करते हुए वृंदावन के लिए निकल गए। मार्ग में चिरथावल नामक गांव में आत्मदेव नाम के ब्राह्मण ने इनका स्वागत किया और अपने यहां विश्राम के लिए कहा।

श्री राधा नवरंगी लाल मंदिर, देवबंद

उनके अलौकिक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आत्मदेव ने अपनी दो कन्याओं के विवाह का प्रस्ताव हित हरिवंश जी के सामने रखा। कहते हैं कि स्वप्न में राधा जी की प्रेरणा मिलने से उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। आत्मदेव ने उन्हें राधावल्लभ की सुंदर मूर्ति भी भेंट की। वृंदावन में सर्वप्रथम हित हरिवंश जी मदन टेर पर रहे और उसी जगह राधावल्लभ को लाड़ लडाया। तेजस्वी व्यक्तित्व के आगमन की चर्चा सर्वत्र फैल गई। महाप्रभु हित हरिवंश जी ने सन् 1934 ई. को अपने उपास्य देव राधावल्लभ की मूर्ति सेवाकुंज में स्थापित की। वृंदावन पहुंचने पर उनके पास डाकू नरवाहन पहुंचा। उस समय ब्रज में उसका आतंक फैला हुआ था। डाकू नरवाहन महाप्रभु हरिवंश जी से इतना प्रभावित हुआ कि वह उनका शिष्य हो गया। श्री हरिवंश जी के ओजमयी सौंदर्य, ज्ञानमयी विद्या और शीलतापूर्ण आचरण देखकर ब्रजवासी इन पर मुग्ध हो गए और इनको कृष्ण की वंशी का साक्षात् अवतार मानने लगे। वह तत्कालीन भक्त एवं संत समाज में श्रीजू, श्रीजी, हितजू, हिताचार्य आदि के नामों से सुविख्यात थे। इनकी शिष्य परम्परा में भक्त कवि हरिराम व्यास, सेवक जी, ध्रुवदास हिंदी के प्रसिद्ध कवि हुए।

jkèkkoYyHk lEiznk; vkj voèkkj.k,a

हित हरिवंश जी ने आचरण द्वारा उपासना, भक्ति, काव्य और संगीत आदि के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रतिमान गढ़े। राधा को गुरु मानते हुए इन्होंने राधावल्लभीय उपासना पद्धति को प्रारंभ किया। इस सम्प्रदाय की उपासना रसोपासना

कही जाती है। जिसमें इष्ट देवी राधा की ही प्रधानता है। हित हरिवंश जी का मानना था कि राधा की उपासना और प्रसन्नता से ही कृष्ण भक्ति का आनंद प्राप्त होता है। राधा जी में उनकी अनन्य आस्था थी। राधा–कृष्ण से जुड़े अनेक पदों की रचनाएं उन्होंने की। उनकी उपासना को सखी भाव की उपासना माना गया है। वे कहते थे, 'मैं अपने जन्म कर्मानुसार नरक में जाऊँ या परमपद प्राप्त करूं, सर्वत्र मेरे हृदय में राधा ही सर्वदा विराजी रहें।' रसिक वाणियों में यह कहा गया है कि हरिवंश जी को हित की उपाधि राधा रानी ने मंत्रदान करते समय दी थी। राधा की आराधना में डूबे हरिवंश जी का यह मार्मिक भाव देखिए, वह कहते हैं,–

jluk dVk t| vu jVk] fujf[k vu QVk ukuA
lou QVk t| vu l|uk] fcu jkèkk tl cuuAA

श्री राधावल्लभ का विग्रह मंदिर निर्माण अकबर के खजांची सुंदरदास भटनागर ने कराया। मुगल बादशाह अकबर द्वारा वृंदावन के सात मंदिरों को उनके महत्त्व के अनुरूप 180 बीघा जमीन आवंटित करने का वर्णन मिलता है, जिसमें से राधावल्लभ मंदिर को 120 बीघा जमीन दी गई। मंदिर सुंदर लाल पत्थरों से बनवाया गया। कभी मंदिर के शीर्ष पर भव्य शिखर था, जिसे औरंगजेब ने तुड़वा दिया था।

oìnkou ds ,frgkfld Lo:i dk ikdVhdj.k

हित हरिवंश जी के धार्मिक महत्त्व के कारण उनका एक स्वरूप लगभग छिपा रहा। यह स्वरूप था उनका खोजी व्यक्तित्व। हित हरिवंश जी के वृंदावन पहुंचने से पूर्व द्वापर युगीन वृंदावन पूर्ण रूप से लुप्त हो चुका था। हित जी के पहुंचने पर वृंदावन पुनः अपने पुराने गौरव की ओर लौटा। हित महाप्रभु ने वृंदावन में स्थित श्री राधा–कृष्ण के नित्य क्रीडा स्थलों को खोजा। द्वापर युग के कृष्णकालीन वृंदावन के लुप्त प्राचीन स्थलों का प्रकटीकरण किया। उन्होंने पंचकोसी वृंदावन में रास मंडल, सेवाकुंज, वंशीवट, धीर समीर, मान सरोवर, हिंडोल स्थल, श्रृंगार वट और वन विहार लीला स्थलों को सामान्य जन से परिचित कराने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

fgr gfjoa'k Ñr jpuk,a

jkèkk lèkkfufèk& हित हरिवंश द्वारा विरचित यह स्रोत्रकाव्य संस्कृत में लिखा गया है। इसमें कुल 270 श्लोक हैं। राधा की वंदना, उपासना, प्रशस्ति, सेवा, पूजा, भक्ति, सामीप्य, सौंदर्य आदि के विविध वर्णनों से परिपूर्ण यह ग्रंथ अपनी इष्ट अनन्यता के लिए भक्तिकाव्य में श्रेष्ठतम स्रोत्रकाव्य समझा जाता है।

;eqk"Vd& यह यमुना की वंदना में लिखा हुआ आठ श्लोकों का प्रशस्ति काव्य है।

fgr pkjklh& हित हरिवंश द्वारा विरचित चौरासी पदों के संग्रह का नाम हित चौरासी है। राधावल्लभ सम्प्रदाय का मूल ग्रंथ यही है। हरिवंश जी ने ब्रजभाषा का समस्त माधुर्य इसमें उड़ेल दिया है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्राचीन प्रति 17वीं शती की मिलती है। यह शुद्ध रस पद्धति से लिखा गया मुक्तक पदों का संकलन है।

LQVok.kh& स्फुटवाणी में 27 पद संकलित हैं, जो सिद्धांत प्रतिपादन से साक्षात सम्बन्ध रखने वाले हैं। स्फुटवाणी में प्रेम, अनन्यता, राधा भक्ति, जीवनोद्देश्य आदि विषयों का प्रत्यक्ष रूप से प्रतिपादन हुआ है।

eè;dkyhu dfo;ksa esa LFkku

मध्यकालीन कवियों में हित हरिवंश जी का अपना अलग ही स्थान है। विशेषकर हित चौरासी के पदों का पाठ करने के साथ ही मन में उस भाषा की प्रेषणीयता और भाव समृद्धता के कारण वर्णित विषय मानो साक्षात हो उठता है। ब्रज भाषा का जो प्रयोग हित हरिवंश ने अपने काव्य में कर दिया, वैसा प्रयोग कोई दूसरा कवि कभी नहीं कर सकता। यद्यपि निर्विवाद रूप से सूरदास ब्रज भाषा के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं लेकिन उनकी भाषा ब्रज क्षेत्र की लोकभाषा से प्रभावित है जबकि संस्कृत के विद्वान पुत्र की संतान होने के कारण हित हरिवंश जी की ब्रजभाषा संस्कृतनिष्ठ और प्रांजल है। नंददास ऐसे कवि हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में शब्द परिष्कार को प्रधानता दी है लेकिन उनकी भाषा समृद्धता के मामले में हित हरिवंश जी की भाषा से पीछे छूट जाती है। हरिवंश जी को तत्सम शब्दावली के साथ ब्रजभाषा को गढ़ने की वह दक्षता प्राप्त थी कि भाषा अद्भुत हो उठी। ब्रजभाषा के भक्त कवियों में मूर्धन्य पद पर आसीन करने के लिए उनकी भाषा की प्राजंलता, शब्द सौष्ठव, चित्रात्मकता और वर्ण विन्यास पर्याप्त है। उनका प्रयोग देखिए–

अभिनय–निपुन लटकि लटि, लोचन, भृकुटि अनंदन चायौ।
तत थेई धरति नवल गति, पति ब्रजराज रिझायौ।
बरसत कुसुम मुदित नभ–लायक इंद्र निसान बजायौ।
हित हरिवंश रसिक राधापति, जस बितान जग छायौ।।

ijyksd xeu

हित हरिवंश महाप्रभु ने ब्रज में यमुना तट पर मानसरोवर के निकट भांडीरवन के भंवरनी नामक निकुंज में सन् 1552 लुप्त को अपने शरीर का त्याग किया।

अनुकरणीयः नशामुक्त गांव मिरगपुर

गंठा लसन तमांखु जोई।
मदिरा मांस तजे सिख सोई।
हमारा धर्म रहेगा जब तक।
मिरगपुर सुख पाए तब तक।।

^प्याज, लहसुन, तंबाकू, शराब और मांस को त्यागने वाला ही बाबा फकीरा दास का शिष्य हो सकता है। जब तक गांव मिरगपुर में इस नियम का पालन होता रहेगा यह गांव और यहां के निवासी दोनों सुखी रहेंगे।'

जब देश में मुगल बादशाह जहांगीर का शासन था उस समय बाबा फकीरा दास ने वैदिक धर्म की रक्षा करते हुए व्यसनों से दूर रहने का संदेश दिया। बाबा ने गांव मिरगपुर में अपनी कुटी बनाई थी। बाबा फकीरा दास का सदियों पुराना यह संदेश गांव मिरगपुर को आज भी खुशहाल किए हुए है। गांव में बाबा फकीरा दास को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है। उनकी सिद्धकुटी में न केवल मिरगपुर के ग्रामीण बल्कि दूर–दूर से लोग अपनी मनोकामनाओं को लेकर पहुंचते हैं। देवबंद से केवल आठ किलोमीटर दूर गांव मिरगपुर के इतिहास की बात करें तो पहले यह गांव पूर्ण रूप से हिंदू गांव था बाद में धर्मांतरण के कारण अधिकांश ग्रामीणों ने मुस्लिम धर्म ग्रहण कर लिया या कुछ

सिद्धकुटी, मिरगपुर

परिवार धर्म परिवर्तन से डरकर गांव को छोड़कर चले गए। गुर्जर बिरादरी के मोल्हड़ बाबा का परिवार बचा। मोल्हड़ बाबा ने संत फकीरा दास से गांव में फिर से हिंदुओं को बसाने का अनुरोध किया। बाबा फकीरा दास के आशीर्वाद से गांव में फिर से हिंदुओं ने बसना शुरू कर दिया। सभी ग्रामवासी बाबा के भक्त बन गए। बाबा फकीरादास ने लोगों का साहस बढ़ाया और साथ ही सबको व्यसनों से दूर रहने का संदेश दिया। बाबा ने कहा कि यह गांव तभी तक बसा रहेगा और उन्नति करता रहेगा जब तक यहां के लोग प्याज, लहसुन, शराब, मांस और तंबाकू आदि से दूर रहेंगे। ग्रामवासियों ने बाबा फकीरादास के संदेश का अक्षरशः पालन किया। आज मिरगपुर जनपद अन्य गांवों से कहीं अधिक समृद्ध है, यहां के ग्रामीणों ने बहुत उन्नति की। गांव धन–धान्य से परिपूर्ण है।

मुगलकाल से लेकर आज तक पूरा गांव सात्विक नियम का पालन करता रहा है। व्यसन की जाने वाले सभी वस्तुओं से दूर भी रहा है। गांव की किसी भी दुकान पर नशे से सम्बन्धित कोई भी सामग्री नहीं बेची जाती। गांव में किसी भी शादी या अन्य समारोह में शराब का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है। गांव के लोग अपनी बेटियों का रिश्ता इसी शर्त पर करते हैं कि गांव में कोई भी बाराती शराब या अन्य नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करेगा। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि लगभग 12,000 की जनसंख्या वाले इस गांव से अनेक नौजवान सेना में हैं। वहां रहकर भी वे पूर्णरूप से इस नियम का पालन करते हैं। यहां तक कि विदेशों में नौकरी करने वाले यहां के नौजवान अनेक विषम परिस्थितियों के बीच व्यसनों से दूर रहकर नियम को नहीं छोड़ते। पूर्ण मद्य निषेध और सात्विक खानपान को सदियों से अपना कर इस गांव ने अनूठी मिसाल कायम की है। बाबा फकीरा दास ने मिरगपुर में काली नदी के निकट जिस टीले पर अपना डेरा जमाया वह स्थान सिद्धकुटी कहलाता है। यहां बाबा फकीरा दास की प्रतिमा के अलावा उनके परम भक्त मोल्हड़ बाबा की प्रतिमा भी स्थापित की गई है। गांव के भीतर भी बाबा का एक स्थान था, यहां भी बाबा फकीरा दास की प्रतिमा और उनकी धुनी का पूजन किया जाता है। बाबा का एक स्थान पंजाब के घरांचों में है और एक सिद्धकुटी नजीबाबाद रोड पर कजली वन में स्थित है। गांव मिरगपुर की सिद्धकुटी में प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को बाबा के नाम से मेले का आयोजन होता है। मेले में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड राज्यों से भी अनेक लोग पहुंचते हैं। बाबा फकीरादास के आशीष से व्यसनों से दूर रहने वाला यह गांव दिनों–दिन उन्नति कर रहा है।

प्यारे जी महाराज : काली कंठी के जादूगर

रणदेवा गद्दी के चौथे गुरु संत प्यारे जी महाराज ने न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से बल्कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक और साझा विरासत को बचाने के लिए एक ऐसी पहल की जो उदाहरण बन गई। उनके द्वारा इस क्षेत्र में विशेष अभियान चलाया गया। काली कंठी के नाम से विख्यात यह अभियान धर्मांतरण को रोकने और सांप्रदायिक सद्भाव बनाने में सहयोगी रहा। विडम्बना यह है सामाजिक सुधार के ऐसे संत के योगदान को हमने यूं ही बिसरा दिया। बादशाह अकबर और बादशाह जहांगीर ने स्वयं संत प्यारे जी महाराज का सम्मान किया और उन्हें अपने यहां अतिथि भी बनाया। अपभ्रंश और प्राकृत भाषा के ग्रंथों में यह उल्लेख मिलता है।

आज रणदेवा को सहारनपुर के एक छोटे से गांव के रूप में जाना जाता है लेकिन मुगलकाल में यहां एक ऐसी संत परम्परा रही, जिसका सम्मान मुगल दरबार में भी होता था। यह परम्परा सढ़ौली, सहारनपुर में जन्मे पद्म जी महाराज से शुरू हुई। प्यारे जी महाराज इस संत परम्परा के चौथे गुरु हुए। प्यारे जी का मूल नाम हरिनाथ था लेकिन जन समुदाय के प्यारे होने के

प्यारे जी महाराज का मंदिर

कारण उन्हें लोग स्नेह से प्यारे जी महाराज कहने लगे। प्यारे जी महाराज का जन्म सन् 1568 ई. में हुआ। प्यारे जी महाराज के जीवन से जुड़ा सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान था काली कण्ठी का अभियान। काली कंठी मुगलकाल में एक ऐसा वरदान सिद्ध हुआ कि इससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब में न केवल उस समय होने वाला हिंदुओं का धर्मांतरण रुक गया बल्कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच खुद चुकी खाई भी कम हुई। रणदेवा में काली कंठी आश्रम की स्थापना की गई। उस समय हिंदुओं की कठोर धार्मिक मान्यता के अनुसार अगर कोई हिंदू किसी मुसलमान के घर या उसके हाथ से बना भोजन खा लेता था तो वह हिंदू धर्म में नहीं रह पाता था। ऐसे में हिंदुओं का मजबूरन धर्मांतरण हो जाता था। इसका एक दुष्परिणाम यह हो रहा था कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच खाई और अधिक गहरी होती जा रही थी। ऐसे में पद्म जी महाराज के बाद प्यारे जी महाराज ने काली कंठी के प्रचार और प्रसार का दायित्व संभाला। काली कंठी के साथ यह मान्यता जोड़ी गई कि जिसके गले में काली कंठी बंधी रहेगी, वह किसी के घर का भी खाना खा ले उसका धर्म भ्रष्ट नहीं होगा और वह हिंदू ही बना रहेगा। ऐसा दृढ़ विश्वास जन समुदाय में पैदा किया गया कि जिसके गले से काली कंठी टूट जाती थी वह दूसरी कंठी बांधे बिना गैर संप्रदाय के घर खाना–पानी नहीं खाता था। इसका प्रभाव यह हुआ कि काली कंठी का प्रभाव पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब के अधिकांश भागों तक फैल गया। काली कंठी आश्रम आस्था का बड़ा केंद्र बन गया। इससे न केवल धर्मांतरण में कमी आई बल्कि दोनों संप्रदायों के बीच तनाव में भी कमी आई। काली कंठी आश्रम के 52 उपस्थान भी बनाए गए।

अपभ्रंश भाषा में लिखे पुराने ग्रंथानुसार प्यारे जी महाराज का आदर बादशाह अकबर के दरबार में भी होता था। प्यारे जी महाराज एक महीने तक आगरा में रहे। एक माह बाद बादशाह अकबर ने उन्हें एक घोड़ा और पगड़ी देकर विदा किया। अकबर के बाद प्यारे जी महाराज बादशाह जहांगीर से भी मिले थे। जहांगीर प्यारे जी महाराज से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ था और प्यारे जी महाराज की विदाई पर जहांगीर ने उन्हें सिरोपा, घोड़ा और धन देकर विदा किया था।

lar dchj ls 'k: gbZ ijEijk

रणदेवा गद्दी की परम्परा सही ढंग से संत कबीर से शुरू हुई। गद्दी से जुड़े सभी संतों ने उन्हीं के अनुसार सामाजिक सद्भाव का संदेश दिया। रणदेवा गद्दी के प्रथम गुरु पद्म जी महाराज ने स्वयं स्वीकार किया है, **ine D;k**

Hk;: vèkhjk] tc lxfr ybl dchjkA विवरणानुसार कबीर जी द्वारा पगड़ी बुनवाकर कर पद्म जी के सिर बंधवाई गई थी। पद्म जी को सन् 1505 में आत्मज्ञान हुआ। संत कबीर जी सन् 1519 तक जीवित रहे। सम्भवतः सन् 1505 ई. में ही पद्म जी महाराज को संत कबीर का आशीर्वाद मिला हो।

cuok;k Fkk euekgd gfj efnj

संत प्यारे जी महाराज ने रणदेवा में एक ऐसे मंदिर का निर्माण कराया था, जिसकी सुंदरता की ख्याति दूर–दूर तक फैली। प्यारे जी महाराज जब दिल्ली गए तो उन्होंने वहां कमल के आकार का कोई सुंदर मंदिर देखा। उन्होंने निश्चय किया कि रणदेवा में भी ऐसा ही सुन्दर मंदिर बनाया जाएगा। दिल्ली से ही उन्होंने मंदिर बनाने वाले मुख्य कारीगर को साथ लिया। सन् 1612 ई. में मंदिर की नींव रखी गई। इस अवसर पर 30 मन प्रसाद का वितरण किया गया। मंदिर बन कर तैयार हुआ तो ऐसा लगा जैसे कोई खिला हुआ कमल हो। गांव के वृद्ध लोग बताते हैं कि औरंगजेब के समय में इस मंदिर को तोड़ दिया गया और वापस जाते हुए कुछ मुगल सैनिक अंधे हो गए थे, इस स्थान को आज भी रणदेवा गांव में अंधों वाली के नाम से जाना जाता है। आज भी मंदिर के अवशेष रणदेवा गांव के पवित्र तालाब के निकट दबे हुए हैं।

दीक्षा से शिक्षा तक

गंगा और यमुना का मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश प्राचीन काल में मध्यदेश के अंतर्गत आता था। इसी मध्यदेश के अंतर्गत ब्रह्मावर्त और ब्रह्मर्षिदेश आते थे जिन्हें *मनुस्मृति* में मानव–चरित्र निर्माण की आदर्श भूमि के नाम से पुकारा गया है। बिना उत्कृष्ट संस्कारयुक्त शिक्षण व्यवस्था के मानव चरित्र–निर्माण सम्भव ही नहीं है। निश्चित ही अगर यह क्षेत्र मानव–चरित्र निर्माण की आदर्श भूमि था तो यहां शिक्षण–प्रशिक्षण के भी उच्च केंद्र रहे होंगे। प्राचीन ग्रंथों में पश्चिमी उत्तर प्रदेश को उपनिषदों की भूमि बताया गया है। उप+निषद का अर्थ है निकट+बैठकर अर्थात् गुरुओं के निकट बैठकर शिष्यों द्वारा जो ज्ञान प्राप्त किया गया उसी ज्ञानमयी प्रश्नोत्तरी और श्रेष्ठ शिक्षा के संकलन का नाम उपनिषद है। ऐसे में सहारनपुर के साथ–साथ निकटवर्ती क्षेत्रों में गुरु–शिष्य की प्रचलित प्राचीन परम्पराओं का बोध होता है।

ikphu f'k{k.k i.kkyh

बौद्ध साहित्य में कुरूप्रदेश के इस क्षेत्र की महत्ता दर्शन की आदिभूमि कह कर वर्णित की गई है। बौद्ध ग्रंथ सुत्त कथा के अंतर्गत दीर्घ निकाय में कुरू प्रदेश का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि कुरुदेश के वासी स्वस्थ चित्त

शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह

और स्वस्थ शरीर के होते हैं इसलिए महात्मा बुद्ध ने अपने गंभीर सूत्रों का उपदेश यहां दिया। बौद्ध धर्म के अनुयायी चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी यहां के लोगों को खोजी और सदाशयी प्रवृत्ति वाला बताया था। ह्वेनसांग ने स्रुघ्न जनपद में ऐसे पांच बौद्ध विहारों का उल्लेख किया है जहां हजारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। बेहट उस समय वृहद्हट के नाम से जाना जाता था, इसका वर्णन महत्त्वपूर्ण बौद्ध नगर के रूप में उल्लेख है लेकिन बाद में यह नगर काल वलिक हो गया। अंग्रेज अधिकारी कोटले को प्राचीन बेहट के अवशेष मिले थे। पाणिनी ने स्रुघ्न और स्रौघ्न शब्दों का प्रयोग नगर और नागरिकता के संदर्भ में किया है। ज्ञातव्य है कि लंबे समय तक सहारनपुर स्रुघ्न जनपद का महत्त्वपूर्ण भाग था। पाणिनी द्वारा स्रुघ्न शब्द को नागरिक और नगरीय संदर्भ में प्रयोग किया जाना इस क्षेत्र में शिक्षा, रहन–सहन और खान–पान के उत्कृष्ट मापदंडों की ओर इंगित करने के लिए पर्याप्त है।

देश के अन्य भागों की तरह सहारनपुर में भी गुरुकुल पद्धति का प्रचलन था। सहारनपुर के देववन और तपोवन नामक स्थान पर ऋषियों के आश्रम हुआ करते थे। यहां भी आश्रमों में एकल शिक्षक पद्धति लागू थी। एक ही गुरु सभी कक्षाओं का अध्ययन कराते थे। ऋषियों के आश्रम शिक्षा के केंद्र थे, वे व्यवाहारिक शिक्षा के साथ–साथ दर्शन और अध्यात्म की शिक्षा भी दिया करते थे। वेदमंत्र, यज्ञविधि, पुराण, उपनिषद आदि धार्मिक ग्रंथों के अलावा मूर्तिकला, आयुर्वेद, शल्य–विज्ञान, और सैनिक शिक्षा आदि विषयों की भी शिक्षा दी जाती थी। मध्यकालीन आक्रमणों के कारण सहारनपुर क्षेत्र को शिक्षा की दृष्टि से बहुत नुकसान पहुंचा। विदेशी आक्रांताओं ने सबसे पहला निशाना यहां शिक्षा व्यवस्था को ही बनाया। इस कारण यहां प्रचलित प्राचीन आश्रम शिक्षण पद्धति छिन्न–भिन्न हो गई और यहां लंबे समय तक शिक्षण की व्यवस्था मौखिक रही। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित कहावत– 'पाधा के पधौकड़े' है, जिसका अर्थ होता है उपाध्याय द्वारा कच्चा–पक्का पढ़ाए गए विद्यार्थी। यह लंबे समय मौखिक रूप से शिक्षा दिए जाने के कारण हुआ। पहले हिंदुओं को पाठशालाओं में शिक्षा दी जाती थी। धीरे–धीरे मदरसों का विकास हुआ तो लोग बच्चों को मदरसों में भेजने लगे। हिंदू–मुस्लिम दोनों बच्चे मदरसों में पढ़ने लगे। ऐसे में हिंदू गुरुओं के आश्रम केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रवचन तक सीमित हो गए।

vkè;kfRed f'k{k.k

मुगल काल में पांवधोई नदी के किनारे बाबा लालदास का आश्रम दार्शनिक

शिक्षा का केंद्र हुआ करता था। लोग दूर–दूर से उनकी ख्याति सुनकर उनके दर्शन करने और अध्यात्म–दर्शन का पाठ पढ़ने आया करते थे। दुनिया भर में उनकी 22 गद्दियां थी। मुगल शहजादे दाराशिकोह ने स्वयं अपने आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर उनसे प्राप्त किए थे। रणदेवा गद्दी परम्परा के पद्म जी महाराज और प्यारे जी महाराज सिद्ध थे, उनके लाखों अनुयायी थे। मोहम्मद–बिन–तुगलक भी यहां संत शाह हारून चिश्ती के उपदेशों और शिक्षा से ही प्रभावित हुआ था। खुजनावर के राजपूत भी गौरी के आक्रमण के दौरान एक मुस्लिम संत द्वारा बताए गए इस्लामिक शिक्षाओं से प्रभावित होकर ही मुस्लिम राव हो गए थे। यदि जैन शिक्षण की बात करें तो सहारनपुर से अपभ्रंश भाषा के अनेक जैन धर्म ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। कई मंदिरों और निजी संग्रह में अपभ्रंश भाषा में लिखे ऐसे कई जैन धर्म ग्रंथ हैं जो सहारनपुर से ही प्राप्त हुए हैं। अपभ्रंश भाषा प्राकृत और हिंदी को जोड़ने वाली बीच की कड़ी है। अनेक विडंबनाओं के बीच भी यहां सदियों पुराने ग्रंथों का बचे रहना यहां प्रचलित पठन–पाठन की गहरी परम्परा पर मुहर लगाता है।

vkèkqfud f'k{kk 0;oLFkk

एक अमेरिकन प्रोटेस्टेंट मिशनरी ने सहारनपुर जनपद में सन् 1837 में सर्वप्रथम पाश्चात्य प्रणाली की तरह का एक स्कूल खोला। गजेटियर एवं सहारनपुर संदर्भ के अनुसार सन् 1845 में जनपद में इस मिशन स्कूल के अतिरिक्त 133 पर्सियन, 47 हिंदी और 43 संस्कृत के विद्यालय थे लेकिन इस गणना में सहारनपुर के साथ–साथ हरिद्वार के विद्यालय भी सम्मिलित थे क्योंकि उस समय हरिद्वार भी सहारनपुर जनपद का ही एक भाग था। वर्नाक्यूलर शिक्षा की शुरुआत देवबंद में सन् 1851 और सहारनपुर नगर में सन् 1852 की गई। सन् 1854 में गंगोह और अंबेहटा में तहसील स्कूलों की स्थापना की गई। सन् 1860 में हलक़ाबंदी प्रणाली के प्रारंभ होने से ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों का खुलना प्रारंभ हुआ। सन् 1863 में सर्वप्रथम सहारनपुर और अंबेहटा में कला विद्यालयों की स्थापना हुई। सन् 1866 में देवबंद में अरबी मदरसा आरंभ हुआ जो बाद में अरबी शिक्षा के एक विशाल केंद्र के रूप में विकसित हुआ। अप्रैल, सन् 1867 में सहारनपुर का एंग्लो–वर्नाक्यूलर स्कूल जिला स्कूल के रूप में बदल गया। सन् 1862 में रामपुर और फिर नकुड़, तीतरो में परगना स्कूल स्थापित किए गए। सन् 1872 में म्यूनिसिपल स्कूल स्थापित हुए। सन् 1833 में जिला बोर्ड का गठन किया गया जिसने सन् 1886 से शैक्षिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना आरंभ किया। सन् 1916 ई. में जिला बोर्ड द्वारा प्राथमिक शिक्षा की योजना तैयार कर लागू की गई। सन् 1921 ई. में कांशीराम हाईस्कूल और इस्लामिया स्कूल, सहारनपुर का विस्तार

किया गया। इस समय सहारनपुर में अरबी मदरसा, देवबंद और मजाहिर उलूम स्कूल, सहारनपुर जैसे निजी विद्यालय भी संचालित किए जा रहे थे।

जनपद में उच्च शिक्षा के लिए सन् 1955 में जेवी जैन कॉलेज की स्थापना की गई। लेकिन यह महाविद्यालय केवल कला संकाय वाला था, विज्ञान संकाय की शिक्षा देने के लिए सन् 1957 में महाराज सिंह कॉलेज की स्थापना की गई। सन् 1959 में रामपुर मनिहारान में गोचर महाविद्यालय की स्थापना की गई। कन्याओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सन् 1966 में मुन्नालाल एवं जयनारायण खेमका कन्या महाविद्यालय स्थापित किया गया। देवबंद में उच्च शिक्षा देने के लिए सन् 1983 में राजकीय महाविद्यालय खोला गया। वर्तमान में जनपद के अंतर्गत 2 विश्वविद्यालय, एक सरकारी मेडिकल कॉलेज, 18 महाविद्यालय, 6 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, 297 माध्यमिक विद्यालय, 2 पॉलिटेक्निक, 5 आईटीआई, 576 उच्च प्राथमिक विद्यालय और 1355 प्राथमिक विद्यालय हैं। शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े विकास खंडों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए कई मॉडल विद्यालय भी स्थापित किए गए हैं।

'k[ky fgUn ekykuk egen glu efMdy dkyt

अम्बाला रोड स्थित पिलखनी के निकट राज्य सरकार द्वारा बनाया गया मेडिकल कॉलेज अब सुचारु रूप से संचालित होने लगा है। 62 एकड़ भूमि में फैले मेडिकल कॉलेज में ओपीडी संचालन शुरू हो चुका है। दूर–दराज के लोगों को यहां निःशुल्क चिकित्सा व्यवस्था मिलने लगी हैं। प्रतिदिन सैंकड़ों लोग मेडिकल कॉलेज में स्वास्थ्य लाभ लेने लगे हैं।

lLÑr f'k{kk

सहारनपुर नगर और देवबंद कस्बे में लम्बे समय से संस्कृत की पाठशालाओं का सफलतापूर्वक संचालन हो रहा है। बाला सुंदरी मंदिर परिसर में संस्कृत पाठशाला की स्थापना सन् 1915 में वैदिक विद्वान स्वामी प्रेमानंद वानप्रस्थ जी द्वारा की गई। सहारनपुर नगर में सनातन संस्कृत विद्यालय की स्थापना सन् 1925 में की गई। इस विद्यालय ने जनपद को संस्कृत के अनेक विद्वान दिए। यहां से शिक्षण प्राप्त कर संस्कृत के विद्वानों ने देश के अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों में संस्कृत भाषा को नए आयाम दिए। सहारनपुर नगर के भीतर वर्तमान में भूतेश्वर इंटर कॉलेज के नाम से जाना जाने वाला विद्यालय कभी भूतेश्वर संस्कृत पाठशाला हुआ करता था। ऐसे ही कायस्थान स्थित लाला जम्बूदास संस्कृत पाठशाला बाद में जूनियर हाईस्कूल के रूप में परिणत कर दी गई।

bLykfed f'k{kk

वर्तमान में इस्लामिक शिक्षा की दृष्टि से देखा जाए तो देश का सबसे बड़ा शैक्षणिक संस्थान दारुल उलूम सहारनपुर में ही स्थित है। यहां देश–विदेश के हजारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं और फिर दुनिया भर में फैल कर यहां की शिक्षा और संदेश को प्रसारित भी करते हैं। सहारनपुर में मदरसा मजाहिर उलूम का नाम भी उल्लेखनीय है।

fo'ofo|ky;ksa us txkbZ vk'kk dh fdj.k

सहारनपुर में आज दो विश्वविद्यालय भी स्थापित हो चुके हैं। जो जनपद के दो छोर पर शिक्षा की अलख जगा रहे हैं। सहारनपुर के उत्तरी भाग में जहां ग्लोकल विश्वविद्यालय स्थापित है तो वहीं दक्षिणी भाग में शोभित विश्वविद्यालय है। शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह और ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुर दोनों में जनपद के विद्यार्थियों को वे कोर्स उपलब्ध हो रहे हैं, जिन्हें करने के लिए विद्यार्थियों को कभी देश के दूरस्थ विश्वविद्यालयों में या कभी–कभी देश से बाहर भी जाना पड़ता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। इन विश्वविद्यालयों में जनपद ही नहीं बल्कि देश–विदेश के विद्यार्थी भी अध्ययन कर रहे हैं। शोभित विश्वविद्यालय में बीएएमएस, यौगिक साईंस एवं नैचुरोपैथी, बीफार्मा, एमफार्मा, डीफार्मा, बीटेक, एमटेक, बीएड, बीटीसी, एमबीए, बीबीए, बीकॉम, एमकॉम, बीए आनर्स, बीसीए, एमसीए, एलएलबी, एलएलएम के अलावा कई कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। कुंवर शेखर विजेंद्र मेडिकल कॉलेज, गंगोह ने न केवल शिक्षा बल्कि गंगोह क्षेत्र में उत्तम स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता को लेकर भी प्रतिबद्धता दिखाई है। ग्लोकल विश्वविद्यालय में बीटेक, एमटेक, बीफार्मा, डीफार्मा, बीसीए, एमसीए, बीबीए, एमबीए, एलएलबी, बीएएमएस, बीयूएमएस के साथ कई दूसरे कोर्स संचालित किए जा रहे हैं।

vkj ;g Hkh

खेल में रुचि रखने वालों के लिए सहारनपुर के मिर्जापुर क्षेत्र में स्पोर्ट्स कॉलेज भी बनाया जा रहा है। जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम में जूडो छात्रावास पहले से ही संचालित किया जा रहा है। सहारनपुर के एअर फोर्स स्टेशन, सरसावा में एक केंद्रीय विद्यालय है। इस विद्यालय की स्थापना सन् 1979 में की गई थी। सहारनपुर नगर में अभी एक और केंद्रीय विद्यालय की आवश्यकता है। जनपद में संचालित अनेक निजी शिक्षण संस्थाएं भी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा रही हैं।

संघर्ष जो अपने अस्तित्व के लिया किया

30 दिसंबर सन् 1803 में मराठों की हार के साथ ही सहारनपुर में ईस्ट इंडिया कंपनी का आधिपत्य हो गया। अंग्रेजों की ओर से कर्नल बर्न ने एक सैन्य टुकड़ी के साथ सहारनपुर पर अधिकार कर लिया। प्रारम्भ के वर्षों में यहां अंग्रेजों को यमुना पार से होने वाले सिखों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। सिखों को यहां के गुर्जरों और रांघड़ों का भी सहयोग मिलना शुरू हो गया था। अंग्रेज बमुश्किल यहां सिख आक्रमणों को रोक सके।

vxtk d f[kykQ igyk l?k"k

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध पहली बार व्यापक संघर्ष सन् 1824 में हुआ। इसका कारण दो गूजर लड़ाका कलुआ और बिज्जा सिंह थे। अंग्रेजों द्वारा इन्हें डाकू कहा गया जिनमें कलुआ गूजर कुमाऊँ और गढ़वाल के रास्ते में अशांति बनाए हुए था और बिज्जा सिंह रूड़की के निकट कुंजा का ताल्लुकदार था। अंग्रेजों के विरुद्ध उसने कुंजा में सशस्त्र सैनिक दल संगठित कर लिया था। रूड़की उस समय सहारनपुर का ही एक अंग था। सहारनपुर के गुर्जर समुदाय का सहयोग इन्हें मिल रहा था। इनके आंतक से अंग्रेज कांप उठे थे। दोनों अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए मारे गए। इनके मरने के बाद अंग्रेजों के विरोध में इस क्षेत्र में सारे विद्रोह शांत हो गए। इसके बाद जनपद में सन् 1857 तक कोई उल्लेखनीय घटना घटित नहीं हुई।

1857 dh Økfr e xtjk dk ;kxnku

चर्बी युक्त कारतूस से मेरठ में उपजी क्रांति का तेज झोंका सहारनपुर में 12 मई, सन् 1857 को पहुंचा। जगह–जगह अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत का बिगुल बजने लगा। आंदोलनकारी सड़कों पर उतर आए। सहारनपुर में अंग्रेज इतने डर गए थे कि सहारनपुर के मजिस्ट्रेट राबर्ट स्पैंकी ने अंग्रेज महिलाओं और बच्चों को मसूरी भेजने के निर्देश दे दिए। सहारनपुर में 1857 की लड़ाई का दायित्व गूजरों ने आगे बढ़कर संभाला। अंग्रेजों पर हमलों के साथ–साथ अंग्रेजों का सहयोग करने वाले जमींदारों को भी सबक सिखाना और अंग्रेजों के खजानों को लूटना भी शुरू कर दिया गया। अंग्रेजों को दिए जाने वाले सभी प्रकार के टैक्स देने बंद कर दिए गए। गूजरों के बढ़ते आक्रमणों से परेशान होकर अंग्रेजों ने उन्हें कठोर सबक सिखाने का निश्चय किया। अंग्रेज

सरकार ने तय किया कि गूजरों को सरेआम सबक सिखाया जाए ताकि कोई दूसरा विद्रोह करने से पहले सौ बार सोचे। 27 मई को राबर्टसन ने मेजर विलियम्स को साथ लेकर बाबूपुर, फतेहपुर और सांपला बुकल गांव के दमन की योजना बनाई। गांवों को घेर लिया गया। इस संघर्ष में 7 ग्रामीण मारे गए और 15–16 घायल हुए। तीनों गांवों को आग के हवाले कर दिया गया। 20 जून को नकुड़ पर गूजरों ने आक्रमण कर दिया। नकुड़ कस्बे की जनता और निकटवर्ती गांवों के लोगों ने अंग्रेजों को खुली चुनौती दे दी। इसी दिन राबर्टसन ने नकुड़ की ओर प्रस्थान किया। 30 गोरखा जवान, 40 सिख घुड़सवार साथ लेकर इन्होंने पास के गांव फतेहपुर पर हमला कर दिया। गांव को आग के हवाले कर दिया गया। इस दौरान संघर्ष में 50 से अधिक क्रांतिकारियों ने देश के सम्मान के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। गंगोह के गांव बुद्धखेड़ी से भी उठने वाली क्रांति की चिंगारी को अंग्रेजों ने अपनी शक्ति से कुचल दिया। देवबंद में कैप्टन रीड और वायसरान ने 45 लोगों को

1857 के अमर शहीदों का स्मारक, सहारनपुर

युद्ध में शहीद अमर जवानों का स्मारक

फांसी पर चढ़ाकर मार डाला। इस प्रकार का कृत्य अंग्रेज केवल इसलिए कर रहे थे कि सहारनपुर जनपद में आतंक फैल जाए और यहां क्रांति की उग्र लहर न उठ सके। अंग्रेजों ने जनपद के क्रांतिकारियों को ढूंढ–ढूंढ कर फांसी पर लटकाना शुरू कर दिया। सहारनपुर के अनेक गुमनाम क्रांतिकारियों को पंसारी बाजार स्थित पुरानी कोतवाली के सामने पीपल के पेड़ पर फांसी से लटका दिया गया। यहां उन्हीं क्रांतिकारियों की भावपूर्ण स्मृति में शहीद स्मारक स्थापित किया गया है। चौकी सराय के पीपल के पेड़ पर भी स्वतंत्रता के दीवानों को फांसी पर लटकाया गया था। दिल्ली पर अंग्रेजों का आधिपत्य होते ही 1857 की क्रांति की लहर दूसरे सहारनपुर में भी शांत हो गई।

vxtk dh tckuh

'गूजरों ने उत्तर–पश्चिमी भारत के मेरठ डिवीजन में 1857 के विद्रोह में उपद्रव किए। हम लोगों को कष्ट पहुंचाया। देहातों में हमारे विरुद्ध सिर्फ गूजर और रांघड़ ही थे जो संकटकाल में अराजकता पैदा करके अंग्रेजों के विरुद्ध हो उठे थे।'

& lj gujh bfy;V

'जिस प्रकार बाबर, शेरशाह आदि के समय गूजरों ने विद्रोह, अराजकता एवं उपद्रव करके साम्राज्य स्थापना तथा सुरक्षा में अशांति और झगड़े पैदा किए

ठीक उसी प्रकार सन् 1857 में भी उन्होंने अराजकता एवं उपद्रव किए। गुस्से में उन्होंने हम पर तरह–तरह के जुल्म किए और फौजी कार्यवाही में बुरी तरह रोड़ा अटकाया।'

– MCY;-Ih- dd

'चारों ओर गूजरों के गांव 50 वर्ष तक बिल्कुल शांत रहने के बाद एकदम भड़क उठे और मेरठ से गदर शुरू होने के चंद घंटों के भीतर ही भीतर उन्होंने तमाम जिलों को लूट लिया। फिरंगियों को देश से बाहर कर उनके राजचिह्न को मिटा देने के लिए ये लोग तत्पर हो गए। इस विप्लव में गूजर उत्तर से महाराष्ट्र तक एक ही धारा में लीन होकर अंग्रेजों के मुकाबले खड़े हो गए थे।'

& Lkj tku ,MoM okYQkV

nk#y&mye vkj efLye tkxj.k&मौलाना कासिम नानौतवी और मोहम्मद रशीद अहमद गंगोही ने सन् 1867 में देवबंद में एक मदरसे की स्थापना की जो दारूल–उलूम के नाम से विख्यात हुआ। देवबंद मदरसा मुस्लिम जागृति और राष्ट्रवाद का पोषक था। दारूल–उलूम देवबंद के मौलाना महमूद–उल–हसन के शिष्य उबेदुल्ला सिंधी द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य को समाप्त करने के लिए एक क्रांतिकारी योजना बनाई गई थी। इस योजना का उद्देश्य था कि सीमावर्ती राज्य से एक आक्रमण हो और इधर हिंदुस्तान के मुसलमान उठ खड़े हों और ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त कर दिया जाए। इस योजना को व्यावहारिक रूप देने के लिए और इसे शक्ति पहुंचाने के लिए एक व्यक्ति मौलवी उबेदुल्ला ने अपने तीन साथी अब्दुल्ला, फतह मुहम्मद और मुहम्मद अली को साथ लेकर अगस्त सन् 1915 में पश्चिमोत्तर सीमा पार की। लेकिन अंग्रेजों को जानकारी मिलने के कारण यह योजना असफल हो गई। अगस्त, सन् 1916 में यह योजना उद्घाटित हुई, जो सरकारी कागजात में सिल्क लेटर्स केस कहा गया। ये पत्र पीले रंग के रेशमी कपड़ों पर बहुत साफ और सुंदर अक्षरों में लिखे गए थे। इन पत्रों में मौलाना महमूद–उल–हसन के नाम पर मुहम्मद मियां अंसारी का भी एक पत्र था जिसमें उन्होंने अपने कार्यकलापों के साथ–साथ काबुल की आजाद हिंद सरकार के संगठन, उसकी स्थिति, पद और पदाधिकारी के नाम लिखे थे। अगस्त सन् 1915 में रेशमी पत्रों की योजना के संबंध में रॉलट रिपोर्ट सामने आई, जिस के अंतर्गत सरकारी कागजात में इसे रेशमी षड्यंत्र कहा गया।

देवबंद के मुसलमानों में शाह वलीउल्ला के अनुयायियों ने आंदोलन को जीवित रखा और अपने को अंग्रेज़ों के विरुद्ध संगठित किया। अंग्रेज़ों ने इस आंदोलन को क्रांतिकारी आंदोलन की संज्ञा दी थी। सहारनपुर में 6 अप्रैल

सन् 1919 से पूर्व ही खिलाफत की गतिविधियां प्रारंभ हो गई थी। अब्दुल लतीफ ने जामा मस्जिद से 21 मार्च, सन् 1919 को मुसलमानों से रॉलेट एक्ट का विरोध करने की अपील की। सभी मुसलमानों ने उनका समर्थन किया। सहारनपुर के हिंदू भी गांधी जी की अपील के कारण पहले से ही इसके लिए तैयार थे।

Lokeh n;kun dk vkxeu& सन् 1879 में स्वामी दयानंद द्वारा सहारनपुर में आर्य समाज की स्थापना की गई। महर्षि दयानंद अपने जीवन काल में आर्य समाज के प्रचारार्थ कई बार यहां आए। लाला हरिवंशलाल ने आर्य समाज को लेकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उन्हीं के प्रयासों से आर्य कन्या पाठशाला, खालापार और अन्य आर्य पाठशालाएं बनीं। ये पाठशालाएं भी जन–जागरण का केंद्र बनी।

lekpkj i=k dh Hkfedk&सहारनपुर जिले के नवजागरण में स्थानीय समाचार पत्रों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी और उर्दू में ये पत्र निकलते थे और जनसाधारण तक स्थानीय भावनाओं को पहुंचाने का काम करते थे। देवबंद से निकलने वाले हिंदी के *जैन हितोपदेश, जैन गजट, जैन प्रकाश, जैन नारी हितकारी* पत्र थे। हरिद्वार भी उस समय सहारनपुर में था, वहां से भी कई पत्रों का प्रकाशन होता था। सहारनपुर से *गूजर हितकारी, डिस्ट्रिक्ट गजट, अलविशाद, देवबंद* से *जैन प्रचारक, जैन प्रदीप, अलकसीन* और *अलरशीद* पत्रों का भी प्रकाशन होता था। इन समाचार पत्रों ने भी जन–जागरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाचार पत्रों को राष्ट्रप्रेम प्रदर्शित करने के कारण सरकार के कोप का भाजन भी बनना पड़ा। सहारनपुर में *जरीफ* समाचार पत्र से सन् 1933 में 1000 रुपये की जमानत मांगी गई, जमानत न दिए जाने पर पत्र बंद हो गया। अंग्रेज़ों की यही नीति थी। सहारनपुर से ललिता प्रसाद अख्तर के पत्र *परिवर्तन* का भी यही हाल हुआ। देवबंद के जैन–प्रदीप से भगवान महावीर और महात्मा गांधी नामक लेख क्या प्रकाशित हुआ, उससे भी 1000 रुपये की जमानत मांग ली गई। यह पत्र भी बंद हो गया।

vlg;kx vkanksyu&गांधी जी ने असहयोग आंदोलन छेड़ा तो सहारनपुर के लोगों ने इसमें बढ़चढ़ कर भाग लिया। 3 सितम्बर, सन् 1920 को गांधी जी के आह्वान पर लोगों ने अदालत, नौकरी तथा स्कूल–कॉलेज आदि छोड़ दिए। सहारनपुर में अदालतों का बहिष्कार कर कौमी अदालतें बनाई गईं। इनका निर्णय सबको मान्य होता था। इस प्रकार की अदालत में श्री झुम्मनलाल न्यायाधीश और मुंशी जहूर अहमद पेशकार हुआ करते थे।

असहयोग आंदोलन को चलाने के लिए एक कांग्रेस कमेटी गठित की गई थी जिसमें बाबू मेलाराम तथा वैद्य रतनलाल चातक थे। महात्मा गांधी जी के आह्वान पर चर्खे का प्रचार, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना और शराब की दुकानों पर धरना देना मुख्य कार्य थे।

lkekftd lèkkj dh igy& देश की तरह सहारनपुर में भी समाज के बीच दो आंदोलन साथ–साथ चले। एक आंदोलन धार्मिक और सामाजिक सुधार से जुड़ा हुआ था और दूसरा आंदोलन देश की स्वतंत्रता का था। इन दोनों आंदोलनों में अद्भुत साम्य था। हिंदू–मुस्लिम सभी सामाजिक सुधारों के साथ आगे बढ़कर देश का स्वतंत्र देखना चाहते थे। जहां धार्मिक, जातीय या सामाजिक आधार पर कार्यक्रमों का आयोजन होता था, वहां देशभक्ति के स्वर को भी उठाया जाता था। सहारनपुर नगर के ललिता प्रसाद अख्तर ने गोरक्षा और सामाजिक सुधार का बीड़ा उठाया। उन्होंने 14 वर्ष की आयु में ही 'हिंदू कुमार सभा' की स्थापना की। बाद में सन् 1919 में उन्होंने सहारनपुर के फुलवारी आश्रम में अपने साथियों के साथ रक्षाबंधन मेला शुरु किया जिसका नाम वीर पूजा रखा। सहारनपुर में अछूतोद्धार, बाल–विवाह को समाप्त करना, विधवा विवाह कराना आदि कार्यो में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। ललिता प्रसाद अख्तर ने अपनी लेखनी और नाटकों आदि रचनात्मक कार्यों से जनभावना को जाग्रत करने में योगदान दिया। आर्य समाज की भांति ही जैन धर्म में व्याप्त रूढ़िवादिता और अंधविश्वास को समाप्त कर राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का कार्य नकुड़ के बाबू सूरजभान, सरसावा के पंडित जुगल किशोर मुख्तार तथा देवबंद के श्री ज्योतिप्रसाद जैन ने किया। सन् 1921 में सहारनपुर में कांग्रेस की जिला कांफ्रेंस हुई जिसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू देहरादून से यहां पहुंचे। उनके आगमन पर एक विशाल सभा हुई और आंदोलन को बल मिला। 1921 के आंदोलन के बाद सहारनपुर में रचनात्मक कार्य जैसे अछूतोद्धार, चरखा चलाना, समाज सेवा करना बराबर चलता रहा। इसमें ललिता प्रसाद अख्तर, वैद्य रतनलाल चातक, बाबू मेलाराम, बाबू झुम्मनलाल और सन् 1926 के बाद वैद्य रामनाथ, हीरावल्लभ त्रिपाठी, ठाकुर फूल सिंह, अजित प्रसाद जैन, महंत जगन्नाथ, चंद्रनाथ योगी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1924 में नकुड़ क्षेत्र में कांग्रेस प्रारम्भ करने का कार्य अंबेहटा की आर्य पाठशाला के अध्यापक पंडित मूलराज अम्बेहटी के प्रभाव से हुआ। सरसावा क्षेत्र में पंडित सीताराम ने आर्य समाज के प्रभाव में अछूतोद्धार असहयोग आंदोलन से पूर्व ही प्रारंभ कर दिया था। असहयोग आंदोलन के पश्चात् वैद्य रामनाथ, लाला झुम्मनलाल जैन, लाला जंबू प्रसाद

जैन, ओम प्रकाश तथा प्रभु दयाल ने इस कार्य को अपनी पूरी शक्ति के साथ संचालित किया। 21–23 जनवरी, सन् 1928 को सरसावा में अछूतोद्धार कांफ्रेंस बुलाई गई। इसमें लाल बहादुर शास्त्री जी ने भी भाग लिया। यह सम्मेलन सामाजिक सद्भाव की दृष्टि से बहुत सफल रहा था। सन् 1928 के प्रारंभ में पंडित जवाहर लाल नेहरू उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से सहारनपुर आए।

Hkxr fl|g dk vkxeu&सरदार भगत सिंह कानपुर जाते हुए पंसारी बाजार में ललिता प्रसाद अख्तर के यहां एक रात के लिए ठहरे थे।

egkRek xkèkh dk vkxeu

26 अक्टूबर, सन् 1929 को महात्मा गांधी हरिद्वार के बाद सहारनपुर आए थे और बाबू मेलाराम के यहां ठहरे थे। कांशीराम हाई स्कूल में सभा हुई थी, जहां लोगों ने उन्हें सहयोग राशि की थैली भेंट की और महिलाओं ने अपने आभूषण राष्ट्र सेवा में अर्पित किए थे। श्री नरदेव शास्त्री, आचार्य कृपलानी और कस्तूरबा गांधी और जवाहर लाल नेहरू भी उनके साथ थे। अंग्रेज सरकार ने नाराज होकर स्कूल की ग्रांट बंद कर दी थी। 28 अक्टूबर, सन् 1929 को देवबंद में गांधी जी की सभा हुई और उन्हें यहां 1500 रुपये की थैली भेंट की गई। सेवा समिति की ओर से उन्हें एक मानपत्र भी भेंट किया गया। उसी दिन पंचदरे में महिलाओं की सभा हुई जिसे गांधी जी और कस्तूरबा गांधी ने संबोधित किया। महिलाओं ने उत्साहित होकर अपने–अपने जेवर उतार कर दे दिए। इस प्रकार देवबंद में कांग्रेस के आंदोलन को बल मिला।

vkj euk;k x;k Lokèkhurk fnol

26 जनवरी, सन् 1930 सहारनपुर जनपद के लिए एक स्मरणीय दिन है। सम्पूर्ण भारत के साथ यहां भी यह दिन स्वाधीनता दिवस के रूप में अत्यंत उल्लास तथा उत्साह के साथ मनाया गया। चौक फव्वारा में प्रातः राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। शाम के समय एक भव्य जुलूस शहर के प्रमुख मार्गों तथा बाजारों में से निकाला गया। जुबली पार्क पहुंचकर जुलूस ने सभा का रूप धारण कर लिया जिसकी अध्यक्ष झुम्मनलाल वकील ने की। सभा का शुभारंभ स्वाधीनता दिवस के राष्ट्रीय झंडागान से हुआ। सहारनपुर जनपद में सबसे पहली गिरफ्तारी श्री हीरावल्लभ त्रिपाठी और ठाकुर अर्जुनसिंह की हुई। इन दोनों को सन् 1930 की मोरा बैठक में नमक कानून तोड़ने का प्रचार करने और किसानों के राज्य की बात कहने के कारण गिरफ़्तार किया गया। उनकी गिरफ़्तारी के विरोध में कांग्रेस और नौजवान भारत सभा की ओर से

एक विशाल जुलूस का आयोजन किया गया जिसमें हजारों लोगों की भीड़ ने भाग लिया। 26 जनवरी, सन् 1930 को महंत जगन्नाथ के नेतृत्त्व में पूर्ण स्वराज्य दिवस नकुड़ में बहुत उत्साह के साथ मनाया गया। नकुड़ तहसील में रणदेवा के महंत जगन्नाथ सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। वे स्वयं आंदोलन में सम्मिलित हो गए थे और दो वर्ष के लिए जेल भी गए। 26 जनवरी, सन् 1930 स्वाधीनता दिवस के रूप में देवबंद नगर और तहसील में बहुत उत्साह के साथ मनाया गया। राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और जूलूस निकाला गया। देवबंद में नमक सत्याग्रह प्रारंभ होते ही कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर और मंत्री आनंद प्रकाश बी.ए. हो गए थे। 5 मई, सन् 1930 को गांधी जी के गिरफ्तार होने पर देवबंद में पूर्ण हड़ताल हुई और जलसा हुआ। इस जलसे के बाद कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर और आनंद प्रकाश बी.ए. को गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस के बैनर तले जनपद में स्वतंत्रता का बिगुल फूंका जाता रहा। ललिता प्रसाद अख्तर को 5 और 6 अप्रैल, सन् 1930 को नौजवान सभा के जलसों में भाषण देने के अपराध में दफा 124 में गिरफ्तार कर लिया गया।

Uked dkuu rkMu dk lkgl& 26 अप्रैल, सन् 1930 से सहारनपुर में नमक कानून तोड़ने का आंदोलन विधिवत प्रारंभ हो गया। इस दिन गुरुकुल कांगड़ी से आया हुआ जत्था शाम को चार बजे कांग्रेस दफ्तर से जुलूस के रूप में चला। जत्था कांग्रेस दफ्तर से चलकर बाजार हरसरनदास, शहंशाही, शहीदगंज और मोरगंज होता हुआ फुलवारी पहुंचा। जुलूस में दस हजार व्यक्ति सम्मिलित थे। फुलवारी आश्रम पहुंचने पर नमक बनाया गया और जत्थेदारों ने नमक कानून तोड़ने और विदेशी कपड़ा छोड़ने की अपील की। नमक बनाने के लिए श्यामसुंदर दास गाजियाबाद से लोहानी मिट्टी लाए थे। दो घंटे में नमक तैयार हो गया। उसकी पुड़िया बनाकर नीलामी की गई। सहारनुपर नगर में आंदोलन के संचालक ठाकुर फूलसिंह थे। विभिन्न जत्थे बनाकर नगर में घूमा गया और प्रचार किया गया। जत्थों द्वारा घूम–घूम कर नमक की नीलामी की गई। गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद सहारनपुर में भी कुल पांच मुकदमें दर्ज किए गए। इसके बाद गिरफ्तारी का दौर चलता रहा।

uk'toku Hkkjr lHkk dk tylk&गांधी–इरविन समझौते के बाद सहारनपुर में उल्लेखनीय घटना 10 जुलाई, सन् 1931 को नौजवान भारत सभा तथा कांग्रेस की ओर से की गई कांफ्रेंस थी। कांग्रेस कांफ्रेंस की अध्यक्षता आचार्य कृपलानी ने और नौजवान भारत सभा की काफ्रेंस की अध्यक्षता सरदार भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह ने की थी। भगत सिंह की मृत्यु के बाद यह पहला अवसर था जब इनके पिता सहारनपुर आए थे। इस अवसर पर

बहुत विशाल जुलूस निकाला गया जिसका विस्तार गांधी पार्क से लेकर पुल खुमरान तक था। सहारनपुर में आंदोलन चलता रहा और भारी संख्या में कार्यकर्ता जेल जाते रहे। बाबू झुम्मनलाल जैन का सारा परिवार आंदोलन में सक्रिय था। सन् 1932 में ही सहारनपुर कलेक्ट्रेट पर झंडा फहराने के कारण चंद्रभान गुप्त को गिरफ्तार कर चार मास का दंड दिया गया।

lHkk"k pn ckl dk vkxeu&सन् 1937 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस सहारनपुर आए। उनका जलसा अहरार पार्टी के महमूद अली खां ने कराया था। यह जलसा जुबली पार्क में हुआ था। नेताजी के भाषण को छापने के लिए कोई तैयार नहीं था लेकिन जब गिरधरलाल प्रेमी ने यह भाषण छापा तो उनका सिविल प्रिंटिंग प्रेस जब्त कर लिया गया।

Lor=rk feyu rd l?k"k&सन् 1942 के प्रारंभ में सहारनपुर के दस व्यक्तियों को उग्रवादी भाषण देने के कारण गिरफ्तार किया गया था। अजितप्रसाद जैन को बहराइच में दिए भाषण के आधार पर गिरफ्तार किया गया था और प्रेमनाथ गर्ग को चौक फव्वारा, सहारनपुर में दिए भाषण के कारण पकड़ा गया था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सहारनपुर जनपद में लोगों के बीच स्वतंत्रता की नई लहर छिड़ी। हर ओर से अंग्रेजों के कार्यों को बाधित कर लोग स्वतंत्रता की जंग में कूद पड़े। सहारनपुर में बिजली के तार काट दिए गए, सरकारी भवनों में आग लगा दी गई। रेल पटरियां उखाड़ी गईं। अंग्रेजों ने बलपूर्वक इससे निपटने के लिए प्रयास किए और गिरफ्तारियां भी हुईं। देश की स्वतंत्रता के लिए सहारनपुर के क्रांतिकारी भी सक्रिय रहे और देश ने स्वतंत्र हवा में सांस ली।

तो नहीं होती भगत सिंह को फांसी

शहीदे आजम भगत के साथ एक नाम और अवश्य याद किया जाना चाहिए वह नाम है जस्टिस आगा हैदर का। आजादी की जंग के दौर में सहारनपुर की मिट्टी में जन्मे जस्टिस आगा हैदर की न्यायालय में भगत सिंह के प्रति भावनाएं एवं निर्णय विशेष रूप से स्मरणीय है। लाहौर अदालत में शहीदे आजम भगत सिंह के केस को लेकर बने विशेष ट्रिब्यूनल में शामिल रहे जस्टिस आगा हैदर को ट्रिब्यूनल से बाहर किए बिना फांसी नहीं दी जा सकती थी। उन्होंने अदालत द्वारा क्रांतिकारियों पर अत्याचार के फैसले से स्वयं को लिखित रूप से अलग कर लिया था और अभियुक्तों की अनुपस्थिति में सरकारी गवाहों से तर्कपूर्ण जिरह भी की। सहारनपुर के जस्टिस आगा हैदर को अपनी साफगोई और भगत सिंह व अन्य अभियुक्तों के प्रति ईमानदार दृष्टिकोण रखने वाले जज के तौर पर हमेशा याद रखा जाएगा।

जस्टिस आगा हैदर का जन्म सहारनपुर के मीरकोट में सन् 1876 को हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए.–एल.एल.बी. किया। इसके बाद कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी लंदन से बार एट लॉ किया। जर्मन और फ्रेंच भाषाएं भी सीखीं। सन् 1907 से सन् 1923 तक इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत की और सन् 1924 को इन्हें लाहौर हाईकोर्ट का जज नियुक्त किया गया। भगत सिंह के केस में गठित विशेष ट्रिब्यूनल में वे एकमात्र भारतीय थे। 7 दिसम्बर, सन् 1928 को लाला लाजपत राय पर लाठीचार्ज के जिम्मेदार सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद भगत सिंह ने साथियों के साथ मिलकर 8 अप्रैल, सन् 1929 को केंद्रीय असेंबली में बम फेंका। मुकदमा लाहौर कोर्ट में चलाया गया। केस की जल्द सुनवाई के लिए 1 मई, सन् 1930 को गवर्नर ने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए तीन जजों का स्पेशल ट्रिब्यूनल बनाने का अध्यादेश जारी किया। अंग्रेज सरकार चाहती थी कि प्रकरण का शीघ्र से शीघ्र निपटारा कर अभियुक्तों को फांसी के फंदे तक पहुंचाया जाए। इस ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष थे–जे कोल्डस्ट्रीम, सदस्य थे जी.सी. हिल्टन और आगा हैदर। ट्रिब्यूनल के समक्ष जब केस का ट्रायल चल रहा था, पेशी के दौरान 12 मई, सन् 1930 को आजादी के मतवाले भगत सिंह के साथ इंकलाब जिंदाबाद के नारे के साथ अदालत में प्रविष्ट हुए। अदालत का परिसर इंकलाब जिंदाबाद के नारों से गुंजायमान हो गया। जस्टिस कोल्डस्ट्रीम क्रांतिकारियों के इस आचरण

'शहीद-ए-आज़म'
सरदार भगत सिंह जी

को लेकर आग–बबूला हो गये। उसने लाहौर अदालत में ही भगत सिंह और अन्य अभियुक्तों को लात–घूसों और डंडों से पिटाई का आदेश दिया। अभियुक्तों को बर्बरता के साथ पीटा गया। जे कोल्डस्ट्रीम ने अदालत की कार्यवाही में लिखा– 'अभियुक्तों के गलत आचरण के कारण मुकदमा कल तक के लिए स्थगित कर दिया गया। अदालत खाली हो गई और अभियुक्त हटा दिए गए।' लेकिन इस पर केवल जीसी हिल्टन और स्वयं कोल्डस्ट्रीम ने ही हस्ताक्षर किए। जस्टिस आगा हैदर ने इस पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया और उन्होंने अपना आदेश अलग से लिखा– 'मैं अभियुक्तों को अदालत से जेल भेजने के आदेश का भागीदार नहीं था। न उस सब के लिए किसी तरह भी जिम्मेदार। मैं उस सबसे, जो आज यहां हुआ, अपने को असंबद्ध करता हूं।' 13 मई को भगत सिंह की राय से सभी अभियुक्तों ने अदालत का बहिष्कार कर दिया। जब क्रांतिकारियों ने ट्रिब्यूनल का बहिष्कार कर रखा था तब जस्टिस आगा हैदर सरकारी गवाहों से खुद ही जिरह करते थे। उनकी जिरह ऐसी होती थी कि गवाहों के बयानों की धज्जियां उड़ जाती थी। जिरह के दौरान एक प्रकरण बहुत चर्चित रहा। एक गवाह भगत सिंह के विरुद्ध गवाही दे रहा था। क्रास एग्जामिनेशन में गवाह ने कहा कि जिस दिन पुलिस सुपरिडेटेंट सांडर्स को भगत सिंह ने मारा, उस दिन भगत सिंह ने जो कमीज पहनी थी उसका रंग उसे याद है। इस पर जस्टिस सैय्यद आगा हैदर ने गवाह से पूछा, तुम बतला सकते हो, मैंने कल किस रंग की कमीज पहनी थी? गवाह हड़बड़ा गया और बोला नीले रंग की। जस्टिस आगा हैदर ने कहा– मैं हमेशा सफेद रंग की कमीज ही पहनता हूं क्योंकि अदालत की वर्दी में सफेद कमीज ही पहनी जाती है। जब तुम कल की पहनी हुई मेरी कमीज का रंग ठीक से याद नहीं रख सकते हो, तब छह महीने

पुरानी घटना के दौरान देखी कमीज का रंग तुम्हें कैसे याद रह सकता है ? फिर आगा हैदर ने भगत सिंह की पीठ थपथपाते हुए कहा– 'यंग मैन, ये सब बस ऐसे ही तुम्हारे पीछे पड़े हुए हैं।' भगत सिंह ने जवाब दिया– 'जनाब, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है।' आगा हैदर की जिरह ने ट्रिब्यूनल के दो सदस्यों की चिंता बढ़ा दी।

इस दौरान जस्टिस आगा हैदर को कई लालच दिए गए लेकिन वे टस से मस न हुए। एक रात सरकारी एडवोकेट मिस्टर कार्डननोड जस्टिस आगा हैदर के घर पहुंचे। उन्होंने कहा कि 'इस मुकदमे को सरकारी इच्छानुसार पूरा हो जाने दें, इसकी एवज में उन्हें वायसराय की कैबिनेट का मेंबर बना दिया जाएगा। यदि उनकी इच्छा हो तो उन्हें प्रीवी कौंसिल का जज भी बनाया जा सकता है।' कार्डननोड ने यह भी समझाने का प्रयास किया कि यह संदेश कोल्डस्ट्रीम का नहीं बल्कि ऊपर का है। यह सुनकर आगा हैदर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वे बोले– 'मैं न्यायाधीश हूं, व्यापारी नहीं जो न्याय का व्यापार करूं। उन्होंने अपने नौकरों से कहा, इसको नहीं पता कि जज से कैसे बात करते हैं। इसे यहां से बाहर निकाल दो।' एडवोकेट कार्डननोड और कोल्डस्ट्रीम ने यह बात पंजाब के गवर्नर के माध्यम से वायसराय तक पहुंचा दी कि आगा हैदर के ट्रिब्यूनल में रहते भगत सिंह को फांसी पर लटका पाना संभव नहीं होगा। फैलते–फैलते यह घटनाक्रम समाचार–पत्रों तक पहुंचा। समाचार–पत्रों ने इसे प्रमुखता से छापा। सरकार की बहुत किरकिरी हुई। यह घटना ही इस बात को बताने के लिए पर्याप्त है कि अंग्रेजों ने भगत सिंह के फैसले के मामले में अदालत का दुरुपयोग किया। जस्टिस आगा हैदर ने लाख प्रलोभन के बाद भी भगत सिंह की फांसी के फैसले पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। जस्टिस आगा हैदर पहले भी कई मामलों में पुलिस को लताड़ लगा चुके थे और उनका देशप्रेम जग–जाहिर हो चुका था।

उधर आजादी के दीवानों ने भगत सिंह के साथ मिलकर आवाज उठाई कि ट्रिब्यूनल से जल्लाद जज कोल्डस्ट्रीम को हटाया जाए। इसका लाभ उठाते हुए वायसराय ने एक तीर से दो शिकार किए। वायसराय ने ट्रिब्यूनल के पुनर्गठन के नाम पर कोल्डस्ट्रीम के साथ–साथ जस्टिस आगा हैदर को भी हटा दिया और दूसरे दो जज ट्रिब्यूनल में शामिल कर दिए। इसके बाद ही भगत सिंह को फांसी दी जा सकी। अगर जस्टिस आगा हैदर ट्रिब्यूनल का हिस्सा रहते तो भगत सिंह को फांसी देना अंग्रेजों के लिए टेढ़ी खीर होती।

स्वांग से रंगमंच की ओर

मनुष्य जब–जब जीविकोपार्जन की उधेड़बुन से स्वतंत्र होता है वो मनोरजंन की ओर अग्रसर होता है। भारतीय संस्कृति में पुरातन काल से ही सांग/स्वांग का महत्त्व जन–जीवन से जुड़ा हुआ रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व सहारनपुर ही नहीं बल्कि पूरे उत्तरी भारत में लोक साहित्य की सांग अथवा स्वांग परम्परा खूब लोकप्रिय रही। स्वांग लोक नाट्य की एक विशेष परम्परा है। स्वांग लोक नाट्य की इस कला को मांगलिक उत्सवों, सार्वजनिक कार्यक्रमों आदि में प्रस्तुत किए जाने की परम्परा है। धीरे–धीरे फिल्मों के प्रभाव से स्वांग के प्रति लोगों का रुझान कम होने लगा। स्वांग के धीमे पड़ते प्रभाव के बीच भी आधुनिक नाट्य विधा रंगमंच ने सहारनपुर में अपना अलग स्थान बनाया। इस आलेख में हम सहारनपुर में स्वांग से रंगमंच तक के सफर को समझने का प्रयास करेंगे।

सहारनपुर सहित सम्पूर्ण उत्तर भारत में कभी स्वांग के प्रति लोगों को खूब लगाव हुआ करता था। स्वांग के अच्छे कलाकारों को देखने–सुनने के लिए लोग लम्बी यात्राएं कर स्वांग देखने आया–जाया करते थे। शहर–गांव की चौपालें और चबूतरे स्वांग के आयोजन के स्थान होते थे। सहारनपुर में रंगकर्म का शुभारंभ स्वांग अर्थात स्वांग से ही माना जा सकता है। यद्यपि स्वांग और रंगमंच का मूल प्रतिपाद्य अलग है लेकिन आधुनिक रंगमंच की

तरह स्वांग में भी मंच, संगीत, कलाकार और दर्शक होते थे। दोनों का उद्देश्य मनोरंजन के साथ जनभावनाओं और संवेदनाओं को जगाना रहा। रंगमंच भले ही स्वांग का परिष्कृत रूप न माना जाए लेकिन दोनों को रंगकर्म के रूप में स्वीकार करने में कोई विरोधाभास नहीं है। स्वांग से रंगमंच तक शीर्षक के साथ यही बताने का प्रयास किया जा रहा है कि जब सहारनपुर में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में धीरे–धीरे स्वांग परम्परा दम तोड़ने लगी तो उसी समय ललिता प्रसाद अख्तर की लेखनी से रंगमंचीय नाटकों का उद्‌भव प्रारंभ हुआ। इक्का–दुक्का स्वांग तो बाद तक भी आयोजित होते रहे लेकिन लोगों का रुझान स्वांग परम्परा की ओर से हटकर फिल्मों और आधुनिक रंगमंच की ओर अधिक होने लगा था। जिन दर्शकों ने कभी तालियों की गड़गड़ाहट के साथ स्वांग को सराहा था अब उन्हीं दर्शकों ने नाटक के एक नए रंग को हाथों–हाथ ले लिया था।

lgkjuiqj esa lkx@Lokax ijEijk

Lokax dk ifjp;

स्वांग एक मुख्य सूत्रधार कलाकार के इर्द–गिर्द घूमा करता था। वह सूत्रधार कई भूमिकाओं को स्वयं ही सम्पन्न किया करता था। सूत्रधार न केवल गायक होता था बल्कि अपने अभिनय, व्याख्यान देने की कला से भी जन–समूह को प्रभावित करने में दक्ष हुआ करता था। इस प्रकार के कलाकारों को स्वांगी कहा जाता था। स्वांगी का अपने कार्यक्षेत्र में ठीक वैसा ही सम्मान हुआ करता था जैसे आज राष्ट्रीय मंचों पर फिल्मी कलाकारों का होता है। एक स्वांगी मुख्य गायक और उसके सहयोगी सह गायकों की भूमिका अदा करते थे। तेज स्वर के साथ कथानक को भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने का हुनर ही लोगों को प्रभावित किया करता था। स्वांगी जितना दक्ष होता था वह उतना ही लोगों को अपने साथ जोड़ लिया करता था। स्वांग के कथानक ऐतिहासिक कथाओं, प्रेरणादायी चरित्र, समाज को झझकोरने वाली घटनाओं आदि पर आधारित होते थे। प्रेम कथाओं के मार्मिक वर्णनों पर आधारित और वीरोचित भावनाओं को जाग्रत करने वाले स्वांग बहुत लोकप्रिय थे। स्वांग द्वारा धार्मिक आडंबरों पर भी प्रहार किए जाते थे। लकड़ी के बड़े–बड़े तख्त को जोड़कर मंच बनाया जाता था। मंच पर ही वाद्ययंत्र बजाने वालों की मंडली बैठा करती थी और चारों ओर जनसमूह।

lkx@Lokax esa iz;qDr okn;=

उत्तर भारत के साथ–साथ सहारनपुर में रचे–बसे सांग में प्रयुक्त मुख्य वाद्य यंत्र हारमोनियम, ढोलक, मजीरा, तबला, सारंगी, करताल, वीणा, दिलरुबा,

पखावज, मुरुज आदि हुआ करते थे। इन वाद्ययंत्रों में से कई वाद्ययंत्र आज प्रयोग से गायब हो चुके हैं या गायब होने की कगार पर हैं। संगीत में आधुनिक उपकरणों ने इनका स्थान ले लिया है।

Lkkx@Lokx dh ;k=k

सहारनपुर के सबसे बड़े स्वांग कलाकार के रूप में देवबंद की धरती पर सन् 1827 को जन्मे पंडित बेहू उस्ताद को जाना जाता है। वे पढ़े–लिखे नहीं थे लेकिन उनके द्वारा तैयार और प्रस्तुत किए गए स्वांग जन–समूह को बरबस अपनी ओर खींच लेते थे। पंडित बेहू उस्ताद द्वारा रचित स्वांग में राजा गोपीचंद, राजा भोज, लवकुश, चंद्रभान, राजा विक्रम, सोरठ आदि रहे। उनकी शिष्य परम्परा में पंडित धूमसिंह, गणेशीमल, बारूमल, कुंदनलाल आदि रहे। देवबंद में स्वांग लेखन में उस्ताद मूलराज जैन, पंडित मुरलीधर, ज्योति प्रसाद मुख्तयार, मुंशी शिखरचंद खलीफा, वैद्य खुशीराम, सुमतप्रसाद जैन, चमनलाल, हुसैनी पट्टेबाज अनघड़ का नाम भी उल्लेखनीय रहा। धर्मसिंह, बुड्ढ़ाखेड़ा के बलजीत सिंह, मिर्जापुर के मोल्हड़ सिंह, पंडित सीताराम का नाम भी सहारनपुर के प्रतिष्ठित स्वांग कलाकारों में जाना जाता है। इसके अलावा अनेक ऐसे स्वांग कलाकार रहे जिनकी लिखित जानकारी न मिलने के कारण वे प्रकाश में नहीं आ सके। सहारनपुर में लोकप्रिय स्वांग हातिमताई, शाहे खुतन, मालन की बेटी, काम कंदला, नल दमयंती, गुलेनारा, लालसिंह, रूप बंसत, शहजादा बदर आदि रहे। सहारनपुर में स्वांग आयोजन की प्रवाहपूर्ण परम्परा का उल्लेख सन् 1925–26 तक मिलता है। यद्यपि अंतिम स्वांग का मंचन सन् 1982 तक भी मिलता है लेकिन इस अवधि के बीच स्वांग मंचन इक्का–दुक्का ही रहा। सन् 1920 के बाद स्वांग को नौटंकी नाम से भी जाना जाने लगा था।

MkefVd Dyck dh vkj

स्वांग का स्थान धीरे–धीरे रामलीला और कृष्णलीला खेलने वाले ड्रामेटिक क्लबों ने ले लिया। देवबंद के लाला दयाराम ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ड्रामेटिक क्लब की स्थापना की। वे स्वयं अभिनय करते थे और अभिनय का प्रशिक्षण भी देते थे। सन् 1930 में गंगोह में रामलीला प्रारम्भ हुई। यहां रामलीला ड्रामेटिक क्लब की स्थापना भी की गई। पंडित काशीराम ने 14 दिन खेलने के लिए रामायण को नाट्य रूप प्रदान किया। लाला कबूल सिंह, इंद्रसेन, पंडित बशेसर, पंडित काशीराम, पंडित जर्नादन शर्मा, प्रेमचंद गोयल प्रमुख अभिनेता थे। सन् 1930 के दशक में अल्फ्रेड थियेटर नाम से कंपनी के डायरेक्टर मुंशी अख्तर सहारनपुर के ही थे। देवबंद के अंतर्गत सन्

1948–49 में लोकनाट्य रंगमंच पहले श्रीकृष्णलीला के रूप में प्रारम्भ हुआ। इस मंच को प्रारम्भ करने में पंडित रहतूलाल शर्मा, बलवंत, उस्ताद बशीर अहमद, पंडित मुरलीधर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उल्लेखनीय है कि पंडित मुरलीधर प्रसिद्ध स्वांग कलाकार भी रहे। यहीं से देवबंद में रामलीला का भी शुभारम्भ किया गया। मास्टर रामेश्वरदास मित्तल के कुशल नेतृत्व में यहां की रामलीला ने जनपद में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। इसी मंच से मास्टर रामेश्वरदास मित्तल जी ने *लवकुश, परिवर्तन, सती सुलोचना, भक्त प्रह्लाद, श्रवण कुमार, वीर अभिमन्यु, राखी की लाज* आदि नाटकों का मंचन भी किया। विशेष बात यह रही कि इन नाटकों में जहां साउंड सिस्टम, पर्दे, मंच, बिजली इत्यादि की आधुनिकता थी वहीं पद्य और गद्य मिश्रित संवादों पर सीधा प्रभाव स्वांग का ही था। निश्चित तौर पर यह वह समय था जब स्वांग आधुनिक रंगमंच का रूप ले रहा था।

lgkjuiqj e jxeph; ijEijk

सहारनपुर रंगमंच में यदि पहला अभी तक ज्ञात उल्लेखनीय नाम इतिहास में मिलता है तो वह नाम है ललिता प्रसाद अख्तर का। सन् 1900 में जन्मे ललिता प्रसाद अख्तर जी ने न केवल नाटक लिखे बल्कि उनका मंचन भी किया। वे स्वयं भी नाटकों में अभिनय करते थे। अख्तर जी का *गूंगा चौहान* नाम से नाटक खूब प्रसिद्ध हुआ। उनकी मंडली द्वारा मंचित नाटक समाज की तत्कालीन स्थितियों के अनुरूप सामाजिक कुरीतियों और विषमताओं पर प्रहार करने वाले ही होते थे। अख्तर जी के नाटकों पर जौहरे *शमशीर, पंजाब का सिंह,* और *रंगीला राजपूत* नाम से तीन फिल्में भी बनी। 31 मई, सन् 1937 में उनका निधन हो गया।

40 के दशक में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा था। इस समय नाट्य संस्था इप्टा ने बंगाल पीड़ितों की सहायता के लिए देश भर में नाटकों की श्रृंखला का आयोजन किया था। यह अभियान सहारनपुर भी पहुंचा और अमृत टॉकीज में *रोटी* नाटक का मंचन किया गया। पृथ्वीराज कपूर ने भी इस नाटक में अभिनय किया था। इस दौरान *काबुली वाला* और *पठान* नाटक का भी सफल मंचन किया गया। पचास के दशक की शुरुआत में कौसर तसनीमी, मशरूर खान सरोहा, राजकुमार वोहरा, बलवंत, नसीम सहारनपुरी इप्टा से जुड़े थे। सहारनपुर में पहली बार नाट्य संस्था के रूप में आईटीसी एमेच्योर ड्रामेटिक एसोसिएशन का गठन सन् 1948 में किया गया। ओ.डी. वर्मा, मसरूर खां सरोहा, रहतू राम जोशी, ए.एस. भटनागर, संतराम, पंकज बनर्जी, इस्तियाक अहमद कुरैशी के प्रयासों ने रंगमंच की इस एसोसिएशन ने कई आयाम गढ़े। इस दौरान ही अंबाला रोड स्थित गधीमार धर्मशाला में श्री

राधाकृष्ण ड्रामेटिक क्लब के माध्यम से धार्मिक कथाओं पर आधारित नाटकों का मंचन किया गया। 1950 के दशक में सदा के नाम से प्रख्यात सतयुग आश्रम ड्रामेटिक एसोसिएशन को ओपी नैब, सोमप्रकाश नैब, वेद प्रकाश नैब, कुंज बिहारी ने शुरू किया। इस नाटक क्लब के माध्यम से अनेक नाटक खेले गए। पुरुषों के साथ महिलाओं का मंच पर आगमन सन् 1951–1952 में बंगाली एसोसिएशन द्वारा दुर्गा पूजा महोत्सव में हुआ। सरोज नैब को सहारनपुर रंगमंच की पहली महिला अदाकारा माना जाता है, उनसे पहले रंगमंच में महिला का अभिनय पुरुष कलाकार ही किया करते थे। भारतीय जन–नाट्य संघ की सहारनपुर में स्थापना उस समय हुई जब सन् 1951 में इप्टा के पुनर्गठन के लिए मुंबई में वृहत्तर सांस्कृतिक आंदोलन के लिए सभी प्रगतिशील शक्तियों को एकत्रित करने का निर्णय लिया गया। सन् 1952 में सहारनपुर में इप्टा की स्थापना के लिए मुख्य रूप से कौसर तसनीमी, मसरूर खां सरोहा, एसपी नैब का नाम उल्लेखनीय है।

यूनाइटेड थियेटर की स्थापना सन् 1976 में की गई। इस बैनर के तले 'चंद्रमुखी' नाम से यादगार नाटक खेला गया। सन् 1983 में मदर टेरेसा सहारनपुर आई थी। उनके सामने वशी उर रहमान के निर्देशन में सुबह कभी तो आएगी नाटक खेला गया। इस नाटक में जावेद खान सरोहा, सुजाता सिंह, पूनम सिंह ने अभिनय किया। नाटक के आयोजन से एकत्रित 25,000 की सहयोग राशि मदर टेरेसा को सौंपी गई। सन् 1979 में सहारनपुर आए प्रशिक्षु आई.ए.एस. के.के. सिन्हा, पत्रकार विजेश जोशी ने सहारनपुर में नाट्य संस्था की संकल्पना को जन्म दिया। नाट्य ने बाल रंगमंच में अलग प्रकार का काम किया। प्रतिवर्ष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर बाल रंगकर्मियों को मंच देने का कार्य किया। प्रमुख नाटकों में लड़ाई, सुनहरे सपने, हमसफर, ईदगाह, अंधेर नगरी चौपट राजा, अंधा कौन आदि रहे। इस संस्था ने अपने लम्बे सफर में 150 से भी अधिक नाटकों का मंचन किया।

सहारनपुर में इप्टा का नया जन्म सन् 1980 में तब हुआ जब सरदार अनवर, वी.के. डोभाल, प्रवेश धवन इससे जुड़े। अशोक चौधरी ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। चांद दुर्रानी, सुबोध लाल, अजय सक्सेना, निमिष भटनागर, अंतिम चौधरी, राजीव सिंघल, सपना ठाकुर, संजय वर्मा, इनामुलहक, इम्तियाज, शीतल, प्रियंका आदि इप्टा से जुड़े। इप्टा के बैनर तले सहारनपुर में और सहारनपुर से बाहर सैकड़ों यादगार नाटक खेले गए। नई लहर या नया थियेटर के नाम से इप्टा ने नाटक शुरू किए थे। *आदि विद्रोही, बादल सरकार, बकरी, इंस्पेक्टर जनरल, सिंहासन खाली है, अरे शरीफ लोग, एक था गधा* आदि यादगार नाटक खेले गए। नगर विधायक संजय गर्ग ने भी

इप्टा के नाटकों में अभिनय किया। इप्टा के नाटकों को बुलंदियों तक पहुंचाने में शराफत अली, निमिष भटनागर ने भी भूमिका निभाई। नाट्यकर्मी जावेद खान सरोहा द्वारा 16 दिसंबर, सन् 1984 को नाट्य ग्रुप 'अदाकार' की स्थापना की गई। अदाकार की ओर से *गिद्ध, खामोश अदालत जारी है, आधे–अधूरे, जिन लाहौर वेख्या नहीं वो जन्म्या नईं, पंछी ऐसे आते हैं, बेबी तुम नादान, सबसे उदास कविता, काल कोठरी, हासिया, एक और द्रोणाचार्य, जंग जारी है, सभ्य सांप* आदि नाटक किए गए। अदाकार से शीशपाल जसौटिया, जिनका हिमाशीष के नाम से मुम्बई में स्टूडियो है, अदाकार से ही अशोक वर्मा, मुर्सलीन कुरैशी, मंजू शर्मा, विक्रांत जैन, आचार्या प्रतिष्ठा, संदीप शर्मा, रविंद्र तेजान, रामकुमार तेजान जैसे मंजे हुए कलाकार निकले।

सहारनपुर में रंगमंच के क्षेत्र में दिनेश तेजान की संस्था 'रंगयात्रा' का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। 'तहरीक' संस्था के माध्यम से रंगकर्मी अरशद कुरैशी ने नुक्कड़ नाटकों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रशांत राजन की 'नवांकुर' संस्था ने भी 90 के दशक में कई नाटक मंचित किए। भारतीय नाट्य एकेडमी से योगेश पंवार, दिनेश त्यागी, मंजू शर्मा, अनिल शर्मा ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उर्मिला शर्मा ने हिमाचल से थियेटर में सर्टिफिकेट कोर्स किया है। रंगकर्मी के रूप में वर्तमान समय में संदीप शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। संदीप शर्मा द्वारा सन् 2015 में 'अभिनय मित्र' संस्था की स्थापना की गई। संस्था के अध्यक्ष कुलदीप धमीजा और संरक्षक विश्वजीत पुंडीर हैं। 'अभिनय मित्र' द्वारा *सब नपेंगे, समझते नहीं हैं आप, लव यू जिंदगी* और *बिन बाती के दीप* का मंचन किया गया है। सोहनदेव भी युवाओं को रंगमंच के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं। नई परम्पराओं में खुशबू नैब ने पप्पेट्स थियेटर एसोसिएशन का गठन कर रंगमंच पर अपने कदम बढ़ाए हैं।

रूपहले परदे तक का सफर

सहारनपुर के कई रंगमंच कर्मियों और कलाकारों ने फिल्मी जगत के रूपहले परदे तक का सफर तय किया। इनमें सबसे बड़ा नाम है जोहरा सहगल का। आयरन लेडी के नाम से पहचानी जाने वाली जोहरा सहगल ने विश्व पटल पर सहारनपुर का डंका बजाया। सहारनपुर के ढोलीखाल में 27 अप्रैल, सन् 1912 को जन्मी जोहरा सहगल ने लंबे समय तक फिल्मी पर्दे पर नाम कमाया। सन् 1935 में उन्होंने टोकियो से अपने डांस करियर की शुरूआत की और अपने सहयोगी उदय शंकर के साथ जापान, मिश्र, अमेरिका सहित यूरोप के कई देशों में अपनी डांस प्रस्तुतियां दी। उन्होंने 14 वर्षों तक पृथ्वी थियेटर के साथ जुड़कर अभिनय किया।

असामयिक मृत्यु का शिकार हुई दिव्या भारती ने भी अपने छोटे से फिल्मी करियर में मुख्य फिल्मी नायिकाओं के बीच स्थान बनाया था। *दीवाना* फिल्म में उनकी अदायगी ने सभी को अपना दीवाना बना दिया था। यही नहीं *दिल आशना है* और *शतरंज* फिल्मों से भी उन्होंने अपने पंखों को खूब उड़ान दी।

दिव्या भारती

इनामुलहक

दुर्भाग्य से एक दर्दनाक हादसे में उनकी असामयिक मौत ने उनके प्रशंसकों पर वज्रपात कर दिया। शेख मुख्तयार, जूनियर महमूद भी सहारनपुर के थे।

सहारनपुर के इनामुलहक के *फिल्मीस्तान* और *एयरलिफ्ट* फिल्मों से अपने हुनर का लोहा मनवाया है। नाटकों में अपने गंभीर अभिनय से पहचाने जाने वाले कंवलजीत भी सहारनपुर के हैं। इप्टा से निकले इम्तियाज ने *सेल्समैन रॉकेट सिंह, फैन* फिल्मों से अपनी कला के रंग बिखेरे हैं। अशोक वर्मा ने भी कई फिल्मों में अपनी कला के रंग बिखेरे हैं। कायनात अरोड़ा ने आइटम सांग और कुछ फिल्मों के माध्यम से वॉलीवुड में अपना स्थान बना लिया है। कायनात अरोड़ा ने *खट्टा–मीठा* सहित कई फिल्मों में काम किया है। मुर्सलीन कुरैशी, अनिल शर्मा, अंबर सलीम, एम. शाहिद, नितिन दूबे, हरिओम कालरा, नासिर जमाल, ब्रिजेश इक्का, पारस बब्बर, स्टेफी छाबड़ा भी अभिनय में अच्छा कार्य कर रहे हैं। इप्टा से निकले सीएल सैनी धार्मिक नाटक लेखन में अपना एक मुकाम हासिल कर चुके हैं। सहारनपुर की अपूर्वा अरोड़ा ने *बब्बल गम* फिल्म में नायिका की भूमिका अदा की है। सहारनपुर के गांव सैयद माजरा से निकला सैयद फैजान ने स्पाट बॉय से प्रारंभ कर प्रोड्यूसर तक का लंबा सफर तय किया। उन्होंने कार्यकारी प्रोड्यूसर के तौर पर *रेस, नकाब, कौन बनेगा करोड़पति* से अपना सिक्का जमाया।

fQYeh txr d vU; {k=

सलमान खान की अधिकांश फिल्मों में संगीत देने वाले साजिद अली–वाजिद अली के पिता मशहूर तबला वादक शराफत अली खां चार दशक पहले सहारनपुर से ही मुम्बई गए थे। शराफत अली खां ने *उमराव जान* फिल्म के मशहूर गीत 'दिल चीज क्या है आप मेरी जान लीजिए' में तबला वादन कर शोहरत हासिल की थी। आज उनके दोनों पुत्र साजिद–वाजिद संगीत, गायन और लेखन में अपना लोहा मनवा रहे हैं। इन दोनों ने संगीतकार के तौर पर वॉलीवुड में मुकाम हासिल किया। सहारनपुर में जन्मे संगीतज्ञ

जोहरा सहगल

कंवलजीत

नजाकत अली तीन दशक पहले सहारनपुर से मुंबई चले गए थे। आज इनके दो पुत्रों अमजद–नदीम की जोड़ी वॉलीवुड में पहनी अलग पहचान बना चुकी है। संगीतकार जोड़ी के तौर पर इन्होंने *जिला गाजियाबाद, वेलकम टू करांची, जज्बा, किस–किस को प्यार करूँ, डू नॉट डिस्टर्ब* आदि फिल्मों में संगीत दिया।

देवबंद के इकबाल साबरी–अफजाल साबरी भाइयों ने भी अपनी सूफी गायकी से वॉलीवुड में छाप छोड़ी। वर्तमान में इकबाल साबरी के पुत्र शबाब साबरी अपनी गायकी का हुनर बिखेर रहे हैं। शबाब साबरी ने *बोल बच्चन, दबंग, एजेंट विनोद, पिक्चर अभी बाकी है, तेज, वीर, पेज थ्री, प्रेम रतन धन पायो* आदि फिल्मों में गाने गाए हैं। अल्तमश फरीदी, सादाब फरीदी, रूपाली जग्गा, आस्था शर्मा, वन्या नरूला, सचिन शर्मा, धारणा पाहवा गायन के क्षेत्र में सहारनपुर का नाम रोशन कर रहे हैं। प्रसिद्ध टीवी शो *सारेगामापा* ने रूपाली को राष्ट्रीय फलक पर पहचान दिलाई है। बाल कलाकार विरद त्यागी ने टीवी शो *सबसे बड़ा कलाकार* का विनर बन सहारनपुर का नाम रोशन किया है।

डीआईडी मॉम में प्रतिभागी रह चुकी रंजना नैब कोरियोग्राफी में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। प्रिया बजाज, शीतल त्यागी, नायक खन्ना कोरियोग्राफी का एक स्थापित नाम हैं। लेखन और गायन में सहारनपुर के अजय झिंगरन ने अपना अलग ही मुकाम बनाया। सोनू निगम द्वारा गाया गया गीत 'तुझे लागी न नजरिया' अजय झिंगरन ने ही लिखा था। रितिका बजाज मुंबई में कहानी लेखन और निर्देशन में हाथ आजमा रही हैं। आशु सिंघल ने *कट्टी–बट्टी* फिल्म में लेखन किया। जाह्नवी कपूर, साहिल त्यागी, नंदिनी सेठ, फाल्गुनी भारद्वाज, श्रेया सिंघल सरीखी नई प्रतिभाओं ने भी नृत्य के क्षेत्र में सहारनपुर का लोहा अनेक मंचों पर मनवाया है।

ऐतिहासिक शोध एवं अध्ययन का गवाह उद्यान

सहारनपुर का राजकीय उद्यान (कम्पनी गार्डन) मुगल काल से ही अपने सौंदर्य, गौरवपूर्ण प्रयोगों और प्रकृति के संरक्षण के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा। दुनिया के जिन पौधों का संरक्षण कहीं नहीं हो सका, उन्हें फिर से नया जीवन सहारनपुर के राजकीय उद्यान ने दिया। ब्रिटिश दौर के अनेक प्रमुख वनस्पति विज्ञानियों का शोध कार्य राजकीय उद्यान सहारनपुर की चर्चा किए बिना अधूरा रहता था। चीन के चाय पर वर्चस्व को तोड़ने में इसी उद्यान ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में अनेक फल और सब्जियां जो विदेश से आईं, उन्हें पहली बार इसी उद्यान में उगने का गौरव प्राप्त है।

सहारनपुर के इस राजकीय उद्यान की स्थापना 17 वीं सदी में हुई थी। नवाब नजीबुद्दौला के जागीरदार इंतिजामुद्दौला ने इस उद्यान को नया रूप दिया सन् 1750 ई. में। इसका नाम 'फरहत बख्श' रखा गया। फरहत बख्श का हिंदी अर्थ होता है आनंद देने वाला। इंतिजामुद्दौला द्वारा इसके रख–रखाव के लिए सात गांवों की वसूली तय की गई। जिनोवा में पैदा होने वाली फूलगोभी इटली, फ्रांस तथा स्पेन से होती हुई पहली बार हिंदुस्तान में इसी उद्यान में लगाई गई। आज गोभी हर भारतीय की पसंदीदा सब्जी है। सहारनपुर पर मराठों का आधिपत्य सन् 1789 से 1803 ई. तक रहा। इस दौरान उन्होंने भूतेश्वर महादेव, बागेश्वर महादेव जैसे कई शिव मंदिरों की

पुष्प प्रदर्शनी, कम्पनी गार्डन

स्थापना की। मराठों द्वारा इस उद्यान में धार्मिक एवं सैन्य महत्त्व के लिए बेल के वृक्ष लगाए गए। वे बेल का प्रयोग इसमें बारूद भरकर हथगोलों के रूप में करते थे। आज भी इस उद्यान में मराठा कालीन सतियां और अन्य पूजनीय स्थल हैं।

iFke fcfV'k funs'kd gkVZyl

सन् 1803 में अंग्रेजों ने सहारनपुर पर आधिपत्य कर लिया। उन्होंने इस उद्यान में अनेक शोध एवं प्रयोग किए। सन् 1806 ई. में यहां हार्टलैस निदेशक बनकर आए। उन्होंने इस उद्यान के विषय में लिखा है – 'इस उद्यान के व्यापारिक सम्बन्ध बर्मा से लेकर मिस्र और दक्षिणी अफ्रीका तक हैं। यहां सब्जियों के बीजों का उत्पादन और फलों के पौधे तैयार किए जाते हैं।'

Xkkokou dk vkxeu

सन् 1819 में इस उद्यान का निदेशक स्कॉटिश सर्जन गोवान को बनाया गया। यह वह समय था जिस समय किंग जार्ज द्वारा स्थापित क्यू बोटेनिकल गार्डन में पूरे विश्व के पौधे एकत्र किए जाने का काम किया जा रहा था। गोवान ने यहां वनस्पति वैज्ञानिक लिनियस जिन्हें फॉदर ऑफ टैक्सोनॉमी कहा जाता है, के नाम पर लिनियन गार्डन का निर्माण किया। इस समय इस उद्यान में टेपिओका, अगेव, तम्बाकू, महोगनी, नर और मादा साइकस, यूक्लिपट्स की प्रजातियां, डायोसपाईरोस आदि अनेक पौधे यहां रोपे गए। पेरु से कुर्नान, हेनबेन, एकोनाइट कोलोसिन्थ, जैलप, टैरेक्सकम, डिजिटेलिस, कमेला, सनाय, इपिक्यूआना, बेलाडोना, जटामांसी, चोबचीनी, ईरेमोस्टेकिस

कम्पनी गार्डन

आदि के पौधे रोपे गए।

Tkkgu Qkcl jk;yh

सहारनपुर के सिविल सर्जन जोहन फोर्ब्स रॉयली सन् 1823 से 1837 तक यहां के निदेशक रहे। उन्होंने इस उद्यान की सहायता से दो उद्यान और स्थापित किए। एक उद्यान मसूरी में लॉगी गार्डन और दूसरा चकराता में नगऊ गार्डन। रॉयली ने यहां आते ही सन् 1823 ईं. में विश्व भर से पौधे और बीज एकत्र करने के लिए विभाग बनाया। मैक्सिको से पपीता, जापान से लोकाट, इंडोनेशिया, श्रीलंका से आम की प्रजातियां यहां लाकर लगाई गई। ईरेमोस्टेकिस सुपर्बा पूरे विश्व से जब नष्ट हो रहा था, तो उस समय उसे यहां मोहंड में लगाया गया। शिवालिक की गोद में वह खूब फला–फूला और पूरे विश्व से नष्ट होने से बच गया। हिमालय से निकल विश्व भर के जंगलों में देवदार अर्थात् सिडरस को फैलाने का श्रेय भी इसी उद्यान को है। सन् 1835 ईं. में 'बोटनी ऑफ दी हिमालयन माउंटेन', सन् 1837 में *इलेस्ट्रेशन ऑफ एंटीक्यूटी ऑफ हिन्दू मेडिसिन*, सन् 1840 में *प्रोडक्टिवरिसोर्सिस ऑफ इण्डिया*, सन् 1855 में *फाईबरस प्लान्ट्स ऑफ इण्डिया फिटिट फॉर कार्डेज* और *फ्लोरा ऑफ कश्मीर* आदि पुस्तकें डॉ रॉयली ने इस उद्यान के अनुभवों से प्रेरित होकर लिखी। विश्व को अनेक पौधों से परिचित कराने वाले रॉयली की पहचान उन पौधों के वानस्पतिक नाम के साथ रॉयली जुड़ा हुआ है।

thok'e fo'k"kK Mk- Qkdduj

जीवाश्म विशेषज्ञ डॉ. फॉकनर सन् 1832 से 1842 तक इस उद्यान के निदेशक रहे। उन्होंने यहां की वनस्पति के साथ–साथ शिवालिक से प्राप्त जीवाश्म पर खूब शोध किया। डॉ. फॉकनर ने चाय से चीन का एकाधिकार समाप्त करने का बीड़ा उठाया। डॉ. गोवान व डॉ. रॉयली के समय चाय के पौधे आसाम से लाकर सहारनपुर के इस उद्यान में लगाए जा चुके थे। पौधों पर यहां प्रयोग के बाद फॉकनर ने गढ़वाल और कुमाऊँ की पहाड़ियों पर चाय की खेती की तकनीक को फैलाया और प्रोत्साहित किया। डॉ. फॉकनर ने शिवालिक की पहाड़ियों से जीवाश्व एकत्र किए और उनका अध्ययन किया। उन्होंने कछुआ, लंगूर आदि अनेक स्तनधारी जीवों के जीवाश्म खोजे। उन्होंने अपने अनुभव और जीवाश्म की थ्योरी को विश्व प्रसिद्ध जीवाश्म विज्ञानी चार्ल्स डार्विन से साझा की। उनकी महत्त्वपूर्ण खोजों के कारण सन् 1837 में उन्हें जीओलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंदन का सर्वोच्च सम्मान वॉलस्टन मेडल दिया गया। बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण वे लंदन चले गए और अपने साथ उद्यान से उत्पादित पौधों के सुखाए हरबेरियम की बड़ी 70 पेटियां और एकत्र जीवाश्म की 40 पेटियां साथ ले गए।

fofy;e tselu

सन् 1844–1875 तक यहां का दायित्व विलियम जेमसन ने संभाला। उन्होंने शिवालिक की पहाड़ियों का अध्ययन जारी रखा। डॉ. फॉकनर की तरह जेमसन भी चित्रकला के शौकीन थे। उन्होंने यहां के पौधों के 311 रंगीन चित्र बनवाए। उन्होंने यहां फोटोग्राफी और चित्रकला का विभाग भी बनवाया। ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी में सहारनपुर के नाम से आज भी अनेक चित्र सुरक्षित और संग्रहित किए गए हैं। आर डेसमंड द्वारा संग्रहित चित्रों को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने सन् 1991 में पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया, जिसमें यहां बने चित्रों को संजोया गया। 23 जनवरी, सन् 1859 को प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने विश्व के सर्वोच्च वनस्पति उद्यान एवं हरबेरियम क्यू बोटेनिकल गार्डन के निदेशक जेडी हूकर को एक पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने जेमसन के कार्य को खूब सराहा। डॉ. जेमसन ने औषधीय पौधों की कृषि का विस्तृत अध्ययन किया। अपने शोध अनुभवों को उन्होंने विश्व के उद्यानों एवं संबंधित विभागों को भेजा। उन्होंने सहारनपुर की पांच मील की परिधि में इस उद्यान की सहायता से 700 से अधिक बाग, 17136 फलदार वृक्ष, 55179 अन्य प्रकार के वृक्ष लगाए तथा 9566 पांउड बीज निःशुल्क बंटवाए। चकराता, देहरादून, मसूरी के चाय के बागान उस समय ही लगाए गए थे।

Mk- ts ,Q MRFkh

प्रसिद्ध वनस्पति वैज्ञानिक डॉ. जे एफ डत्थी यहां तक सन् 1876 से सन् 1903 तक निदेशक के रूप में रहे। सन् 1887 में बोटेनिकल सर्वे ऑफ इंडिया की स्थापना हुई, इस उद्यान को उत्तर भारत का केंद्र बनाया गया। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान 'फ्लोरा ऑफ अपर गंगेटिव प्लान' नाम से एक ग्रंथ की रचना की। डॉ. डत्थी ने लंबी यात्राएं की। पौधों को एकत्र कर उनका वैज्ञानिक विवरण लिखा। इस उद्यान में सूखी वनस्पतियों के संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसे हरबेरियम कहते हैं। बाद में यह हरबेरियम देहरादून रिसर्च स्टेशन तथा अनुसंधान केंद्र को चला गया। इस समय यहां खजूर की खेती का भी प्रयास हुआ। मुख्य रूप से खजूर के इस बाग क्षेत्र को खजूरी बाग कहा जाता है।

Mk- ,y ch flag

स्वतंत्रता के बाद डॉ. एल बी सिंह यहां के निदेशक बने। उनके समय भी इस उद्यान ने उत्तरोत्तर विकास किया। यहां से *हार्टिकल्चर एडवांस* नामक शोध

कम्पनी गार्डन में मस्ती करते बच्चे

पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। डॉ. सिंह ने विश्व प्रसिद्ध *ट्रापिकल फ्रूट्स* तथा द *मैंगो* पुस्तकें लिखी। उनके कार्यकाल के दौरान अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयोगशालाओं का निर्माण किया गया।

or'eku e

फलों की कई महत्त्वपूर्ण प्रजातियों को तैयार करने का श्रेय इस उद्यान को प्राप्त है। आम की गौरव और सौरभ प्रजातियां यहीं तैयार की गई। लौकाट की सहारनपुर स्पेशल और आडू की सहारनपुर प्रभात प्रजाति भी इसी उद्यान की देन है। वर्तमान में इस केंद्र को औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र के तौर पर जाना जाता है। राष्ट्रीय औद्यानिक मिशन के अंतर्गत फलों के क्षेत्रों का विस्तार, फूलों की खेती को बढ़ावा दिया जाना, जैविक खेती को प्रोत्साहन, मौन–पालन, वर्मी कंपोस्ट, संरक्षित खेती, आदि के साथ–साथ यहां से अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। प्रतिवर्ष यहां शाकभाजी एवं पुष्प प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाता है।

इस्लामिक शिक्षा का विख्यात केंद्र दारुल उलूम

विश्वविख्यात दारुल उलूम दुनिया में इस्लामिक सिद्धांतों के अध्ययन की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाला शिक्षा का यह केंद्र सहारनपुर के लिए गौरव का विषय है। यहां मुख्य इमारत के साथ–साथ रशीदिया मस्जिद भी बहुत सुंदर है। दारुल उलूम के विशाल प्रांगण में कई निर्माण दर्शनीय हैं। स्थापत्य की दृष्टि से यहां प्रत्येक इमारत नायाब है। संगमरमर पर हुआ बेहतरीन काम अपनी ओर खींचता सा नजर आता है।

मौलाना कासिम नानौतवी और हाजी आबिद हुसैन के अथक प्रयासों और दृढ़ निश्चय से 30 मई सन् 1866 को मदरसा इस्लामिया अरबी की स्थापना की गई। यह मदरसा ही बाद में दारुल उलूम, देवबंद के नाम से दुनिया में मशहूर हुआ। यह समय भारत के इतिहास में राजनैतिक उथल–पुथल व तनाव का समय था। इस समय अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की असफलता के बादल भी छँट नहीं पाए थे कि अंग्रेजों ने भारत में दमन चक्र तेज कर दिया था। उस समय दारुल उलूम से जुड़े लोगों ने स्वतंत्रता की लड़ाई में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दारुल उलूम देवबंद ने अपने दर्शन व विचारधारा से मुसलमानों को नई चेतना प्रदान की। देवबंद का प्रभाव भारतीय उप महाद्वीप के मुसलमानों पर बहुत

दारूल उलूम, देवबंद

गहरा है। दारुल उलूम में प्रवेश के लिए लिखित परीक्षा और साक्षात्कार से गुजरना पड़ता है। 'यहां अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी, हिंदी, गणित, कुरान, हिफ़्ज नाजरा, तजवीद, हदीस तफसीर, फिकाह, मनतिक, उसूले तफसीर, उसूले हदीस, अकायद, तसव्वुफ, इलमुल फराइज आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है।' यहां अफगानिस्तान, नेपाल, मलेशिया, अफ्रीका आदि देशों से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। यहां एक बार प्रवेश होने के बाद रहने, खाने और शिक्षा की समस्त व्यवस्था निःशुल्क प्रदान की जाती है।

दारुल उलूम में विद्यार्थी स्वयं का समाचार पत्र भी निकालते हैं। छपे हुए और हस्तलिखित समाचार पत्र यहां वृक्षों के चारों ओर लगे बोर्ड पर चस्पा कर दिए जाते हैं। इन समाचारों को यहां के दूसरे विद्यार्थी और बाहर से आने वाले लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं। यह महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया यहां विद्यार्थियों में लेखन कुशलता को विकसित करने के लिए रखी गई है। दारुल उलूम के साथ जुड़ा हुआ रोचक तथ्य यह है कि इसकी निर्माण तिथि सन् 1866 से लेकर आज तक यहां निर्माण कार्य नहीं रुका है। इसके हर भाग में कभी न कभी कोई न कोई निर्माण चलता ही रहता है। यहां बने छात्रावास अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हैं। दारुल उलूम का विशाल पुस्तकालय भी दर्शनीय है। यहां अनेक ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का संकलन किया गया है। मुगलकाल की अनेक पुस्तकें यहां संग्रहित हैं। यहां के विशाल पुस्तकालय में डेढ़ लाख से अधिक पुस्तकें संगृहीत हैं। इस्लाम पर शोध करने वाले अनेक शोधार्थी इस पुस्तकालय में पहुंचते हैं। उर्दू, अरबी, फारसी के साथ–साथ देश की दूसरी भाषाओं की अनेक पुस्तकें भी यहां उपलब्ध हैं। कुछ ऐसी पुस्तकें और लेख भी यहां संगृहीत हैं जो कहीं नहीं मिलते। यहां की विचारधारा से प्रभावित मुसलमानों को देवबंदी मुसलमान कहा जाता है। दारुल उलूम ने न केवल इस्लामिक शोध व साहित्य को लेकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि भारतीय परिवेश में इस्लामिक संस्कृति को नवीन आयाम और अनुकूलन भी दिया है।

सहारनपुर का साहित्यिक परिदृश्य

सहारनपुर जनपद के साहित्य संदर्भ पर गवेषणात्मक दृष्टि डालें तो इस जनपद के ऐतिहासिक संदर्भ को गजेटियर शून्य व्यक्त करता है। इतिहास साक्ष्य की अपेक्षा करता है और बिना साक्ष्य के कुछ भी कहना बेमानी सा लगता है। साहित्यिक दृष्टि से जितने भी साक्ष्य और संदर्भ मिल सके उन्हें संजो कर इस आलेख में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। वास्तविकता यह है कि सहारनपुर जनपद में पठन–पाठन और लेखन की समृद्ध परम्परा रही है लेकिन विदेशी आक्रमणकारियों का मुख्य मार्ग होने के कारण यहां इस परम्परा को बहुत नुकसान पहुंचा। जिस कारण अनेक साहित्यिक कड़ियां गायब हैं। इसलिए इस क्षेत्र में साहित्यिक परम्परा को अधिक शोध एवं अध्ययन की आवश्यकता है। एक संक्षिप्त आलेख में सहारनपुर जनपद के सभी जाने–अनजाने समस्त शब्दपुत्रों के नाम समाहित करना किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है। फिर भी इस आलेख में सहारनपुर के कुछ चर्चित साहित्यकारों और उनके साहित्यिक कृतित्व का परिचय समाहित करने का प्रयास किया गया है। आप भी जानिए सहारनपुर की समृद्ध साहित्यिक परम्परा को–

Ikne th egkjkt

पद्म जी महाराज का जन्म नकुड़ के निकट साढ़ौली गांव के एक वैष्णव परिवार में हुआ था। पद्म नगली गांव इन्हीं के द्वारा बसाया गया है। प्राचीन पांडुलिपी में इनकी संत परम्परा का वर्णन है। रूपराम वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक क्रांति पथ का राही में भी पद्म जी महाराज द्वारा लिखे अप्रकाशित और बिखरे साहित्य का वर्णन मिलता है। पद्म जी महाराज का जन्म का सन् तो नहीं मिलता लेकिन यह तथ्य मिलता है कि इन्हें सन् 1505 ई. में आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी। पद्म जी महाराज संत कबीर के समकालीन थे और उनके मत से प्रभावित थे। कबीर जी से पगड़ी बुनवा कर पद्म जी के सिर बंधवाई गई थी। पद्म जी महाराज के दोहों में कबीर की भाषा का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। पद्म जी महाराज ने स्वयं स्वीकार किया है– *पद्म क्यों भये अधीरा, जब संगति लई कबीरा।* पद्म जी महाराज रणदेवा गद्दी परम्परा के प्रथम गुरू थे। उन्होंने समाज की विकृतियों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रहार किया था और लोगों के बीच उनकी बहुत मान्यता थी।

ckck ykynkl

शाहजहां के शासन काल के दौरान सहारनपुर में बाबा लालदास एक बड़े संत हुए। बाबा लालदास का जन्म लाहौर के कसूर गांव में सन् 1355 माना गया है। बाबा लालदास ने पांवधोई नदी के किनारे न केवल लंबे समय तक तप किया बल्कि साहित्य साधना भी की। मुगल शाहजादा दाराशिकोह इनका मुरीद हो गया। इन दोनों के बीच दार्शनिक प्रश्नोत्तरी को साहित्य, धर्म और दर्शन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। श्री बाबा लाल जी के जीवन एवं कृतित्व पर आधारित पुस्तक ज्ञान गंगा में वर्णन मिलता है कि बाबा लालदास जी के ग्रंथ बर्लिन लाइब्रेरी, जर्मनी, बोडिलियन लाइब्रेरी ऑक्सफ़र्ड और ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी, लंदन में सुरक्षित रखे हैं। बाबा लालदास जी ग्रंथों के विषय में अभी और जानकारी जुटाए जाने की आवश्यकता है। बाबा लालदास का एक दोहा देखिए, **fgn nkok on dk] rd dru djkuA nkuk nko ckfèk;k Hky vkReKkuAA** साहित्यिक प्रश्नों में यह प्रश्नोत्तर आता है कि बाबा लालदास के साहित्य की भाषा मेवाती थी। हित हरिवंश और बाबा लालदास जी के जीवन और उनके साहित्य पर शोधार्थियों ने शोध भी किए।

xkLokeh fgr gfjo'k

सहारनपुर के प्रथम हिंदी साहित्यकारों में राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक

गोस्वामी हित हरिवंश जी का नाम सर्वोपरि है। देवबंद मूल के हित हरिवंश जी का जन्म सन् 1502 ई. में हुआ था। अपनी आयु के 32 वें वर्ष में ये वृंदावन चले गए थे और वहीं रहकर इन्होंने ब्रजभाषा में साहित्य रचना की। हित चौरासी इनकी प्रमुख रचना है। इनकी अन्य रचनाओं में *राधासुधानिधि, यमुनाष्टक* और *स्फुट वाणी* हैं। संस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा में इनका कोई सानी नहीं है। यहां तक कि सूरदास की ब्रजभाषा में भी लोकभाषा का प्रभाव है लेकिन हित हरिवंश जी की भाषा में जो प्रांजलता और उत्कृष्टता है, वह किसी दूसरे ब्रजभाषी कवि में देखने को नहीं मिलती। संस्कृत की तत्सम पदावली को ब्रजभाषा के प्रवाह में ढालने की कला में हरिवंश जी को अद्‌भुत क्षमता प्राप्त है।

fo'oHkj ukFk 'kekZ dkf'kd

हिंदी कहानी की विधा में 10 मई, सन् 1891 ई. को गंगोह में जन्मे विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक का नाम उल्लेखनीय है। उनका कार्यक्षेत्र कानपुर रहा और जीवन भर वह वहीं रहे। उनकी कहानी 'ताई' ने हिंदी में बहुत प्रसिद्धि हासिल की। उनकी रचनाएं महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की *सरस्वती* में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद के साथ ही उनके कहानी–लेखन का सफर आगे बढ़ा। विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक जी के पिता का नाम पंडित हरिश्चंद्र शर्मा था। विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक जी को कानपुर के पंडित इंद्रसेन ने गोद ले लिया था। इन्होंने हिंदी, संस्कृत, पंजाबी, बंगला, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी पर स्व अभ्यास से नियंत्रण कर लिया। इन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी विधाओं में खूब लिखा। उपन्यास में इन्होंने *मां, भिखारिणी, भीष्म, विधवा* और *संघर्ष* लिखा। इनके *कला मंदिर, कल्लोल, चित्रशाला, मणिमाला, पेरिस की नर्तकी* कहानी संग्रह प्रकाशित हुए।

dUg;kyky feJ ^iHkkdj*

29 मई, सन् 1906 को देवबंद में जन्मे कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' को सहारनपुर के हिंदी साहित्य का सूर्य कहा जा सकता है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखनी चलाते हुए अपनी लेखन क्षमता का लोहा देश–विदेश में मनवाया। मानवीय चित्रण, सामाजिक सरोकारों पर उनकी सूक्ष्म दृष्टि का कोई तोड़ नहीं है। *ज़िंदगी मुसकरायी, बाजे पायलिया के घुंघरु, ज़िंदगी लहलहायी, महके आंगन चहके द्वार, दीप जले शंख बजे, माटी हो गयी सोना, क्षण बोले कण मुसकाए, जिएं तो ऐसे जिएं, कारवां आगे बढ़े,* लघु कथाओं का संग्रह– *आकाश के तारे, धरती के फूल'* महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुई।

;ः 'k: gbl vkèkfud lkfgfR;d ijEijk

सन् 1907 में जन्मे भगवतप्रसाद शुक्ल 'सनातन' ने पत्रकारिता के माध्यम से बहुत सराहनीय मुहिम चलाई। उन्होंने सन् 1940 ई. में सहारनपुर नगर से कविता के मासिक पत्र *कोकिल* का शुभारंभ किया। इस पत्र की यही विशेषता थी कि इसमें केवल कविताएँ प्रकाशित होती थी। इस कविता पत्र के द्वारा जनपद में न केवल सामाजिक चेतना को बढ़ावा मिला बल्कि देशप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएं भी यहाँ प्रकाशित हुईं। निःसंदेह इस प्रयास को पत्रकारिता के साथ–साथ हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण ढंग से देखा जा सकता है। सहारनपुर में हिंदी मित्र मंडल की काव्य गोष्ठियों ने यहां कविताओं को लेकर अनुकूल वातावरण बनाने में काफी योगदान दिया। इसके बाद साहित्य सलिला परिषद, तरुण साहित्य मंडल, संसद, नवयुग साहित्यिक संस्था, प्रतिबिंब, विभावरी, समन्वय ने भी इस परम्परा का निर्वहन किया।

lkfgfR;d ladyu % ,d

नवंबर, सन् 1957 में सहारनपुर नगर से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र *जागरण* का 'रजतरेणु' काव्य विशेषांक प्रकाशित हुआ। इस विशेषांक के संपादक शांतिस्वरुप 'कुसुम' जी थे। इसमें सहारनपुर जनपद के कवियों का संक्षिप्त परिचय और उनकी प्रतिनिधि काव्य रचनाओं को संकलित किया गया।

lkfgfR;d ladyu % nks

नवंबर, सन् 1957 में ही डॉ. ओमप्रकाश दीक्षित ने एक संकलन *सहारनपुर के साहित्यकार* के नाम से निकाला। इस संकलन को दो भागों में बांटा गया है। पहले भाग में 19 कवियों का परिचय और उनकी दो–दो कविताएं थीं। दूसरे भाग में 17 गद्य लेखकों का परिचय और उनकी रचनाएं दी गई थीं। *सहारनपुर के साहित्यकार*–पूर्वाद्ध में 1901 में जन्मे रतनलाल 'चातक', सन् 1906 में जन्मे जयराम शर्मा 'बालक', हरिप्रसाद 'अविकसित', काशीराम 'प्रफुल्लित', सन् 1914 में जन्मे सेवकराम खेमका, शांतिदेवी 'कोकिला', सतीशचंद्र गुप्ता, देवकराम 'सुमन', ओमप्रकाश दीक्षित, 19 दिसंबर, सन् 1921 में जन्मे धर्मपाल शास्त्री, सन् 1923 में जन्मे छोटेलाल 'मधुकर', रामशरण मिश्र, 24 अक्टूबर, सन् 1923 में जन्मे शांतिस्वरुप 'कुसुम', महेशदत्त 'रंक', सन् 1927 में जन्मे भोलेश 'भावुक', 17 जनवरी, सन् 1929 में जन्मे विजेंद्रनाथ गुप्त 'आनंद', कृष्णदत्त 'करूणेश', सुंदरश्याम 'मुकुट'। उत्तरार्द्ध में–जगदीशचंद्र आचार्य, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', सन् 1914 में जन्मे लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, 16 अक्टूबर, सन् 1918 में जन्मे पद्मप्रकाश 'संतोष', सन् 1920 में जन्मे श्यामलाल 'अख्तर', शरदकुमार 'शरद', विनोद प्रकाश 'विनोद', डॉ. बुद्ध

प्रकाश, 4 सितम्बर, सन् 1925 में जन्मे रामेश्वरनाथ 'जलज', 11 फरवरी, सन् 1928 में जन्मे ताराचंद्र कांत, अखिलेश मिश्र, ठाकुरदत्त शर्मा 'पथिक', गोपीचंद्र 'हैलन', संतोषकुमार जैन, जीवन प्रकाश जोशी, योगेश गुप्त, देवेंद्र 'दीपक' शामिल हैं।

lkfgR;d ldyu % rhu

सन् 1968 में इस ओर तीसरा प्रयास शरदकुमार मिश्र 'शरद' ने किया। उन्होंने सहारनपुर के कवि नाम से संकलन का संपादन किया। इसमें 27 कवियों का जीवन–परिचय और उनकी प्रतिनिधि रचनाएं संकलित की गई हैं। ये तीनों प्रयास सहारनपुर की साहित्यिक प्रगति को जानने–समझने की आधार भूमि प्रस्तुत करते हैं। ^**lgkjuiqj dh dfo*** में रतनलाल 'चातक', हरिप्रसाद शर्मा 'अविकसित', चमेल सिंह 'शील', सेवकराम खेमका 'मुदित', शरद कुमार मिश्र 'शरद', शांति स्वरूप 'कुसुम', राजकुमार शर्मा, कृष्णदत्त 'करुणेश', महेशदत्त 'रंक', शांतिदेवी 'कोकिला', 1 जनवरी, सन् 1933 में जन्मे महेश 'बल', 7 मार्च, सन् 1931 में जन्मे विजय कुमार शर्मा, प्रेमलता 'प्रेम', सुंदर श्याम 'मुकुट', जगदीश प्रसाद 'भ्रमर', 23 मार्च, सन् 1913 में जन्मे भागीरथ लाल 'शारदा', संदल सिंह 'संदल', कैलाश झा, सोमदत्त शर्मा 'सोम', डॉ. देवेंद्र 'दीपक', सूरजभान 'हितकर', कृष्णलाल 'शलभ', अशोक 'भ्रमर', रतन कुमारी, 2 जनवरी, सन् 1929 में जन्मे राजेश्वर 'राकेश', रमेश चंद गर्ग, शशि 'प्रभाकर' आदि काव्य–मनीषियों को सम्मिलित किया गया।

lgkjuiqj dh dof;f=;k

सन् 1907 में जन्मी रामकली प्रभा जी की अनेक रचनाएं प्रकाशित हुई। 12 दिसंबर, सन् 1912 में जन्मी रत्न कुमारी *काव्यतीर्थ* का अंकुर शीर्षक से कविता–संग्रह प्रकाशित हुआ। सन् 1916 में जन्मी विद्यावती कौशल ने भी काव्य–साधना की। 11 अगस्त, सन् 1918 में जन्मी शांति देवी 'कोकिला' के स्वर से देशभक्ति के स्वर फूटे। सन् 1927 में जन्मी शीला गुप्ता और 7 दिसम्बर, 1927 में जन्मी एस कविता भी काव्य–साधिका रहीं। सन् 1928 में जन्मी प्रेमकुमारी गुप्ता का कविता संकलन *अभिव्यक्ति* के नाम से आया। इस संकलन में कुल 41 कविताएं हैं। सन् 1943 में जन्मी कवयित्री इंदिरा गौड़ के गीत *सुधियों का कुम्भ पर्व, तुलसी सहन की,* बालगीत में *सात समंदर पार, मिट्ठू मियां* और गीत समग्र में *प्राण–बांसुरी* प्रकाशित हुए। सन् 1946 में जन्मी सुभद्रा खुराना के काव्य संग्रह *अक्षर–अक्षर नाम तुम्हारा*, *दर्द दे दिया चलते–चलते, मैं तेरी वंशी हूं माधव, प्यासा बादल नदी किनारे* प्रकाशित हुए बालकाव्य में *फिर से सूरज निकल गया है* प्रकाशित हुआ। *दधीचि, पन्ना,*

नानक नाम जहाज है उनके खंडकाव्य हैं। साथ ही *गुरुगोविंदम्* नाम से महाकाव्य प्रकाशित हुआ। इन संकलनों के शीर्षक ही यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं कि ये भावपूर्ण और संवेदना को छूने वाले संकलन हैं। 6 मार्च 1957 में जन्मी विभा मिश्रा को भी सहारनपुर की कवयित्री के रूप में जाना जाता है। कवयित्री प्रेमलता 'प्रेम' के गीतों में वेदना का स्वर सुनाई देता है। इन्होंने 'रणभेरी' शीर्षक से एक संकलन भी संपादित किया। प्रेमलता 'प्रेम' का 'मधुवन के आस–पास' काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। नीलम जैन, अनिता कपूर, सपना सिंह की रचनाएं भी प्रकाशित हुई हैं।

vkj c<rh jgh lkfgR;d ;k=k

वर्तमान तक उपलब्ध स्रोतों के अनुसार सहारनपुर का सबसे पहला कविता–संकलन मामराज शर्मा 'हर्षित' जी का 'अनुभूति–गीत' है। नकुड़ में सन् 1870 को जन्मे बाबू सूरजभान वकील का नाम कथा साहित्य के उपन्यास रूप में महत्त्वपूर्ण ढंग से लिया जाता है। उनके द्वारा लिखा *मनमोहिनी नाटक* के नाम से उपन्यास खूब चर्चित हुआ। सरसावा में सन् 1877 को जन्मे पंडित जुगलकिशोर मुख्तार की मेरी भावना कविता जैन समाज में सामूहिक प्रार्थना के रूप में प्रचलित है। जैन परिवारों में इसका दैनिक पाठ किया जाता है और जैन उत्सवों का शुभारंभ भी इस प्रार्थना के साथ किया जाता है। यह कविता सर्वप्रथम जैन हितैषी के अप्रैल–मई, सन् 1916 के संयुक्तांक में छपी थी। इन्होंने जैनाचार्यों की रचनाओं का हिंदी पद्यानुवाद भी किया। देवबंद में सन् 1882 में जन्मे बाबू ज्योति प्रसाद जैन पत्रकार और हिंदी के कवि थे। उनकी कविताएं सच्चाई के अधिक निकट रहीं। सामाजिक कुरीतियों पर उनका तीक्ष्ण प्रहार था।

देवबंद में 20 जनवरी, सन् 1901 को जन्मे आचार्य जगदीशचंद्र मिश्र जी के सन् 1957 में *इंदिरा*, सन् 1960 में *वह हार गई, सीमा के पार, हाथी के दांत* और *दुर्बल के पांव* उपन्यास प्रकाशित हुए। आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र का *धूप–दीप* सात भावपूर्ण कहानियों का संकलन है। उनके लघुकथा संग्रह हैं– सन् 1957 में *मौत की खोज*, सन् 1958 में *खाली भरे हाथ* और सन् 1958 में *पंचतत्त्व*। मिश्र जी ने अनेकांकी और एकांकी दोनों ही तरह के नाटकों की रचना की। उनकी सन् 1962 में *देवदूत*, सन् 1963 में *पौराणिक एकांकी*, सन् 1968 में *मरुस्थली के पहरेदार* और सन् 1969 में *धर्मयुद्ध* नाट्य रचनाएं आईं। हिंदी समीक्षा के क्षेत्र में 15 जुलाई, सन् 1901 को सरसावा में जन्मे सूर्यकांत शास्त्री का नाम उल्लेखनीय है। सन् 1930 में उनकी पुस्तक *हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास* और सन् 1943 में *पुस्तक साहित्य मीमांसा* प्रकाशित हुई। सहारनपुर में सन् 1901 में जन्मे वैद्य रतनलाल *चातक* का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने

हिंदी मित्र मंडल की स्थापना की जो नगर की साहित्यिक संस्थाओं में प्रथम रही जिसने काव्य–गोष्ठियों की परम्परा को शुरू करने का कार्य किया। 19 सितंबर, सन् 1903 को गांव आलमपुर में जन्मे सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपने उपन्यासों से खूब ख्याति अर्जित की। *आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य, पतन और उत्थान, अंतर्दाह, होटल मॉडर्न* और *कंपनी का मैनेजिंग डाइरेक्टर* इनके उपन्यास हैं।

तल्हेड़ी बुजुर्ग गांव में 3 अक्टूबर, सन् 1906 को जन्म लेने वाले हरिप्रसाद शर्मा अविकसित ने ना केवल काव्य के स्वर का बिगुल बजाया बल्कि अनेक युवाओं को भी इसके लिए प्रेरित किया। *सौरभ* नाम से काव्य संग्रह में उनकी 37 कविताएं काव्य–प्रेमियों के सामने आईं। उन्होंने इस काव्य संग्रह में देश की महान् विभूतियों का स्मरण भी किया। देवबंद में सन् 1920 में जन्मे शरदकुमार मिश्र 'शरद' का 37 लघुकथाओं का संग्रह *धूप और धुआं* सन् 1957 में प्रकाशित हुआ। सन् 1973 में उनकी *प्रगीतिका* के नाम से पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें उनकी 55 हिंदी गज़लों का संकलन है। सन् 1974 में *मुक्तक* के नाम से संकलन आया। मुक्तक में 201 मुक्तकों का संग्रह है। इन मुक्तकों में उन्होंने विभिन्न विषयों को छूते हुए आसमान में मुक्त उड़ान भरी। मेरठ के कंडेरा गांव में 15 अक्टूबर, सन् 1920 को जन्मे देवकराम सुमन बाद में सहारनपुर के स्थायी निवासी हो गए। उनके चार दशक के लंबे साहित्यिक सफर के बीच सन् 1947 में *चांद बटोही*, सन् 1947 में ही *क्रांति गीत*, सन् 1954 में *प्रणय गीत*, सन् 1976 में *चौराहा काव्य*, सन् 1976 में *कुंडली शतक*, सन् 1982 में *पूर्वजों के पत्र*, सन् 1982 में ही *भारत महिला* और सन् 1983 में *युगध्वनि* रचनाएं प्रकाशित हुईं। रचनाओं के शीर्षकों से स्पष्ट है कि उन्होंने साहित्य क्षेत्र में प्रचलित लगभग सभी महत्त्वपूर्ण विषयों को छुआ। 15 फ़रवरी, सन् 1921 में जन्मे डॉ. ओमप्रकाश दीक्षित सहारनपुर में जेवी जैन कॉलेज में हिंदी प्रवक्ता रहे। उन्होंने वीररस में कविताएं लिखीं। इनकी *हाड़ा रानी, हाथी हूल* और *पन्ना धाय* कविताएं चर्चित रहीं। सन् 1923 में जन्मे डॉ. सुंदरश्याम मुकुट जी गोचर महाविद्यालय, रामपुर मनिहारान के हिंदी विभागाध्यक्ष पद पर रहे। उनका कविता संग्रह *अक्षत के* नाम से आया। लेकिन कविता से भी महत्त्वपूर्ण कार्य उनका सहारनपुर सहित पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकभाषा कौरवी के महत्त्व को दुनिया के सामने लाने का था। सन् 1927 में जन्मे महेशदत्त 'रंक' को भावुक गीतकार के रूप में जाना जाता है। डॉ. ओ.पी. वर्मा– 24 नवंबर, सन् 1929 में जन्मे डॉ. ओ.पी. वर्मा ने धार्मिक और साहित्यिक दृष्टि से एक अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का सरल हिंदी भाष्य किया। वेदों को समझने और जानने के लिए यह भाष्य बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। वर्मा जी का *'गीत–यात्रा'* के नाम से काव्य संग्रह भी आया। 7

दिसंबर, सन् 1931 को जन्मे योगेश गुप्त के कई उपन्यास प्रकाशित हुए। उनके प्रमुख उपन्यासों में *उपसंहार* और *उनका फैसला* है। गुप्त जी के दो उल्लेखनीय और चर्चित कहानी–संग्रह हैं– *अबरक के फूल* और *उन दो शहरों की तरह*।

महेश बल की 30 कविताओं का संकलन *अल्पांश* के नाम से आया। भारत पर चीन के आक्रमण के विरोध में बनवारी लाल ने चेतावनी काव्य में 398 रूबाईयां लिखीं। यह देशभक्ति से ओतप्रोत संकलन है। *रकम पंवार, नवनीत का पनघट* 100 रूबाईयों का संग्रह है। इसमें शृंगार रस का खूब पुट है। वीरेंद्र कौशिक का काव्य संग्रह *सुधियां* के नाम से आया। इस काव्य संग्रह में 38 रचनाएं हैं। देवबंद में सन् 1931 को जन्मे विजय कुमार शर्मा का काव्य *रिक्शावाला* चार खंडों में विभाजित है। देवबंद में 15 अगस्त, सन् 1933 में जन्मे राजकुमार शर्मा ने सन् 1965 में *सरदार भगत सिंह* और सन् 1967 में *चंद्रशेखर आजाद* काव्य प्रकाशित हुए। देवबंद में 3 जुलाई, सन् 1933 को जन्मे डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा ने सहारनपुर के विविध संदर्भों को लेकर दो ग्रंथ *सहारनपुर संदर्भ* और *सहारनपुर की महान विभूतियां* का संपादन किया। उनकी इतिहास–बोध और शोधपरक दृष्टि उल्लेखनीय है। कृष्ण 'शलभ'– 18 जुलाई, 1945 को जन्मे साहित्यकार कृष्ण शलभ को देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों में गिना जाता है। बच्चों की कविताओं के बड़े संकलन *बचपन एक समंदर* का संपादन उनका महत्त्वपूर्ण कार्य है। उन्हें उप्र हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा बाल साहित्य भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके संपादकत्व में गीत संग्रह *गीत के मणिबंध* और *चीं–चीं चिड़िया* प्रकाशित हुआ। *ओ मेरी मछली* और *टिली–लिली झर* बाल–कविता संग्रह हैं। देश के कई प्रतिष्ठित सम्मान उनके नाम हैं। सन् 1950 को सहारनपुर में जन्मे कृष्णशंकर भटनागर के चार उपन्यास प्रकाशित हुए। सन् 1980 में *उजला आंचल,* सन् 1983 में *पेंडुलम,* सन् 1984 में *अंतिम अनुच्छेद* और सन् 1984 में ही *नमिता* उपन्यास प्रकाशित हुआ। सन् 1956 में जन्मे योगेश छिब्बर महाराज सिंह कॉलेज में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष रहे। उनके लिखे और गाए टप्पे खूब प्रसिद्ध हुए। उनकी प्रकाशित कृतियों में *चिड़िया बम नहीं बनाएगी, सांसों के वृंदावन में, तुम अपनी प्यास जितने हो, नैना गिरवी रख लिए, हाथों में ताजमहल,* और *ज़िकर पियारे का* शामिल है। लघुकथा के क्षेत्र में कृष्णशंकर भटनागर का सन् 1983 में *जिस्म पर उगा कफन* प्रकाशित हुआ। इसमें 76 लघु कथाएं हैं। डॉ. सुंदर श्याम मुकुट का एक एकांकी सन् 1940 में *भक्त नरसी* प्रकाशित हुआ। उन्होंने *शिवानंद–विजय* के नाम से भी नाटक लिखा था। कृष्णचंद्र शर्मा *भिक्खु* के तीन कहानी संग्रह हैं– *मृत्यु की मीनार, काला*

पत्थर और *बेला फूले आधी रात*। केदारनाथ 'प्रभाकर' ने *युग संत रामतीर्थ* में स्वामी रामतीर्थ का तथ्यात्मक जीवन–चरित प्रस्तुत किया है। उन्होंने अनेक शोधपरक आलेख लिखे।

budk Hkh jgk vonku&

सन् 1899 में जन्मे समर सिंह शील, 13 फरवरी सन् 1904 में जन्मे सूर्यकांत शर्मा शिशु, सन् 1911 में जन्मे वैद्य चंद्रमणि चंद्र, सेवकराम खेमका 'मुदित', चमेल सिंह 'शील', 5 मार्च, सन् 1913 में जन्मे सोमदत्त शर्मा 'सोम', 5 दिसंबर, 1914 में जन्मे वैद्य सूरजभान 'हितकर', 5 जनवरी, सन् 1921 में जन्मे संदल सिंह 'संदल', सूर्यदत्त शर्मा 'सूर्य', ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु', चंद्रभानु 'अकिंचन', महेशदत्त 'रंक', काशीराम 'प्रफुल्लित', सन 1923 में जन्मे रामशरण मिश्र, 15 मई, सन् 1931 में जन्मे चेतन स्वरूप चेतन, 23 सितंबर, सन् 1931 में जन्मे जय भगवान मयंक, 26 दिसंबर, सन् 1932 में जन्मे वेद प्रकाश कौशिक, 1 जुलाई, सन् 1932 में जन्मे जगदीश 'भ्रमर', सन् 1933 में जन्मे कृष्णदत्त 'करुणेश', शशि 'प्रभाकर', डॉ. विष्णुकांत शुक्ल, 1 जून, सन् 1933 में जन्मे सोमप्रकाश सुधेश, 11 जनवरी, सन् 1934 में जन्मे रामेश्वर दत्त शर्मा, 1 जून, सन् 1935 में जन्मे सुरेंद्र शर्मा पंकज, 30 जनवरी, सन् 1941 में जन्मे सीताराम त्यागी रचनाकारों में उल्लेखनीय नाम हैं। 26 दिसंबर, सन् 1934 में जन्मे शिवराज 'राजू' ने हास्य–व्यंग्य के क्षेत्र में अपनी कला का लोहा मनवाया और खूब लोकप्रिय हुए। चुड़ियाला में सन् 1938 में जन्मे धर्मपाल दत्त ने कवि–सम्मेलनों के माध्यम से सहारनपुर का नाम दूर–दूर तक पहुंचाया। गांव सौराना में 2 जनवरी, 1942 में जन्मे आचार्य अतर सिंह शास्त्री जी का खंडकाव्य *अपराजिता* के नाम से प्रकाशित हुआ। तल्हेड़ी में जन्मे काशीराम प्रफुल्लित, इस्लामिया इंटर कॉलेज में शिक्षक रहे रामशरण मिश्रा, बीडी बाजोरिया इंटर कॉलेज में अध्यापक रहे हरिशंकर आशुतोष का नाम भी उल्लेखनीय है। देवबंद के कुरडी गांव में जन्मे डॉ. चंद्रभानु 'अकिंचन' कवि सम्मेलनों में दूर–दूर तक ख्याति अर्जित करने वाले कवि रहे। हिंदी साहित्यिक जगत में अयोध्या प्रसाद गोयलीय, डॉ. अंबा प्रसाद 'सुमन' का नाम भी उल्लेखनीय है। समीक्षा के क्षेत्र में अंबिका प्रसाद वाजपेयी, महेंद्र धींगड़ा, सत्यव्रत शर्मा 'अजेय', राजकुमार शर्मा, आचार्य शिवचंद्र शर्मा एवं डॉ. रामविनय शर्मा का विशिष्ट योगदान है। सन् 1931 में जन्मे जीवन प्रकाश जोशी, क्षेमचंद्र 'सुमन', शांति स्वरूप 'कुसुम', सुदर्शन चोपड़ा डॉ. सतीश जोशी, डॉ. आरपी शुक्ल कुछ ऐसे हैं जिन्होंने सहारनपुर में कुछ समय रहकर साहित्य सेवा की। नकुड़ में जन्मे मनोज कुमार 'अहसास' की *हंसता रहा शहर* पुस्तक प्रकाशित हुई है।

orleku e

वर्तमान में जो साहित्य मनीषी अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य–निधि को समृद्ध कर रहे हैं, उनमें उल्लेखनीय हैं।

Mk- noin ^nhid*–31 जुलाई, सन् 1934 में जन्मे डॉ. देवेंद्र 'दीपक' की सन् 1972 में *सूरज बनती किरण* और सन् 1978 में *बंद कमरा खुली कविताएं* रचनाएं प्रकाशित हुई।

ifMr ;kxn iky nÙk– 14 अगस्त 1942 में जन्मे योगेंद्र पाल दत्त मुख्य रूप से आध्यात्मिक साहित्यिक लेखनी के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने *गीतामृतम्, दुर्गासप्तशती, श्रीमद्भागत काव्यामृतम्, शिव अमर कथा* के अतिरिक्त बच्चों के लिए *स्वर सारिका* भाग–1 और भाग–2 की रचना की है।

Mk- lj'kpn R;kxh– 3 जुलाई, सन् 1943 में जन्मे डॉ. सुरेशचंद्र त्यागी ने की *आसमान सबका है, छायावादी काव्य में सौंदर्य दर्शन, छायावाद संदर्भ, ध्रुवस्वामिनीः वास्तु और शिल्प, जय वर्धमानः वास्तु और शिल्प, प्रेमचंद, लोक–साहित्य, सौंदर्यशास्त्र, नागार्जुन, रामचंद्र शुक्ल* कई महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं।

je'k pn ^Nchyk*& 15 जुलाई, सन् 1945 में जन्मे रमेश चंद्र छबीला लंबे समय से उपन्यास और कहानी लेखन में संलग्न हैं। उनकी अनेक कहानियां प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत होती रहीं। *कागज की दीवार, पत्थर का प्रेत, सपने का सूरज, एक टुकड़ा सच, उसी मार्ग पर* उनके उपन्यास हैं। *दरिंदे, धुंध से बाहर* और *चक्रव्यूह* कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। *भूतों का गुरु* और *बाबा डमरूवाला* बाल कथा पुस्तकें हैं।

lj'k ^liu*& 7 मार्च, सन् 1947 को जन्मे सुरेश सपन ने विविध भावनाओं पर गीत लिखे। रामचरितमानस पर उनका विशेष कार्य है। हिंदी गजल में उनके प्रयोग अनूठे हैं। *तल में हलचल जारी है* उनका प्रकाशित गज़ल संग्रह है। व्यंग्य पर उनकी पकड़ विलक्षण है। संचालन में कोई उनका सानी नही है। दोहामयी *रामकथा* उनकी चर्चित प्रकाशित कृति है। सपन जी समन्वय संस्था के संस्थापक सदस्य हैं।

gfjjke ^ifFkd*& 1 दिसंबर, सन् 1948 में जन्मे हरिराम पथिक ने मुक्तक, गीत, गज़ल, क्षणिका, दोहे, हाइकु, निबंध विधाओं में लेखनी खूब मांजी। *पीड़ा की निधियां, पाती मेरे जीवन की, आधी जिंदगी पूरा सच, कहता कुछ मौन, शुभकामनाओं का सफर, जो जिया वो रचा, चींटी के घर हाथी* उनकी प्रकाशित कृतियां हैं।

Mk- fotniky 'kek& 6 जुलाई, सन् 1952 में जन्मे डॉ. विजेंद्रपाल शर्मा ने विभावरी साहित्यिक संस्था के माध्यम से सहारनपुर के कवियों को मंच प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनका *कागज का भी मन होता है* नाम से काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। शर्मा जी ने काव्य कलश का संपादन भी किया। *आस्था के स्वर* और *उघड़ती हुई परतें* सह लेखन में प्रकाशित हुईं। शर्मा जी की लेखनी में ग्रामीण पृष्ठभूमि का सौंदर्यमयी चित्र देखने को मिलता है। कौरवी भाषा के संरक्षण की दृष्टि से उनका कहानी संग्रह *कर्फ्यू* प्रकाशनाधीन है।

jktn ^jktu*& 9 अगस्त, सन् 1952 में जन्मे राजेंद्र 'राजन' का स्वर सहारनपुर ही नहीं बल्कि देश–विदेश के मंचों पर खूब सुना जाता रहा है। लंबे समय से उन्होंने हिंदी कविता के स्वर को खूब गुंजरित किया है। उनका काव्य संकलन *पतझर–पतझर सावन–सावन* बहुत लोकप्रिय है। राजेंद्र राजन का गीत संग्रह *केवल दो गीत लिखे मैंने* भी प्रकाशित हुआ। सन् 2015 में *खुशबू प्यार करती है* नाम से उनका तीसरा गीत संग्रह प्रकाशित हुआ है।

foukn ^Hkx*& 1 सितंबर, सन् 1952 में जन्मे विनोद भृंग का अध्यात्म काव्य जय *रघुनंदन जय सियाराम*, बाल कविता संग्रह *जादूगर बादल* और कविता *संग्रह उड़ान जारी है* प्रकाशित हुआ है। 1 सितंबर 1952 को जन्मे विनोद भृंग की कई रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। काव्य की लगभग सभी विधाओं में उनका अनवरत सृजन है। उत्कृष्ट बालकाव्य के लिए भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर ने उन्हें सम्मानित किया है।

Mk- vkj-ih- lkjLor& 1 अप्रैल 1954 में जन्मे डॉ. आर.पी. सारस्वत की *नानी का गांव, चटोरी चिड़ियां, काठ का घोड़ा, छुटकी की चुटकी बाल कविता* संग्रह प्रकाशित हुए। उन्हें बाल साहित्य लेखन पर भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर और अन्य कई प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

Mk- ,u- flg& 1 जनवरी 1956 गांव चतरसाली में जन्मे डॉ. एन. सिंह का दलित चिंतन उल्लेखनीय है। उनकी प्रकाशित कृतियों में संत कवि *रैदासः मूल्यांकन और प्रदेय, सतह से उठते हुए, विचार यात्रा में, मेरा दलित चिंतन, कठौती में गंगा, व्यक्ति और विमर्श, यातना की परछाइयां, काले हाशिए पर, चेतना के स्वर, रैदास ग्रंथावली, दलित साहित्य* और *युगबोध* आदि उल्लेखनीय हैं। अपनी साहित्यिक सेवा के चलते उन्हें 'डॉ. अंबेडकर विशिष्ट सेवा सम्मान', उप्र हिंदी संस्थान का 'सर्जना सम्मान' के अलावा कई अन्य सम्मान प्राप्त हुए।

vkj pruØkfr – सहारनपुर के गाँव उमरी कलाँ में जन्म। शुरू की पढ़ाई–लिखाई वहीं गाँव में। मेरठ विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई। कविता रचने की शुरुआत बचपन से ही। 1986 से लगातार कविता लेखन में मसरूफ़ रहने के बावजूद छपने की शुरुआत 2000 में। संकोची स्वभाव के कारण पहला संग्रह 2004 में जाकर छपा – *शोकनाच*। भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार के साथ कई अन्य पुरस्कार भी। आजकल दिल्ली में रहते हैं। संपादन और अनुवाद को पेशे से ज्यादा शौक की तरह अपना रखा है। अभी–अभी उनका दूसरा संग्रह *'वीरता पर विचलित'* प्रकाशित।

शायराना मिज़ाज का शहर

सहारनपुर की गंगा–जमुनी मिट्टी में हिंदी साहित्य के साथ–साथ उर्दू शायरी भी खूब पनपी। यहां के शायरों ने उर्दू के स्वर को देश ही नहीं बल्कि विदेश के मंचों पर पहुंचाने का बखूबी काम किया। उर्दू शायरी में जनपद ने देश को अनेक नाम दिए हैं। यहां जिन शायरों के नामों का उल्लेख किया गया है, उनमें कुछ वे शायर भी शामिल हैं, जिनका जन्म भले ही सहारनपुर में न हुआ हो लेकिन उनकी कर्मस्थली सहारनपुर रही है।

सहारनपुर के हसीबुद्दीन सोजां मिर्ज़ा ग़ालिब के शिष्य हुए। हसीब साहब दीवानी कचहरी, सहारनपुर से अपनी नौकरी छोड़कर दिल्ली चले गए थे। मिर्ज़ा ग़ालिब से उन्होंने शायरी का हुनर सीखा। बाद में फिर वे सहारनपुर आ गए। उन्होंने खुद स्वीकार करते हुए लिखा है–

ग़ालिब से काम था सो वो सोजां चले गए,
देहली में अब जनाब क्या काम रह गया।।

शायर बाबू शंभूदयाल भटनागर सरशार मौत का फलसफ़ा कुछ यूं लिखते हैं–

मौत से डरता है क्यों ऐ बेख़बर।
मौत तो है ज़िंदगी की नामबर।
ये वो नेमत है कि जब आ जाए है,
खोल देती है हयाते नौ के दर।।

साधुराम 'आरजू' अपनी ज़िंदगी को कुछ यूं समझाते हैं–

मुहब्बत में एक दिन हंसी आ गई थी।
अभी तक मेरी ज़िंदगी रो रही है।
मेरी ज़िंदगी 'आरजू' ज़िंदगी क्या,
अभी चुप हुई थी अभी रो रही है।।

इनायतउल्ला उर्फ़ कल्लू का काम हज्जाम अर्थात् नाई का था। उनकी शायरी में उनका काम भी झलकता दिखता है। ये लिखते हैं–

क्या मुझको सताती है, तू ऐ गर्दिशे दौरां।
मैं नाई का बेटा हूं, कहीं सर न रगड़ दूं।।

देवबंद में सन् 1938 में जन्मे शायर ताजदार 'ताज' ने वॉलीवुड में गीतकार के तौर पर बहुत नाम कमाया। उनके लिखे गीतों को मोहम्मद रफी, मुकेश, किशोर कुमार, महेंद्र कपूर, आशा भोंसले और अनुराघा पौडवाल ने भी आवाज दी। उनकी *आवारा पत्थर, जबर* और *बर्फीली जमीन का पत्थर* तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। देवबंद में सन् 1840 में जन्मे हबीब 'वहशी' देवबंद की शायरी का बड़ा नाम रहा। इन्होंने *पयामे यार* के नाम से मासिक पत्रिका का संचालन किया और 18 दीवान के नाम से गज़ल संग्रह का भी प्रकाशन किया। देवबंद में सन् 1890 ई. में जन्मे अल्लामा पीर साहब शायर थे। इनके द्वारा गीत भी लिखे गए, जिनका कि लंबे समय मंचन होता रहा। गंगोह के हजरत शाह मोहम्मद मुमताज जहां कद्दूसी सहारनपुर के प्रमुख शायर हैं।

16 जुलाई, सन् 1956 में जन्मे शायर नवाज़ देवबंदी सहारनपुर के नामी शायर हैं। उन्हें यश भारती सम्मान से सम्मानित किया गया है। *पहली बारिश* और *पहला आसमान* के नाम से इनके दो गज़ल संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनकी शायरी के कुछ रंग देखिए–

वो रुलाकर हँस न पाया देर तक,
जब मैं रोकर मुस्कुराया देर तक।
भूलना चाहा अगर उसको कभी,
और भी वो याद आया देर तक।।

10 जुलाई, सन् 1972 में गांव कैलाशपुर में जन्मे डॉ. रहमान मुसव्विर जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में एसोशिएट प्रोफ़ेसर हैं। 'पाकिस्तानी उर्दू कथा साहित्य में भारतीय मिथक' उनकी महत्त्वपूर्ण शोध कृति है। स्त्री संवेदना पर उनकी गज़ल में यह भाव देखिए–

'उसे हम पर तो देते हैं मगर उड़ने नहीं देते।
हमारी बेटी बुलबुल है मगर पिंजरे में रहती है।।'

बुद्धप्रकाश जौहर 'देवबंदी' के मौजे गंग, अब्दुल गफूर 'नस्साब' के सुखन–ए–शोरा, श्रीराम 'देहलवी' के खुम खानाए जावेद संदर्भों से अनेक शायरों का विवरण मिलता है। इनके अनुसार दरवेश अली 'दरवेश', मौलाना फैजुल हसन 'ख़्याल', शेख कलंदर बख्श आफरीं, शंकर लाल कायस्थ 'साकी', खजांची लाल 'साइल', मुंशी रमजान अली अख्तर, हकीम खुर्शीद हसन 'शम्स', मौलवी सैय्यद हुसैन 'शौक', मुंशी किशनस्वरूप 'सागर', मुंशी रामप्रसाद 'शाद', हसीबुद्दीन 'सोजां', मुंशी कुंदनलाल 'शरर', बालस्वरूप 'शिकन', मुंशी गोपालकृष्ण 'शैदा', पंडित माधोराम 'शैदा', मुंशी रूपकिशोर

जैन 'नामी', मौलवी मोहम्मद 'मुकीम', याकूब अली खां 'कलाम', अली अहमद 'तसनीम', मोहम्मद आदिल खां 'रईस', गुलाम मुस्तफा 'हकीम', मुंशी सना अहमद 'सब्र', मोहम्मद अहमद, बाबू शम्भूदयाल भटनागर 'सरशार', साधुराम 'आरजू', देवबंद के शेख मुहिबुल्ला 'तदबीर', सैय्यद याकूब हुसैन शौकत, चिलकाना के सर सैय्यद अली शिया खुर्शीद, नकुड़ के मुंशी मुहम्मद इब्राहीम दबीर, अम्बेहटा पीर के शाह मोहम्मद इरशाद हुसैन साबरी, शायर के रूप में फूलचंद फूल और अनवर साबरी भी देवबंद का बड़ा नाम रहे। देवबंद के अन्य शायरों में उमर दराज खां उमर, डॉ. माजिद 'देवबंदी', शम्स 'देवबंदी', जहाज 'देवबंदी', चौकस 'देवबंदी', डॉ. विनय जैन भी उल्लेखनीय नामों में शामिल हैं। अनवार अहमद कैसर, बुद्धप्रकाश गुप्ता 'जौहर', इस्लामपुर माजरा के पंडित रामशरण मिश्र, मोहम्मद हनीफ, सैय्यद इखलाक हुसैन, मोहम्मद इलियास, कैलाशपुर के संदल सिंह, सुलतानपुर के मोहम्मद इस्लाम 'अंजुम', देवबंद के गुलाम अनवर साबरी, गंगोह के नसीम अनवर 'आजाद', इरशाद 'सागर', प्रह्लाद 'आतिश', आसिम 'पीरज़ादा' भी सहारनपुर के उल्लेखनीय शायर हैं। सहारनपुर के उभरते शायर कासिफ 'रजा' आजकल मुशायरों में खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं।

सहारनपुर में पत्रकारिता की यात्रा

सहारनपुर में पत्रकारिता खूब फली–फूली। भाषा की दृष्टि से यहां की पत्रकारिता को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी पत्रकारिता। हिंदी और उर्दू में बहुत पत्रकारिता हुई और आज भी हो रही है। अंग्रेजी में यहां अपेक्षाकृत कम पत्रकारिता देखने को मिली। देश की पत्रकारिता की तरह स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात् की पत्रकारिता के विषय और उनका दृष्टिकोण पूर्ण रूप से अलग दृष्टिगत होता है।

fgnh i=dkfjrk

सन् 1871 में सहारनपुर से सांडर्स गजट के प्रकाशन की जानकारी मिलती है लेकिन सहारनपुर में हिंदी पत्रकारिता का वास्तविक शुभारम्भ 8 मई, सन् 1896 में देवबंद से सूरजभान वकील द्वारा सम्पादित *जैन गजट* से माना जाता है। सन् 1898 में हशमत हुसैन खैररब्बा के सम्पादन में *सनातन धर्म* पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। सन् 1907 ई. में तीन वर्ष के लिए *जैन गजट* का सम्पादन जुगल किशोर मुख़्तार ने किया। इसमें समाज सुधार की ओर ध्यान दिया गया। सन् 1910 में देवबंद से ज्योति प्रसाद जैन ने *जैन नारी हितकारी* मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसका उद्देश्य महिलाओं को जागरूक कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाना था।

सहारनपुर में 13 अगस्त, सन् 1933 ईस्वी में विश्वंभर प्रसाद शर्मा 'विशारद' ने *विकास* साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। 'विकास' के प्रथम अंक की रूपरेखा में लिखा गया कि 'विकास' की नीति सत्यम् शिवम् सुंदरम् रहेगी। *विकास* का उद्देश्य निःसंदेह देशप्रेम को बढ़ावा देते हुए समाज में सुधार के आंदोलन में प्राण फूंकना था। 15 अगस्त, सन् 1947 ई. में *विकास* के संपादन का कार्य कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी ने संभाला। वे *विकास* को विकास के उच्चतम शिखर तक ले गए। बीच में सन् 1935 ई. में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर जी ने 'विश्वास' पत्र का प्रकाशन भी किया। सन् 1940 ई. में सहारनपुर से भगवतप्रसाद शुक्ल 'सनातन' ने *कोकिल* कविता मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस पत्र में काव्य लेखन को बढ़ावा दिया गया। सन् 1940 में सहारनपुर से *ब्राह्मण समाचार* मासिक का प्रकाशन हुआ। इसके संपादक हरिप्रसाद शर्मा 'अविकसित' रहे। सन् 1944 में सभा द्वारा इसके संपादक वैद्य शरदकुमार मिश्र 'शरद' को बना दिया गया। सन् 1948

में सहारनपुर से कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर जी के संपादकत्व में *नया जीवन* मासिक पत्र प्रारम्भ हुआ। यह सन् 1980 ई. तक चलता रहा। सन् 1948 में सहारनपुर से आर्युवेद के प्रचार–प्रसारार्थ वैद्य शरदकुमार मिश्र शरद ने *वैद्यवाणी* मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। शरद जी के संपादकत्व में ही सन् 1954 ई. को पंसारी बाजार से *जागरण* नाम से साप्ताहिक पत्र शुरू किया गया। इसके अलावा सहारनपुर से हिंदी के सैंकड़ों पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। सभी का उल्लेख कर पाना एक आलेख में सम्भव नहीं है। वर्तमान में सहारनपुर में *अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, पंजाब केसरी, दैनिक जनवाणी* प्रमुख समाचार पत्र हैं लेकिन इनमें से किसी भी पत्र का प्रकाशन सहारनपुर से नहीं होता। सहारनपुर से प्रकाशित होने वाले प्रमुख दैनिक समाचार–पत्रों में *विश्व मानव, मानव जगत, बद्री विशाल, कलयुग दर्पण, हॉक, मनीष टाइम्स, सरोहा बुलेटिन* हैं। साप्ताहिक पत्र में *देश दुलारा, प्रेमवाणी, सहारनपुर बुलेटिन, देश दुलारा, शक्ति पुष्प, भारत रत्न केसरी, दहकता उत्तराखंड, जननी जन्मभूमिश्च,* अंत तक आदि हैं। हिंदी के महत्त्वपूर्ण पाक्षिक पत्र के रूप में *सामाजिक आक्रोश* को जाना जाता है। साहित्य की दृष्टि से जनपद में डॉ. वीरेंद्र 'आजम' के सम्पादकत्व में सन् 1981 से *शीतल वाणी* का प्रकाशन हो रहा है। इसके अलावा सहारनपुर से सैंकड़ों की संख्या में जिला सूचना कार्यालय में असूचिबद्ध और गैर मान्यता प्राप्त समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें से कई पत्र महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

mnw i=dkfjrk

जनपद का पहला उर्दू मासिक सन् 1892 में देवबंद से बाबू सूरजभान वकील ने *जैन हितोपदेशक* के नाम से प्रारम्भ किया। सन् 1908 ई. में देवबंद से ही बाबू ज्योतिप्रसाद जैन के सम्पादकत्व में *जैन प्रचारक* उर्दू मासिक निकाला गया। सन् 1912 में देवबंद के बाबू ज्योति प्रसाद ने *जैन प्रदीप* नाम से पाक्षिक उर्दू में ही प्रारम्भ किया। सन् 1930 में अंग्रेजी सरकार ने इस पत्र के तीखे प्रहारों को रोकने के लिए एक हजार रुपये की जमानत मांग ली। जमानत नहीं दिए जाने पर पत्र का प्रकाशन बंद हो गया। सन् 1916 ई. में अरबी मदरसा दारुल उलूम देवबंद से मोहम्मद हबीबुल रहमान के संपादकत्व में *अल कसीम* मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सन् 1926 में ललिता प्रसाद अख़्तर के संपादन और प्रकाशन में उर्दू पाक्षिक *परिवर्तन* का शुभारम्भ हुआ। *परिवर्तन* ने स्वतंत्रता आंदोलन को बल दिया। युवाओं में बलिदान का भाव जाग्रत कर आजादी का उद्घोष भी किया। सन् 1931 में मजरूल हक के संपादकत्व में *मुहाफिज* नाम से उर्दू साप्ताहिक प्रारम्भ किया गया। यह पत्र

सन् 1975 तक निकलता रहा। सन् 1949 में बक्शीराम उल्फत ने सहारनपुर से उर्दू साप्ताहिक *खबरदार* प्रारम्भ किया। सन् 1953 ई. में शफीक अहमद के संपादन और प्रकाशन में *आजाद* नाम से उर्दू साप्ताहिक शुरू हुआ। सन् 1959 में सहारनपुर से खानचंद मिगलानी ने *सहारनपुर टाइम्स* उर्दू साप्ताहिक शुरू किया। पत्र का उद्देश्य जन–जन के स्वर को मुखर करना था। सन् 1962 में सतपाल सूरी के संपादन और प्रकाशन में *फरासत* उर्दू साप्ताहिक प्रारम्भ किया गया। वर्तमान में सहारनपुर से उर्दू में दैनिक पत्र अवधनामा, इंकलाब, कलयुग दर्पण प्रकाशित होते हैं।

vxzth i=dkfjrk

सन् 1930 में *एडवरटाइजर* नाम से पत्र का प्रकाशन हुआ। सन् 1931 में मंगलकिरण जैन के सम्पादकत्व में *पीपुल्स जरनल* का प्रकाशन शुरू हुआ। इसके अलावा सहारनपुर से अंग्रेजी भाषा में पीपुल्स वॉयस, ट्राइस्ट, बिजनेस लॉ डाइजेस्ट, उद्योग दर्पण, मैमॉयर, *सोशलिजम, किट ऑफ यूनिटी, इंपटा, प्रेस न्यूज, सहारनपुर वॉयस रिपोर्टर, इंडियन ज्योग्राफिकल रिव्यू* आदि पत्रों का प्रकाशन हुआ।

संस्थाएं, जो कुछ देना चाहती हैं

Ekk{kk;ru bVju'kuy ;kxkJe

पद्मश्री भारत भूषण द्वारा संचालित बेरीबाग स्थित 'मोक्षायतन इंटरनेशनल योगाश्रम' आज देश–विदेश में योग की परम्परा को विस्तार दे रहा है। मोक्षायतन इंटरनेशनल योगाश्रम के माध्यम से योग के साथ–साथ संस्कार और संस्कृति से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण आयामों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। पद्मश्री भारत भूषण देश–विदेश में योग के संदेश को प्रचारित–प्रसारित करने का अभियान चलाए हुए हैं। उनकी सुपुत्री आचार्या प्रतिष्ठा भी योगाश्रम के अंतर्गत टीवी चैनलों एवं अन्य सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से योग और शास्त्रीय नृत्य के महत्त्व का प्रचार–प्रसार कर रही हैं।

tu pruk fe'ku

जन चेतना मिशन सहारनपुर में एक अनूठा कार्य करने वाली संस्था है। इस संस्था द्वारा लावारिस शवों के अंतिम संस्कार की सारी व्यवस्था की जाती है। इस संस्था के साथ कार्य करने वाले लोग परदे के पीछे रहकर महत्त्वपूर्ण सामाजिक दायित्व का पालन कर रहे हैं।

mM+ku

'उड़ान' सहारनपुर की एक ऐसी जुनूनी संस्था है जो मलिन बस्तियों के बच्चों को निःशुल्क रूप से न केवल शिक्षित करने का कार्य कर रही है, बल्कि उन्हें समाज में सम्मान से जीने की कला भी सिखा रही है। अजय सिंघल के नेतृत्व में यह संस्था लिंक रोड स्थित इंदिरा कैंप कॉलोनी में अपने विद्यालय को संचालित कर रही है। संस्था में पढ़ाई के साथ–साथ इन बच्चों के संग त्यौहार और जन्मदिन मनाए जाने जैसी अच्छी परम्पराएं शुरू की गई हैं। कुछ ही वर्षों के भीतर बच्चों में बदलाव देखा जा सकता है। इसी संस्था के सदस्यों द्वारा साथ ही साथ क्रेजीग्रीन संस्था का भी संचालन किया जा रहा है। यह संस्था पर्यावरण के क्षेत्र में पौधारोपण के माध्यम से महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है।

lei.k

सहारनपुर में 'समर्पण' ने पौधारोपण, पार्क विकास और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। समर्पित लोगों की इस टीम ने पर्यावरण को

लेकर गत वर्षों में उल्लेखनीय कार्य किया है। सहारनपुर की हकीकत नगर कॉलोनी को पूर्णतया हरा–भरा करने का काम समर्पण ने किया है। इसके अलावा नगर के अनेक पार्कों में पौधारोपण करने का कार्य नियमित रूप से किया जाता है। 'समर्पण' द्वारा कई प्याऊ भी लगाए गए हैं।

leUo;

सहारनपुर में 'समन्वय' संस्था का उल्लेखनीय योगदान है। वरिष्ठ साहित्यकार स्वर्गीय कृष्ण 'शलभ' के नेतृत्व में संस्था ने साहित्य चेतन के दीप–स्तंभ के रूप में नित नए आयाम गढ़े। समन्वय के द्वारा नियमित अंतराल पर राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक कार्यक्रम और काव्य–गोष्ठियों का आयोजन होता रहता है। समन्वय के प्रकाशन की योजना के अंतर्गत *क्या याद तुम्हें भी आता हूं, तुलसी सहन की, तल में हलचल जारी है, गीत के मणिबंध, इंद्रधनुष, आधी जिंदगी पूरा सच, सुधियों की छांव, श्रीगोगाचरित, देवबंद की स्वांग परम्परा, मेरे पास तेरा दर्द है, आदमी ही तो हूं, अम्बेडकर* आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

foHkkojh

'विभावरी' साहित्यिक संस्था द्वारा सहारनपुर में साहित्यिक गतिविधियों को आयोजित कर जनपद में साहित्यिक लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। संस्था सचिव कवि डॉ. विजेंद्रपाल शर्मा और अध्यक्ष श्री बालेश्वर जैन के नेतृत्व में विभावरी द्वारा नियमित काव्य गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। गंभीर विषयों पर स्तरीय वाद–विवाद प्रतियोगिता के नियमित संचालन के साथ–साथ अनेक सामाजिक सेवाओं का श्रेय भी विभावरी को जाता है। विभावरी के बैनर तले जिक्र प्यारे का, विभावरी काव्य–कलश और कागज का भी मन होता है आदि पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

ekuo efnj

जे.वी. जैन कॉलेज के निकट प्रद्युमन नगर स्थित 'मानव मंदिर' एक ऐसा संस्थान है जहां ऐसे लोगों को सहारा मिलता है जिनके सब सहारे छूट जाते हैं। 'मानव मंदिर' में परिजनों द्वारा घरों से निकाल दिए गए या फिर बेसहारा वृद्ध लोगों को आश्रय मिलता है। परिवारों से उपेक्षित इन वृद्ध लोगों को यहां न केवल स्वस्थ वातावरण मिलता है, बल्कि सुख–दुख बांटने वाले कई साथी भी मिलते हैं। जनपद के अनेक संवेदनशील लोग इन लोगों के बीच पहुंच कर इनके प्रति अपना सम्मान भी अभिव्यक्त करते हैं।

ladYi

सहारनपुर की रूपाली विहार कॉलोनी में स्थित 'संकल्प' मंदबुद्धि एवं बधिर विकलांग केंद्र इस मानसिक रूप से अशक्त, मूक–बधिर बच्चों के शिक्षण–प्रशिक्षण का कार्य करता है। केंद्र में बच्चों को ऐसा वातावरण दिया जाता है जिससे वे समाज के बीच जाकर स्वयं को सहज अनुभव कर सकें। यहां बच्चे न केवल अपने हाथों से सुंदर क्राफ्ट बनाते हैं बल्कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी भी करते हैं।

thoj{kk n;kfLèk dæ

जनपद में समस्त पशु–पक्षियों के हित को लेकर कार्य करने वाला यह महत्त्वपूर्ण केंद्र है। जैन समाज द्वारा संचालित इस केंद्र में घायल, बीमार पशु–पक्षियों का इलाज और सेवा की जाती है। इस केंद्र से जुड़े लोगों को कहीं भी कोई बीमार या घायल पशु–पक्षी मिल जाता है तो उसे लाकर ये लोग केंद्र पर उसके इलाज और भोजन की व्यवस्था भी करते हैं।

,d xqeuke laxBu

सहारनपुर के नुमाइश कैंप, माधो नगर क्षेत्र में एक ऐसा गुमनाम संगठन वर्षों से समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है जो कभी प्रकाश में नहीं आता और न ही आना चाहता। मैंने भी इस संगठन की अनेक बार चर्चा अपने पत्रकारिता के मित्रों से सुनी। इस संगठन से जुड़े लोग रक्तदान, जरूरतमंद लोगों का इलाज एवं आर्थिक सहयोग और अन्य सामाजिक कार्यों में नियमित रूप से भागीदारी करते हैं। ऐसे गुमनाम समाज सेवियों को निःसंदेह सहारनपुरवासी नमन करते हैं।

vkWy bafM;k oweu dkWÝl

सहारनपुर में 'ऑल इंडिया वूमन कांफ्रेंस संस्था' ने अनेक जरूरतमंद युवतियों को स्वावलम्बी बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस संस्था की शुरुआत 21 दिसंबर 1926 में लाहौर में जन्मी श्रीमती कुंतीपाल ने 13 अप्रैल, सन् 1985 में सहारनपुर से की। इसी संस्था द्वारा प्रशिक्षित 413 युवतियां अब मास्टर ट्रेनर के रूप में कार्य कर रही हैं। संस्था द्वारा अनेक निर्धन कन्याओं का विवाह भी कराया गया है। अब इस संस्था की अनेक शाखाएं देश के अन्य भागों में भी युवतियों को स्वावलंबन का पाठ पढ़ा रही हैं।

uokt QkmMs'ku

मशहूर शायर नवाज देवबंदी द्वारा संचालित यह संस्था लड़कियों की शिक्षा को लेकर महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। फाउंडेशन द्वारा लड़कियों के व्यक्तित्व विकास और स्वावलंबन को लेकर लंबे समय से कार्य किया जा रहा है।

fn'kk

सुलतानपुर–चिलकाना की यह संस्था जनपद में और जनपद से बाहर महिलाओं के हितों को लेकर कार्य कर रही है। दिशा के नेतृत्व में सुलतानपुर–चिलकाना में महिलाओं द्वारा शराबबंदी को लेकर आंदोलन भी किया, जिसकी गूंज देश भर में सुनी गई।

Lufgy

रामपुर मनिहारन की संस्था 'स्नेहिल' का संचालन प्रख्यात आर्टिस्ट डॉ. ममता सिंह कर रही हैं। यह संस्था संस्कृति और लोककला को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है।

idk'k ;gk Hkh gS

जनपद की कुछ और संस्थाएं, संगठन ऐसे हैं जो भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अपने महत्त्वशाली कार्य से समाज को सुदृढ़ करने का काम कर रहे हैं। संयम, आयाम, सम्यक, मकसद, संस्कार निधि, महेश दत्त रंक स्मृति न्यास, नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास, शून्य, ओशो हेल्थ टेंपल, रोशनी आई बैंक, साहित्य सुधा, सहयोग, इप्टा, अदाकार, नाट्य, रंगयात्रा, पहल रंगमंच, मानसी, सरगम, वैष्णवी नृत्यालय, स्मार्ट डांस अकेडमी, राइजिंग दीवा, क्रेजीग्रीन, सात्विक इंटरटेनमेंट, हजरत अमीर खुसरो कल्चर सोसायटी, परचम, अंजुमने दिलदार, स्वागत सामाजिक संस्था, नेहरू युवा केंद्र, सहारनपुर, सीनियर सिटिजन वेलफेयर सोसायटी, पहल, भारत विकास परिषद, रोटरी क्लब, लायंस क्लब, रामतीर्थ केंद्र, सिटी फांउडेशन, प्रकृति कुंज, ब्रह्मकुमारी आश्रम, संस्कार भारती आदि सामाजिक संस्थाएं जनपद के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

यहां बसते हैं काष्ठकला के हुनरमंद

सहारनपुर का काष्ठ शिल्प दुनिया के कला–बाजारों में अपना विशेष स्थान रखता है। यहां लकड़ी पर की गई सूक्ष्म कारीगरी का अवलोकन करना निःसंदेह बड़ा रोचक और सुखद अनुभव है। लकड़ी पर किए गए सूक्ष्म कार्य को देखकर यदि इन्हें बनाने वालों को लकड़ी का जादूगर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अभी तक प्राप्त संदर्भों के अनुसार लकड़ी पर नक्काशी का यह हुनर सदियों पहले मुलतान से कश्मीर पहुंचा। कश्मीर से करीब 400 वर्ष पहले इस हुनर में महारत हासिल कारीगर सहारनपुर पहुंचे। यहां हिंदू और जैन लोगों ने इसमें विशेष रुचि दिखाई, जो काष्ठकला के यहां विकसित होने का कारण भी बना। यहां लोगों ने अपने घरों के लिए दरवाजे, खिड़कियां और दूसरा काम इनसे करवाया और कारीगरों को हमेशा के लिए यहीं रख लिया। बाद में अंग्रेजों ने भी इस कला के महत्त्व को समझा और इसे प्रोत्साहन दिया। आज यह कार्य सहारनपुर के लाखों लोगों की आजीविका का साधन बना हुआ है।

सहारनपुर में खूब पल्लवित हुई इस काष्ठ कला की यदि कड़ियों की तलाश करें तो पता चलता है कि इस प्रकार का कार्य आज भी पाकिस्तान के लाहौर शहर में करने वाले कारीगर करते हैं। आज भी सहारनपुर और लाहौर दोनों स्थानों के कारीगर परम्परागत रूप से इस कार्य में संलग्न हैं और इनके काम करने के तरीके में भी कोई बदलाव नहीं आया है। लाहौर की नक्काशी सहारनपुर की नक्काशी से मेल खाती है। ऐसे में संदेह नहीं है कि इन दोनों स्थान पर कार्य करने वाले कारीगर कभी एक ही स्थान से निकले हों। पाकिस्तान के मुलतान, रावलपिंडी और पेशावर शहर में सहारनपुर की भांति ही पुराने मकानों के दरवाजे और खिड़कियों पर सूक्ष्म नक्काशी की गई है। सहारनपुर में यह कला खूब विकसित हुई। पुराने सहारनपुर में आज भी इस कला के पुराने हुनर के नमूने देखने को मिल जाते हैं। दरवाजे, खिड़कियों पर किया गया काम बहुत अनूठा और मेहनत वाला है। इस कार्य को देखकर सहारनपुर की काष्ठ–कला में संलग्न कारीगरों के परिश्रम को समझा जा सकता है।

लकड़ी पर की गई नक्काशी की सजीवता बरबस ध्यान आकर्षित करती है। यह इन जाने–अनजाने शिल्पियों की कलात्मक भावनाओं की परिचायक है।

सौंदर्यमयी कल्पना और सूक्ष्म मनोभावों को लकड़ी पर कुछ इस तरह से ढाला गया है कि देखने वाला मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। लकड़ी पर पीतल और हाथी दांत की भराई सम्मोहन सा कर देती है। सहारनपुर की मंडी शिवपुरी, पुरानी मंडी, अली सराय, शाहजी, झोटे वाला में लकड़ी की कारिगरी का खूब काम होता है। सहारनपुर से निर्मित सामान विश्व के अधिकांश देशों में भेजा जाता है। यहां लकड़ी पर की जाने वाली बारीक नक्काशी का कोई तोड़ नहीं है। कुर्सी, मेज, सोफे, पलंग, झूले, स्टूल, शृंगारदान, फ्रूट बास्केट, चूड़ी बॉक्स, लकड़ी का पार्टिशन, फोल्डिंग ताजमहल, बच्चों के खिलौने, महिलाओं के आभूषण तक लकड़ी पर कार्विंग कर बनाए गए हैं। लकड़ी बाजार के भीतर पहुंचने वाली लकड़ी चाहे छोटी हो या बड़ी सभी को काम में लाया जाता है। यहां बनने वाले मंदिर खूब प्रसिद्ध हैं। लोग अपने नए घरों में प्रवेश करने के समय लकड़ी के मंदिरों को प्राथमिकता देते हैं, वे मंदिर यहां बड़ी संख्या में बनाए जाते हैं। यहां लकड़ी से बनाए जाने वाले सामानों पर हाथी दांत, पीतल और अन्य धातुओं का भी काम किया जाता है। पीतल की टकाई में घोड़ा, हाथी, हिरण इत्यादि पशु–आकारों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। इन्हें लोग अपने घरों में सजाते हैं। घरों में सजाने के लिए यहां लकड़ी से बने सामानों की हजारों वैरायटी हैं। सहारनपुर के जो लोग दूसरे शहरों में रह रहे हैं वे अपने प्रियजनों के लिए यहां से लकड़ी से बने सामान उपहार में देकर गौरवान्वित अनुभव करते हैं। गुणवत्ता और

बेहतरीन कारीगरी से युक्त लकड़ी के इस सामान की मांग विश्व बाजार में लगातार बनी रहती है।

हांलाकि चीन के सस्ते लकड़ी के सामानों से मिलती कड़ी प्रतिस्पर्धा और सरकार द्वारा कोई विशेष प्रोत्साहन न दिए जाने के कारण यह काम धीरे–धीरे सिमटने लगा है। अनुसंधान और नए डिजाइनों के प्रति उदासीनता भी इस काम के लिए पीछे धकेलने वाली सिद्ध हुई है। लकड़ी के सामानों की दुकानें बंद होकर दूसरे कार्यों की दुकानें खुलने लगी हैं। यहां के कारीगर दिल्ली, जोधपुर, मुंबई, हैदराबाद, मुरादाबाद, कश्मीर और दूसरे बड़े शहरों की ओर पलायन करने लगे हैं। काष्ठ कला को जीवित रखने के लिए और विश्व बाजार में भविष्य की दृष्टि से प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए यहां विशेष योजना की आवश्यकता है ताकि यहां के कारीगर और उनकी कारीगरी की कीमत मिल सके।

आज भी जिंदा हैं छबीली के किस्से

बहू छबीली का व्यक्तित्व जितना अनूठा है, उतना ही रोचक भी। किस्सों और कहानियों के सहारे बहू छबीली का जो जीवन संदर्भ निकलकर आता है वह एक अबला के सबला होने का अनुपम उदाहरण है। भले ही सहारनपुर के इतिहास में बहू छबीली का आज कहीं भी लिखित इतिहास नहीं मिलता हो, लेकिन रानी बाजार की आबोहवा में अभी भी बहू छबीली के स्वाभिमान के किस्से सुने जा सकते हैं।

ब्रिटिश पीरियड में रानी बाजार में रहने वाले बड़े जमींदार की पत्नी थीं छबीली। स्थानीय लोग उन्हें रानी छबीली भी कहा करते थे। किस्सा है कि छबीली की बेटी का रिश्ता पानीपत के अति समृद्ध परिवार में तय हुआ। इस बीच छबीली के जमींदार पति का निधन हो जाता है। फिर शुरू होती है छबीली के वास्तविक व्यक्तित्व की कहानी। पानीपत के सेठ द्वारा भेजा गया नाई छबीली के पास पहुंचा और कहने लगा – 'सेठ जी तो नहीं रहे, अब बारात का स्वागत कैसे संभव होगा ? पानीपत वालों के यहां जानकार और रिश्तेदारों की कमी नहीं है, भला आप यह व्यवस्था कैसे कर पाएंगी?' तब

बहू छबीली ने बड़े गर्व के साथ उसे एक पोटली पोश्त दाना जो की चौलाई जैसा होता है दिया और कहा कि 'इतने बाराती लेकर भी आओगे तो स्वागत में कोई कमी नहीं होगी, पूरा सहारनपुर उनके स्वागत में खड़ा मिलेगा।' शादी से पहले पूरे रानी बाजार में घोषणा करा दी गई कि अगर कोई बाराती बाजार से कुछ लेना चाहे तो उससे कोई पैसा न लिया जाए। पैसे की अदायगी बाद में कर दी जाएगी। निःसंदेह यह छबीली का राजसी अंदाज ही था। रानी बाजार और पास के कुओं में मीठे की बोरियां खुलवा दी गई ताकि बारातियों को हर स्थान पर मीठा पानी पीने को मिले। आज भी रानी बाजार में एक कुएं को छबीली का कुआं कहकर पुकारा जाता है। पानीपत से बारात सहारनपुर में बहू छबीली के द्वारे पहुंच जाती है। समधी जी मुट्ठी भर कर चांदी के सिक्के फेंकते हुए गर्व से गर्दन ऊंची कर लेते हैं। बहू छबीली भी अपने होने वाले दामाद का स्वागत कुछ इस अंदाज में करती है कि सभी बाराती दंग रह जाते हैं। कहते हैं उन्होंने अपनी छत पर सोने के सिक्कों से भरी बोरी रखवा ली थी और दोनों हाथों से भर–भर कर अपने होने वाले दामाद पर न्यौछावर कर दिया।

आलम यह था कि बेहद शान दिखाने वाले बाराती भी सड़क पर पड़े सिक्कों को उठाने में लग गए थे। बिना कुछ कहे ही स्वाभिमानी छबीली ने समधी जी के सिर पर चढ़े पैसे के नशे को उतार दिया था। इतना ही नहीं उन्होंने सहारनपुर से पानीपत तक मार्ग में जगह–जगह पानी के छोटे कुएं खुदवा दिए थे ताकि बारात को रास्ते में कहीं भी पानी की समस्या का सामना न करना पड़े। स्वाभिमानी बहू छबीली का चरित्र और व्यक्तित्व आज भी सहारनपुरवासियों के स्वाभिमान से उनके किस्सों को कहने–सुनने के लिए प्रेरित करता है।

सहारनपुर में खानपान

dkjoh [kkuiku

दुनिया भर की तरह सहारनपुर में भी परम्परागत खानपान का स्थान फास्ट–फूड और वैश्विक ढंग से विस्तारित दूसरे व्यंजनों ने ले लिया। यद्यपि गांवों में परम्परागत खान–पान का प्रचलन आज भी है। चूरमा, चीलरे या चीले, लपसी, दाल–रोटी, मांड, लस्सी, नमक की रोटी प्याज के साथ – ये इस क्षेत्र के कुछ परम्परागत खानपान हैं जो लम्बे समय तक चलते रहे। मंढे की चटपटी गर्मागरम दाल और चावल भी अब मंढे से गायब हो चुके हैं। टाट पर पत्तल में दाल–चावल के साथ शक्कर और मिट्टी के कसोरे में पानी का आनंद ही कुछ और हुआ करता था।

cgV d vke dh feBkl

बेहट की आम पट्टी अपने रसीले और स्वादिष्ट आमों के लिए जानी जाती है। आज बेहट के 40 से अधिक गांवों में आम का उत्पादन किया जा रहा है। बेहट के आमों की यह मिठास अब हिंदुस्तानी शहरों से निकलकर दूसरे देशों तक जाने लगा है। यहां आम की फसल के महत्त्व को देखते हुए सरकार ने सन् 1990 ई. में इस क्षेत्र को आम पट्टी घोषित कर दिया था। बेहट में आम की 100 से अधिक किस्में पैदा होती हैं। इनमें सबसे प्रमुख दशहरी, गुलाब जामुन, चोसा और लंगड़ा है। इनकी मांग लगातार बनी रहती है। यहां का आम खाड़ी देशों सहित जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों को भेजा जाता है।

or eku ie [k& जनपद में कई ऐसे खानपान के स्थान हैं जो बहुत प्रसिद्ध हैं इनमें बड़तला यादगार की चाट, बिहारीगढ़ की पकौड़ी, चंदेना और गंगोह के पेड़े, सहारनपुर का पकवान, हलवाई हट्टे की फीकी सुहाली, देवबंद का घेवर, दीवानी कचहरी के सामने महेंद्र और सरसावा में क्वालिटी के समोसे, कुतुबशेर थाने के निकट महक चाऊमीन, गंगोह का पेड़ा अपने स्वाद के कारण जाने जाते हैं।

;g Hkh jgk ifl)&

सहारनपुर के बालम खीरे की मांग कभी देश की प्रमुख मंडियों में हुआ करती थी। यहां का बासमती चावल अपनी अलग ही पहचान रखता है। देवबंद के मिठास से भरे बेर, बेहट के आम भी खूब प्रसिद्ध हैं। सहारनपुर में कभी विशेष

प्रकार का पौंडा गन्ना उगाया जाता था, इसकी खूब प्रसिद्धि थी। यह न केवल चूसने में सरल बल्कि मिठास से भी भरा होता था। अब बहुत कम लोग इस गन्ने को शौकिया तौर पर उगाते हैं।

कुछ लिखा है, कुछ बाकी है.....

d|rc vkye vkj lr gfjnkl

मुगल बादशाह बाबर के शासन काल के दौरान ऐतिहासिक कस्बे गंगोह में मुस्लिम संत हजरत कुतुबे आलम अब्दुल कद्दूस और हिंदू संत हरिदास हुए। दोनों ही संतों की गंगोह और गंगोह से बाहर बहुत मान्यता है। गंगोह के पूर्वी छोर पर स्थित संत हरिदास के मंदिर पर प्रतिवर्ष चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में मेले का आयोजन होता है। हजरत कुतबे आलम का जन्म 860 हिजरी अर्थात् सन् 1439 ई. में हुआ था। इनका इंतकाल 84 वर्ष की आयु में सन् 1523 ई. में हुआ। मुगल दरबार में हजरत कुतबे आलम को बहुत सम्मान प्राप्त था और दरबार में उनके द्वारा भेजे सुझावों और विचारों को महत्त्व दिया जाता था। आज भी वर्ष भर में एक बार यहां बड़े उर्स का आयोजन होता है। उर्स में हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड सहित देश के दूसरे राज्यों से भी श्रद्धालु कुतुबे आलम की दरगाह पर माथा टेकने पहुंचते हैं।

fl)pØ foèkku

नकुड़ के पंडित संतलाल जैन द्वारा रचित पुस्तक 'श्री सिद्धचक्र विधान' न केवल देश में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में जैन समाज के बीच विख्यात है। सन् 1834 ई. में शीलचंद्र जैन के घर जन्मे कवि संतलाल जी ने सिद्ध परमेष्ठी के गुणों के व्याख्यान अतिशय प्रभावोत्पादक शैली में सिद्धचक्र विधान के अंतर्गत किया। इस विधान का जैन समाज में उतना ही महत्त्व है जितना हिंदू समाज में श्रीमद्भागवत गीता का। सम्पूर्ण विश्व में विशेषतया कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मास के अष्टांगिक पर्व में तथा सामान्य तौर पर पूरे वर्ष भर यह विधान आयोजित होता है। इस विधान में 47 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है। इसमें अशुद्ध आत्मा को शुद्ध आत्मा बनाने का उपाय सरल एवं भक्तिपरक सुमधुर छंदों में निबद्ध किया गया है।

[kkudkg vkfy;k jghfe;k

हजरत शाह अब्दुल रहीम ने रायपुर में खानकाह आलिया रहीमिया की नींव सन् 1882 में रखी थी। यह स्थान देशप्रेम और हिंदू–मुस्लिम एकता का संदेश देने वाला स्थान रहा है। इस संस्थान द्वारा भारत की आजादी में भी भागीदारी की

थी। अंग्रेजों ने जब हिंदू–मुस्लिम के बीच में गंगा–जमुनी तहजीब को निशाना बनाना चाहा तो खानकाह आलिया रहीमिया से जुड़े लोगों द्वारा अंग्रेजों के षड्यंत्र का खुलकर विरोध किया गया। यहां उलेमा–ए–कराम ने देवबंद दारुल उलूम से शुरू हुई तहरीक–ए–रेशमी रूमाल को बखूबी बढ़ावा दिया।

njxkg e[kne

सहारनपुर के कस्बे सरसावा में हजरत मखदूम की दरगाह है। इनके विषय में कहते हैं कि सूफी संत हजरत मखदूम जी हजरत मोईनुद्दीन चिश्ती के भांजे हैं और एक ही गुरु उस्मान हारूनी के शिष्य हैं। हजरत मखदूम मुहम्मद अली हजरत मोईनुद्दीन चिश्ती के साथ भारत आए थे। ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भारत का भ्रमण करते–करते अजमेर शरीफ जाकर बस गए जबकि हजरत मखदूम साहब दिल्ली को होते हुए सरसावा आ गए। सरसावा में हजरत के सालाना उर्स पर बड़े मेले का आयोजन होता है।

f'koèkke

सहारनपुर में दिल्ली के प्रसिद्ध मंदिर अक्षरधाम की तरह शिवधाम मंदिर बनने जा रहा है। बाबा लालदास बाड़े के निकट 8 एकड़ भूमि और 100 करोड़ की लागत से बनने वाले इस मंदिर की नींव का कार्य लगभग पूरा हो चुका है। मंदिर का निर्माण सहारनपुर मूल के एनआरआई अजय गुप्ता द्वारा कराया जा रहा है। मंदिर में शिव पंचायतन, नवग्रह के अलावा हनुमान जी, भगवान शिव, भगवान विष्णु, मां गौरी, गणेश जी की मूर्तियां स्थापित की जाएंगी। मंदिर की ऊंचाई 149 फीट होगी। यह मंदिर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपनी तरह का अनूठा मंदिर होगा। इसके निर्माण से जनपद में पर्यटन को बढ़ावा मिलने की संभावना है। मंदिर निर्माण की समय सीमा तीन वर्ष तय की गई है।

LojkT; efnj lxgky;

सहारनपुर के सरसावा कस्बे में स्वतंत्रता सेनानी परिवार में जन्मे स्वर्गीय वैद्य श्यामलाल कौशिक ने शहीदों का मंदिर बनाने का बीड़ा दो दशक पहले उठाया था। उनकी मृत्यु के बाद इस कार्य में शिथिलता आ गई। उनके पुत्र स्वराज्य मंदिर संस्थान के प्रबंधक शशि रमण कौशिक फिर से इस प्रयास में जुट गए हैं। योजना के अंतर्गत जिले के स्वतत्रंता सेनानियों के वीरत्व को संगमरमर पर अंकित करा कर 'स्वराज्य मंदिर संग्रहालय' की स्थापना की जाएगी। अभी तक 80 पत्थरों पर स्वतंत्रता सेनानियों की गाथाओं को

संगमरमर पर उत्कीर्ण किया जा चुका है। कुल 250 शिलालेख तैयार किए जाने की योजना है। यह कार्य निःसंदेह देश पर अपना सब कुछ लुटा देने वाले शहीदों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगा।

e'kk noh efnj

लखौरी ईंटों से निर्मित मंशा देवी मंदिर मंशापुर गांव में शंकलापुरी मंदिर से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्राचीन मंदिर के निकट एक जलाशय है। तालाब के दोनों किनारों पर स्तम्भ लखौरी ईंटों के बने हैं। कभी पुरानी धर्मशाला भी थी जो बाद में जर्जर होने पर तोड़ दी गई। मंदिर में मंशा देवी का प्राचीन स्वरूप स्थापित है। गोपाष्टमी के दिन यहां मेले का आयोजन होता है। मंदिर की छत पर कई भित्तिचित्र बने हैं।

ukx nork efnj

बड़गांव के निकट धूमगढ़ गांव में नाग देवता का मंदिर है। स्थानीय लोग मंदिर को 400 साल पुराना बताते हैं। नाग देवता के मंदिर के साथ कई कहानियां जुड़ी हुई हैं। मंदिर परिसर में ही एक प्राचीन पवित्र थान भी है। प्रत्येक रविवार को यहां श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है।

fetkiqj ds cku

लकड़ी की खाट उत्तर भारत की सांस्कृतिक पहचान है। दुर्भाग्य से लकड़ी की खाट का स्थान अब लोहे की खाट ने ले लिया है और भाभड़ से बुने बानों का स्थान प्लास्टिक के बानों ने ले लिया है। सहारनपुर जिले का मिर्जापुर गांव कभी बान निर्माण में अव्वल हुआ करता था, यहां के बुने बान दाऊदपुरा की बड़ी मंडी में बेचे जाते थे। निकटवर्ती गांवों में भी बान निर्माण का कार्य

बड़े स्तर पर हुआ करता था। लेकिन अब यह कार्य धीरे–धीरे सिमटने लगा है। शिवालिक के निचले भागों में मिलने वाली विशेष प्रकार की भाभड़ घास भी अब कम होने लगी है। इस कार्य में लगे परिवारों को सरकार की ओर से कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जा रहा। भाभड़ घास की कटाई से लेकर बान निर्माण तक क्रमशः कुल बीस प्रक्रिया शामिल हैं। ऐसे में बान निर्माण के कार्य में लगे परिवारों को रोजी–रोटी के लिए पैसा निकालना भी बहुत कठिन हो चला है।

cgV dh ?kfV;k

बेहट में घंटियां बनाए जाने का काम एक शताब्दी से भी अधिक पुराना है। यहां राट आयरन से बनने वाली घंटियों की मांग न केवल देश बल्कि विदेशों में भी बराबर बनी रहती है। यहां की घंटियां 'काऊ बेल्स' के नाम से प्रसिद्ध हैं। पहले गाय, बैल, बकरी इत्यादि को बांधी जाने वाली घंटियां ही यहां बनती थी लेकिन अब यहां घरों में सजावट के लिए अनेक प्रकार की घंटियां

तैयार की जा रही हैं। बेहट के भूलनी, पठानपुरा, गंदेवड़, ढाबा, बरौली, कलसिया आदि गांवों के अनेक परिवार इस प्रकार की घंटियां तैयार कर रहे हैं। यहां से व्यवसायी अब देश–विदेश के ट्रेड फेयर में भी शामिल होने लगे हैं। घंटी निर्माण का यह कार्य हैंडीक्राफ्ट के अंतर्गत इस क्षेत्र में दस हजार से अधिक लोगों को रोजगार दे रहा है।

nocn dk ihih m|kx

बच्चों के विशेष प्रकार के लकड़ी से बने बाजे को पीपी या पीपनी कहा जाता है। जनपद ही नहीं बल्कि जनपद से बाहर भी कभी बच्चों द्वारा पसंद की जाने वाला बाजा कभी देवबंद में ही तैयार होता था। आधुनिक खिलौनों के बीच पारम्परिक बाजा बच्चों के हाथों से छूटने लगा तो यह उद्योग भी अब बंदी की कगार पर पहुंच चुका है। यह बाजा नहरों के किनारे और जंगलों में मिलने वाली नरकुल से बनाया जाता है। देवबंद में किसी समय इस बाजे को बनाने के लिए 50 कारखाने काम किया करते थे लेकिन आज इनकी संख्या केवल 3–4 ही रह गई है। आधुनिक खिलौनों की आवाज के बीच पीपी की आवाज़ मंद पड़ती जा रही है।

vkbVhlh&सहारनपुर यूनिट में सन् 1925–26 में मैसर्स इंडियन टौबैको कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड की स्थापना की गई। जे.पी. हिल फैक्ट्री के पहले प्रबंधक थे। यहां सिगरेट बनाई जाती हैं। सहारनपुर से आईटीसी की यह यूनिट सरकार को भारी टैक्स अदा करती है।

ihij fey&सेठ बलदेव दास बाजोरिया द्वारा सहारनपुर में स्टार पेपर मिल की स्थापना सन् 1938 ई. में की गई। यह देश की प्रमुख पेपर मिलों में से एक है।

ihVhlh&अंबाला रोड स्थित पोस्टल ट्रेनिंग सेंटर में डाककर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह प्रशिक्षण संस्थान सन् 1951 में अस्तित्व में आया। यहां कई सर्किलों को प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करता है। पीटीसी में एक टिकट संग्रहालय भी स्थापित किया गया है। इस संग्रहालय में महत्त्वपूर्ण टिकटों के अलावा डाक व्यवस्था से जुड़ी पुरानी और नवीन वस्तुएं भी संगृहीत की गई हैं।

dkxt ik|kfxdh lLFkku&भारत सरकार और शाही स्वीडिश सरकार के सन् 1963 ई. में किए गए एक समझौते के तहत कागज प्रौद्योगिकी संस्थान अस्तित्व में आया। वर्तमान में यह आईआईटी रुड़की के अंतर्गत आता है। यहां कागज एवं लुगदी उद्योग के अध्ययन के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। इस संस्थान द्वारा कई प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। यहां प्रशिक्षणार्थियों के लिए बांस, लकड़ी, घास और कृषि से निकली सामग्री के अध्ययन के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। गन्ने की खोई को लेकर भी यहां अध्ययन किया गया है।

dsnh; yqxnh ,o dkxt vuqlaèkku laLFkku&केंद्रीय लुगदी एवं कागज अनुसंधान संस्थान में कागज और लुगदी से संबंधित अनुसंधान और वैज्ञानिक कार्यों को विस्तारित किया जाता है। इस प्रकार के आविष्कारों को बढ़ावा देना तथा दूसरे संस्थानों को लुगदी और कागज बनाने से संबंधित अनुसंधान कार्य में सहायता प्रदान करना भी इसका एक कार्य है।

;gk ;g Hkh gS

सरसावा में हवाई अड्डा है, यहां एक हेलिकॉप्टर यूनिट है। कारगिल युद्ध में इस हवाई अड्डे के चार वीर शहीदों ने देश पर अपने प्राण न्यौछावर किए थे। इसके अलावा जनपद में खारा विद्युत परियोजना, वन गुर्जरों का जीवन, कैलाशपुर में नईम खां के आवास, दुमझेड़ा गांव में कभी नावें तैयार की जाती थीं। नागल में कुएं से पानी खींचने के लिए रहट तैयार किए जाते थे।

संदर्भ ग्रंथ

–*उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,* सहारनपुर– नेविल

–*सहारनपुर संदर्भ*– डॉ. के.के. शर्मा

–*हमारा गौरव राजकीय उद्यान*– डॉ. एस.के. उपाध्याय

–*जिला सहारनपुर के भित्तिचित्र*– डॉ. दिनेशचंद्र अग्रवाल

–*चाणक्य*– सत्यकेतु विद्यालंकार

–*गुप्त साम्राज्य का इतिहास*– वासुदेव उपाध्याय

–*संक्षिप्त महाभारत*– गीता प्रेस, गोरखपुर

–*एंशिएंट ज्योग्राफी ऑफ इंडिया*– कनिंघम

–*ट्रेवेल्स ऑफ इंडिया*– ह्वेनसांग

–*हिस्ट्री ऑफ इंडिया*– इलियट एवं डाउसन

–*आइने अकबरी*– अबुल फज़ल

–*सहारनपुर दर्शन*– राजीव उपाध्याय

–*अपनी धरोहर*– राजीव उपाध्याय

–*ललिता प्रसाद अख्तर विशेषांक*– वैद्य श्यामलाल कौशिक

–औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र, सहारनपुर

–*ज्ञान गंगा* : श्री बाबा लाल दयाल जी के जीवन व कृतित्व पर आधारित

–*क्रांति पथ का राही*– रूपराम वर्मा

–*शहीद–ए–आजम*– बच्चन सिंह

–*चंद्रशेखर आजाद*– डॉ. मीरा अग्रवाल

–*शहीद–ए–वतन राजगुरु*– प्रवीण भल्ला

–*सांझी कला*– डॉ. कहानी भानावत

–*देवबंद की स्वांग परम्परा*– डॉ. सुरेंद्र शर्मा

–*आज भी खरे हैं तालाब – अनुपम मिश्र, गांधी शांति प्रतिष्ठान, दिल्ली*

–*कुरुक्षेत्र भू–भाग के भित्तिचित्र*– डॉ. एस.के. कुशवाहा

–*सहारनपुर जनपद की बोलियां*– डॉ. सुंदर श्याम मुकुट

–*सहारनपुर के साहित्यकार*– प्रो. ओमप्रकाश दीक्षित

–*सहारनपुर के कवि*– वैद्य शरद कुमार मिश्र शरद

–*लोकगीत*– डॉ. सुरेंद्र शर्मा पंकज

–*गुरु फकीरा जीवन ज्योति*– डॉ. महीपाल सिंह वर्मा

–*गुर्जर स्वाभिमान*– डॉ. पद्म सिंह वर्मा दलित

–*ए हिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर इन इंडिया*– एम.एस. रंधावा

–*पश्चिमी उत्तर प्रदेश के स्मारक : एक ऐतिहासिक अध्ययन*–
डॉ. मनोज गौतम

–*मार्कण्डेय पुराण*

– सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, सहारनपुर

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

एक परिचय

भारत की बहुरूपी, समृद्ध, जीवंत सांस्कृतिक परम्पराओं एवं औपचारिक शिक्षा पद्धतियों के बीच अन्तर दूर करने हेतु मई, 1979 में सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) की स्थापना की गई। इसका मुख्य ध्येय तथा उद्देश्य समस्त सांस्कृतिक स्रोतों को साथ रखते हुए शिक्षा पद्धति में औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के सभी स्तरों को अंतर्भूत करना है। उदाहरण के तौर पर पारंपरिक कलाओं: चाक पर मिट्टी का कार्य, बांधनी कागज़ के खिलौने समेत हस्तकलाओं का प्रशिक्षण, सांचे बनाना, पुतली कला की विभिन्न विधाएँ और नृत्य एवं संगीत के बहुरंगी रूप को न केवल इतिहास तथा सामाजिक विज्ञान वरन् गणित, रसायन एवं भौतिकी विज्ञान जैसे विषयों के संग शैक्षिक माध्यम के रूप में उपयोग में लाना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कई नवीन योजनाएं विकसित की गईं। कार्यक्रम के स्तर पर शिक्षा प्रशासकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों हेतु नियमित कार्यशालाओं; शिक्षकों हेतु अनुस्थापन एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम तथा विद्यार्थियों हेतु कार्यशालाओं एवं शिविरों का आयोजन किया जाता है। सांस्कृतिक प्रतिभा तथा विद्वत्ता की पहचान के लिये भारत सरकार की योजनाओं हेतु सीसीआरटी एक मुख्य संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सीसीआरटी, सांस्कृतिक सामग्री का संग्रहण व प्रलेखन करता एवं श्रव्य-दृश्य किट तैयार करता है, जो विभिन्न विन्यासों में क्षेत्रीय संस्कृति अथवा विशिष्ट कला रूप के अध्ययन को प्रोत्साहित करता है और जिन लोगों ने इन कला रूपों की रचना की है, उनके विषय में जानकारी देता है।

एक संस्था के रूप में सीसीआरटी ने एनसीईआरटी और राज्यों के स्तर पर एससीईआरटी के साथ एक विस्तृत नेटवर्क (कार्यतंत्र) स्थापित किया है। आज इसके तीन क्षेत्रीय केन्द्र उदयपुर, हैदराबाद तथा गुवाहाटी में हैं। सीसीआरटी ने भारत के शिक्षक एवं विद्यार्थी समुदाय में राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक पहचान के आदर्शों को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समृद्ध तथा विविधतापूर्ण प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की इस धरा पर यह आवश्यक है कि भारत में आज का युवा अपनी तथा दूसरों की समृद्ध संस्कृति के प्रति एक गूढ़ समझ तथा सराहना की भावना को लेकर पल्लवित हो। सीसीआरटी के जन्म का श्रेय श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय तथा डा. कपिला वात्स्यायन (जो क्रमश: इसकी प्रथम अध्यक्ष व उपाध्यक्ष थीं) की दूर दृष्टि व प्रयासों तथा आठवें दशक में भारत सरकार के शिक्षा, समाज कल्याण एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग को जाता है।

सीसीआरटी, भारत सरकार की राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना कार्यान्वित करता है, जिसका लक्ष्य विविध कलात्मक क्षेत्रों में विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना तथा सुविधायें उपलब्ध कराना है। 10 से 14 वर्ष के आयु समूह वाले शिक्षारत बच्चे या पारंपरिक कलारूपों

से जुड़े परिवारों के बच्चे इस राष्ट्रीय सांस्कृतिक छात्रवृत्ति योजना में भाग लेने के पात्र हैं।

विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति प्रदान करने की योजना संस्कृति मंत्रालय द्वारा सीसीआरटी को स्थानांतरित की गई है, जिसके तहत भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, नाट्य, दृश्य कला, लोक कला आदि क्षेत्रों में 18 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के अधिकतम 400 युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियाँ (निधि की उपलब्धता के अनुसार) प्रदान की जाती हैं।

सीसीआरटी संस्कृति मंत्रालय की कुछ अन्य नीतियों का भी कार्यान्वयन करता है, जैसे सांस्कृतिक पक्षों पर 400 शोध अध्येताओं को अध्येतावृत्ति प्रदान करना। इनमें 200 कनिष्ठ तथा 200 वरिष्ठ शोध अध्येताओं का चयन किया जाता है। शोध में मुख्य बल संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में 'गहन अध्ययन/अनुसंधान' पर दिया जाता है, जिसमें सांस्कृतिक अध्ययनों के नये उभरते क्षेत्र भी शामिल हैं।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र ने 1985 से सीसीआरटी शिक्षक पुरस्कार की स्थापना की है, जो प्रति वर्ष उन शिक्षकों को दिया जाता है, जिन्होंने शिक्षा व संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया हो। पुरस्कार में प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्रम् तथा नकद धनराशि ₹ 25000/–प्रदान की जाती है।

सीसीआरटी ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक नई पहल के अन्तर्गत 'राष्ट्रीय संस्कृति एवं धरोहर प्रबन्धन संस्थान' की संकल्पना के अनुसार कला प्रबंधन योजना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करने आरंभ किए हैं।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने देश के सांस्कृतिक स्थानिक भूगोल के सर्वेक्षण की महत्त्वाकांक्षी परियोजना – 'भारत का सांस्कृतिक मानचित्रण' – की पहल की है। इस परियोजना का मुख्य केन्द्र विविध क्षेत्रों के कलाकारों के वर्तमान आँकड़ों की तुलना करना व उन्हें उपयोग में लाना है। ये सूची व आँकड़े कहीं से भी लिए जा सकते हैं, चाहे कोई गैर सरकारी सरकारी संस्था हो या संस्कृति के प्रचार–प्रसार में लगी हुई भारत सरकार के अधीन/स्वायत्त संस्थाएँ–जैसे–संगीत नाटक अकादमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, ललित कला अकादमी, साहित्य अकादमी, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, ऐंथ्रोपॉलॉजिकल सर्वे ऑव् इण्डिया या अन्य संस्थाएँ जैसे–इंटेक आदि। इनके अलावा यह अनुभव किया गया कि संस्कृति मंत्रालय को चाहिए कि वह दुर्लभ कलाओं/परंपराओं का सर्वेक्षण भी आरंभ करे ताकि इन पर ध्यान जाए तथा इनको फिर से सहेजा जा सके। इस परियोजना में न केवल आँकड़े व सूची एकत्र होंगे अपितु मंत्रालय उन योजनाओं को भी धन उपलब्ध कराएगा जिन्हें वित्तीय व सामाजिक उन्नति अपेक्षित होगी। सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र सांस्कृतिक कलाकारों के आँकड़े उपलब्ध कराने में सहायता कर रहा है। अप्रैल, 2018 में यह परियोजना इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) को स्थानांतरित कर दी गई है।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा वाराणसी में 'संस्कृति' परियोजना का नोडल एजेंसी के रूप में सहसंचालन एवं श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय की स्मृति में 'विरासत–कमला देवी' सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन सीसीआरटी के महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। इसके लक्ष्य एवं उद्देश्यों के बारे में और अधिक जानकारी हेतु इसकी वेबसाइट www.ccrtindia.gov.in देखी जा सकती है।

सीसीआरटी

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
सीआईआई (कन्फेडेरेशन ऑव् इण्डियन इंडस्ट्री)
के सामने, गूगल कार्यालय के करीब
मधापुर से कोण्डापुर मुख्य मार्ग
मधापुर, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश
पिन कोड: 500084
दूरभाष: 040-23117050, 23111918
ई-मेल : rchyd.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
3बी, अम्बावगढ़, स्वरूप सागर झील के पास
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313001
दूरभाष: 0294-3291577, 2430771, 2430764
ई-मेल : ccrtrcud@rediffmail.com

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: 0361-2330152
ई-मेल : rc_ccrt@rediffmail.com

नगरों पर आधारित पुस्तक-शृंखला की अन्य पुस्तकें

पुस्तक	*लेखक*
कालपी	अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'
चंबा	सुदर्शन वशिष्ठ
चंपावत का सांस्कृतिक वैभव	इंद्र लाल वर्मा
सीकर	ओम प्रकाश चल्का
देवास	जीवन सिंह ठाकुर
सूर्यदेहा का सूरत और सूरत के हीरे	विजय सेवक
पिथौरागढ़	मोहन चंद्र जोशी
आरानामा	विमल कुमार

राजीव उपाध्याय 'यायावर'

जन्म : 01 जनवरी, 1983

पिता : आचार्य अतर सिंह शास्त्री

माता : कमला शास्त्री

शिक्षा : स्नातकोत्तर हिंदी साहित्य, अपभ्रंश भाषा में अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर से प्रमाणित कोर्स।

पत्रकारिता, लेखन एवं संपादन :

1. पत्रकारिता में 12 वर्ष का अनुभव। *अमर उजाला, हिंदुस्तान, जनवाणी* आदि समाचार पत्रों में कार्य। साप्ताहिक समाचार पत्र *भास्कर दर्शन* में उप संपादक।
2. सहारनपुर के सांस्कृतिक पर्यटन पर आधारित पुस्तक *सहारनपुर दर्शन* का प्रकाशन।
3. सहारनपुर जनपद के ऐतिहासिक जलाशयों पर आधारित पुस्तक *अपनी धरोहर* का प्रकाशन।
4. स्वतंत्रता सेनानी देवी प्रसाद आर्य के जीवन पर आधारित *कीर्ति-घट* पुस्तक का संपादन।
5. ऐतिहासिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विषयों पर विभिन्न समाचार पत्रों में अनेक आलेख एवं पत्रों का प्रकाशन।
6. *भास्कर दर्शन* साप्ताहिक समाचार पत्र में मातृभाषा हिंदी, देववाणी संस्कृत, नारी, मनोरंजन, महात्मा गांधी, पर्यटन आदि विषयों पर पूर्ण पृष्ठ लेखन।

फोटोग्राफी : फोटोग्राफी का डेढ़ दशक से अधिक लंबा अनुभव। **विशेष रुचि**- सूर्योदय-सूर्यास्त आधारित फोटोग्राफी। ग्रामीण परिवेश विषयक फोटोग्राफी, प्रकृति के सूक्ष्म चित्रण का प्रयास, सहारनपुर जनपद के मंदिरों और हवेलियों पर बने भित्तिचित्रों की फोटोग्राफी, 20,000 भित्तिचित्रों का संकलन।

काव्य सृजन : आदरणीय बाबूजी के सान्निध्य में बचपन से ही काव्य-लेखन एवं समस्यापूर्ति में अभिरुचि। *साहित्य अमृत, शुक्रवार* आदि पत्रिकाओं में प्रकाशन। छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताओं का लेखन। *समन्वय* और *विभावरी* साहित्यिक संस्थाओं की काव्य-गोष्ठियों में काव्य-पाठ।

सम्मान : मोक्षायतन इंटरनेशनल योगाश्रम की ओर से सर्वोत्तम 2011 सम्मान श्रृंखला में 'संजय दृष्टि सम्मान'।

संप्रति : समन्वयक, सहारनपुर विरासत अनुसंधान केंद्र, शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह

पता : ग्राम एवं पत्रालय- सौराना, जिला- सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, पिन-247232

संपर्क : 9358445959, 7017741500

ईमेल : rajeevupadhyaypress1983@gmail.com

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली-110075, भारत

दूरभाष: 91-11-25309300, फैक्स: 91-11-25088637

ई-मेल : dir.ccrt@nic.in, **वेबसाइट :** www.ccrtindia.gov.in